 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

सावन-भादों, संवत् नानकशाही ५४०

अगस्त **2008** वर्ष १ अंक १२

संपादक
सिमरजीत सिंह
एम. ए, एम. एस. सी.

सहायक संपादक
सुरिंदर सिंह निमाणा
एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बीएड.

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६



फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर { वितरण विभाग **303** / संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय सूची

गुरबाणी विचार

भादउ भरमि भुली

भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥
जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥
बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥
प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥
मछर डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥
नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ॥१०॥ *(पन्ना ११०८)*

पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी बारहमाहा तुखारी की इस पावन पउड़ी में भादों मास के विशेष प्राकृतिक वर्णन के माध्यम से प्रभु-नाम से बिछुड़ी जीव-स्त्री की दुखदायक स्थिति का वर्णन करते हुए उसको जीवन-उद्देश्य की पूर्ति करने वाला गुरमति मार्ग दर्शाते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि भादों मास में जो जीव-स्त्री पूर्ण यौवन की आयु-स्थिति में प्रभु-नाम को भूल कर भ्रम में अर्थात माया की अज्ञानता में फंस गई वह पश्चाताप का शिकार होती है। भादों में जब वर्षा हुई और जगह-जगह पानी भर गया, इस दृश्य का वह आनंद अनुभव कर सकती थी परंतु वह यह आनंद प्राप्त न कर सकी। कहने से भाव प्रकृति का प्रत्येक रूप अपने आप में सुंदर है तथा जीव-स्त्री को सृष्टि-सृजक के सदैव कायम रहने वाले नाम से जोड़ सकता है।

गुरु जी इस मास का प्राकृतिक वर्णन करते हुए कथन करते हैं कि काली रात्रि में भी वर्षा होती है परंतु प्रभु से बिछुड़ी जीव-स्त्री इस वर्षा से मिलने वाला सुख क्यों लेगी? तब मेंढक गुड़ैं-गुड़ै की ध्वनि निकालते हैं, मोर कूकते हैं, बबीहा 'प्रिउ प्रिउ' उच्चारण करता है। यह सब प्रभु से बिछुड़ी जीव-स्त्री से आनंद दिये बिना ही घटित हो जाता है। उसको तो इस भादों मास में सांपों के मच्छर के डंक मारने का ही अनुभव होगा। यह बात वास्तविकता है कि सांप, मच्छर आदि के डंक इस बहार में अधिक तीक्ष्ण हो जाते हैं। जल-स्रोत्र भर गए हैं। बिछुड़ी जीव-स्त्री प्रभु के बिना इस दृश्य का सुख क्यों लेगी अर्थात नहीं ले सकती।

गुरु जी अंत में निष्कर्ष रूप में फरमान करते हैं कि यदि मैं जीव-स्त्री अपने सच्चे रुहानी पथ-प्रदर्शक से पूछकर उसकी अगुआई में चलने लगूं तो जहां प्रभु मिल सकता हो मैं वहां ही जाऊंगी।

लोगु जानै इहु गीतु है . . .

एक जोति एका मिली किंबा होइ महोइ ॥
जितु घटि नामु न ऊपजै फूटि मरै जनु सोइ ॥१॥
सावल सुंदर रामईआ ॥ मेरा मनु लागा तोहि ॥१॥रहाउ॥
साधु मिलै सिधि पाईऐ कि एहु जोगु कि भोगु ॥
दुहु मिलि कारजु ऊपजै राम नाम संजोगु ॥२॥
लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥
जिउ कासी उसदेसु होइ मानस मरती बार ॥३॥
कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥
कहु कबीर संसा नही अंति परम गति पाइ ॥४॥१॥४॥५५॥ *(पन्ना ३३५)*

भक्त कबीर जी गउड़ी राग में अंकित इस पावन शब्द में सतिगुरु की महिमा का बखान करते हैं। एक ज्योति भाव मनुष्य की सुरति जब परमात्मा की ज्योति से मिलकर एकरूप होती है तो क्या वह पुन: अलग होती है अर्थात अलग नहीं होगी। दूसरे शब्दों में, उसकी हउमै पूर्णत: मिट जाती है। जिस हृदय में प्रभु-नाम नहीं उत्पन्न होता वह हृदय फूट कर समाप्त हो जाता है अथवा प्रभु-नाम के निवास के बिना मानव-हृदय की कोई उपयोगिता या लाभ ही नहीं है। हे मेरे सुंदर स्वामी प्रभु! गुरु-कृपा से मेरा मन तुझसे लग गया है।

भक्त जी फरमान करते हैं कि साधू भावपूर्ण सतिगुरु से मिलन या उसके साथ भेंटवार्ता से सिद्धि अथवा प्रभु-मिलन की युक्ति पाई जाती है। जब यह युक्ति मिल जाए तो क्या योग और क्या भोग, भाव भोग या गृहस्थ में रहते हुए प्रभु-नाम के चिंतन से योग को प्राप्त कर लिया जाता है। यह युक्ति सतिगुरु के मिलन से ही मिलती है। यह मंजिल तभी मिलती है जब सिख की सुरति और सतिगुरु का शब्द मिल जाएं।

भक्त जी कथन करते हैं कि लोग सतिगुरु के शब्द को साधारण गीत की भांति सरलता से गाकर प्रभु के गुणों की विचार कर सकते हैं। जैसे मान्यता है कि काशी में मृत्यु के समय उपदेश मिल जाने से मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर लेता है। शब्द-गुरु मिल जाने से तो सिख जीते-जी ही बंधन-मुक्त हो जाता है।

अंत में भक्त जी निष्कर्ष देते हैं कि कोई भी मनुष्य-मात्र तो सतिगुरु के शब्द को गाता या सुनता है और प्रभु-नाम में मन लगा लेता है, इसमें कोई रंचक मात्र भी शंस्य नहीं कि वह सर्वोपरि मुक्ति अथवा कल्याण को प्राप्त न करे अर्थात वह मूल जीवन उद्देश्य की पूर्ति कर ही लेता है। 



चलो चलें, अंधी श्रद्धा से विवेकी श्रद्धा की ओर

धर्म में श्रद्धा स्वाभाविक एवं अत्यंत आवश्यक है। श्रद्धा-भावना का पैदा होना किसी मनुष्य द्वारा धर्म का दामन पकड़ने की स्थिति उत्पन्न करना है। यह स्थिति बहुत महत्वपूर्ण होती है। संसार-सागर से पार होने के लिए जिज्ञासु को जो आध्यात्मिक साधना करनी होती है उसका सर्वप्रथम सबब अथवा साधन श्रद्धा-भावना ही बनती है। श्रद्धा सच्चे विश्वास तथा सिदक का रूप है। यह उक्ति शतप्रतिशत सच्चाई है कि श्रद्धा, विश्वास और सिदक से बेड़े पार होते हैं। श्रद्धा-भावना का धारक मनुष्य अध्यात्म की ऊंची वस्तु की प्राप्ति की ओर यत्नशील हो सकता है। श्रद्धाहीन् इस संसार में आकर मनुष्य-जन्म को निपट सांसारिक झंझटों में ही उलझकर गंवा देता है और इस दुर्लभ मानस-जन्म का मूल लाभ लेने से वंचित रहता है। अध्यात्म से अनभिज्ञ रहना मनुष्य जन्म पाकर भी जानवरों या पशुओं के स्तर पर विचरण करने के समान है।

श्रद्धा-भावना की इस ऊपर वर्णन की गई महिमा को पूर्ण मान्यता देते हुए हमको श्रद्धा की मुख्य रूप से अस्तित्व रख रही दो किस्मों को दृष्टिगोचर एवं विचाराधीन करने की आवश्यकता है। विचारवानों ने श्रद्धा की दो किस्में बताई हैं-- १. विवेकी श्रद्धा २. अंधी श्रद्धा।

विवेकी श्रद्धा पूर्णतः अपनाने योग्य है। विवेक अपने आप में अध्यात्म के मार्ग में एक बहुत ही आवश्यक तत्व है। मनुष्य-मात्र को किसी वस्तु या धारणा के बारे में विवेक ही यह स्पष्ट करता है कि वह उसके लिए उपयोगी है या अनुपयोगी, उसको इसको अपनाना चाहिए या इसका परित्याग करना चाहिए। श्रद्धा में विवेक का संचार श्रद्धा को उचित विचार तथा सुचेतना उत्पन्न कर देगा और श्रद्धा विवेकी श्रद्धा के रूप में विकसित हो सकेगी। विवेकी श्रद्धा ही है जो मनुष्य-मात्र को अच्छे-बुरे की सोझी बख्श कर उसे आध्यात्मिक एवं नैतिक जीवन-यापन करने के सक्षम करती है।

अंधी श्रद्धा का धारक व्यक्ति अपना और समाज का कल्याण करने में कदापि सफल नहीं हो सकता। वह परमात्मा द्वारा बख्शीं, बाहरी संसार को देखने-दिखाने वाली आंखों का ही उपयोग करने से इंकारी होता है जबकि इससे अधिक महत्वपूर्ण अंदर की यानि मन-आत्मा की आंखों को खोलने से तो वह कोसों दूर ही रहता है। वह वास्तव में परमात्मा द्वारा बख्शी विवेक या विचार-शक्ति से पूर्णतः अनजान रहता है। वह अपनी समस्त टेक दूसरों पर रखता है। किसी ने कह दिया कि "फलां संत आये हैं, वे तो साक्षात्कार प्रभु हैं या फलां संत रब का दर्शन करा देते हैं", तो अंधी श्रद्धा का धारक उसकी बात को पूर्णतः सत्य मानकर उसके साथ चल पड़ेगा और उसके बताये 'संत बाबा' को अपना सर्वस्व समर्पित कर देगा। दूसरे शब्दों में कहें कि वह अपना हर प्रकार का आर्थिक, नैतिक, सामाजिक शोषण कराने के लिए तैयार हो जाएगा।

आज दंभी तथा पाखंडी संतों का बहुत प्रचलन हो चुका है। उन्होंने अंधी श्रद्धा वाले लोगों को ढूंढने तथा उनको अपने पास बुलाने और ढोने हेतु एक अच्छा-खासा नेटवर्क बिछाया हुआ है। उन्हें भली-भांति ज्ञात है कि लोगों की अंधी श्रद्धा का उन्होंने अपने निज लाभ हेतु किस

प्रकार दुरुपयोग करना है।

२००८ का यह वर्ष समस्त मानवता के लिए और विशेषकर सिख पंथ के लिए अति महत्वपूर्ण है। यह वर्ष जागत-ज्योति, दस गुरु साहिबान के आत्मिक स्वरूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की गुरुता- गद्दी की तीसरी शताब्दी का वर्ष है। दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने आज से तीन सौ वर्ष पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दमदमी बीड़ नामक पावन स्वरूप के समक्ष नमन किया। नांदेड़ में श्री अबिचल नगर श्री हजूर साहिब की धरती पर गुरु जी ने पावन स्वरूप की परिक्रमा की और इसके समक्ष घुटने टेक कर माथा टेका तथा चली आ रही गुरगद्दी या गुरुता बख्शने की परंपरा के अनुसार रीति निभाते हुए एकत्रित सिख पंथ को आदेश-निर्देश बख्शा कि आज से श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिख पंथ के गुरु हुए, आज से सिख ने केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष ही नमन करना है। यहां तक कहा कि जो प्रभु को मिलने की अभिलाषा रखता है वह उसे **'शब्द'** (बाणी) में खोज ले।

वैसे शब्द-गुरु की धारणा दसों सिख गुरु साहिबान के जीवन काल में भी विद्यमान थी। वे अपने-अपने समय में सिख संगतों को शब्द-गुरु की सोझी तथा ज्ञान बख्शिश करते रहे, लेकिन दशमेश पिता के समय जब सिख पंथ केवल मात्र शब्द-गुरु का ओट-आसरा पूर्णरूपेण लेने के लिए सक्षम हो गया तो सिख पंथ को इसके ओट-आसरे में रहने के स्पष्ट आदेश-निर्देश प्राप्त हो गए। सिख पंथ उस समय कितना जागृत हो चुका था इसके एक से अधिक परिमाण हमें गुरु-इतिहास, सिख-इतिहास में प्राप्त होते हैं। उदाहरण के तौर पर सतिगुरों ने राजस्थान में दादू की कब्र को तीर से नमन करके खालसा जी की सुचेतनता की परीक्षा ली तो खालसा जी इसमें आन-शान से सफल सिद्ध हुए। यहां तक कि गुरु जी को कब्र को तीर से नमन करने के बदले **'तनखाह'** भी लगाई। फिर गुरु जी ने न चाहते हुए भी पांच सिंघों के यानी सिख पंथ के, चमकौर की गढ़ी छोड़कर पंथ का नेतृत्व जारी रखने के हुक्म को सिर-माथे पर माना।

आज सिख पंथ को श्री गुरु ग्रंथ साहिब को शब्द-गुरु के रूप में अपनाए हुए ३०० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। यह एक काफी व्यापक समय-अवधि कही जा सकती है। इस अवधि में गुरु नानक नाम-लेवा सभी सिखों के अपने समस्त जीवन-यापन में शब्द-गुरु को पूर्णरूपेण अपनाने की आशा की जानी स्वाभाविक थी परंतु खेद की बात यह है कि शब्द-गुरु को सही अर्थों में गुरु मानने में सिख कहलाने वाले लोग एक बहुत बड़ी संख्या में कोसों दूर खड़े दिखाई दे रहे हैं। इसी संदर्भ में नकली गुरुओं की भरमार है, अनगिणत ही पाखंडी एवं तथाकथित **'देहधारी गुरु'** बाहरी अथवा दिखलावे के रूप में शब्द-गुरु का प्रकाश करके भी वास्तव में अपनी व्यक्तिगत पूजा-उपासना तथा मान्यता कराने में सफलता की चोटियों को छू रहे हैं। यह भी अत्यधिक देखने-सुनने-पढ़ने में आ रहा है कि कुछ स्वार्थी लोग कबरों-मजारों पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूपों का प्रकाश करके वहां भोले-भाले सिखों को दोनों हाथों से लूट रहे हैं। श्री अकाल तख्त साहिब ऐसे प्रचलन को रोकने हेतु पूर्णत: प्रयासरत है लेकिन इसमें इच्छित सफलता तभी होगी जब सिख पंथ अपनी गंवा चुकी गुरमति सुचेतनता को पुन: प्राप्त एवं विकसित करने हेतु भरसक प्रयास करने लगेगा और स्वयं भी गुरु-सिद्धांत के प्रकाश में ऐसे गुरमति-विरोधी प्रचलनों को रोकने के लिए इच्छित क्षमता को विकसित कर सकेगा।

आज श्री गुरु ग्रंथ साहिब की गुरुता-गद्दी की तीसरी शताब्दी मनाने से पूर्व समस्त सिख

पंथ द्वारा यह विश्लेषण भी करना उचित होगा कि गत तीन सौ वर्ष में हमने क्या कमाया और क्या गंवाया है। सही-सही विश्लेषण अवश्य ही हमें अपनी वास्तविक प्राप्तियों और अप्राप्तियों का आभास तथा अनुभव करा सकता है और यह विश्लेषण करते समय विवेकी श्रद्धा का दामन हमें सदैव पकड़कर रखना पड़ेगा। इस तथ्य को अब संसार मानने लगा है कि गुरु नानक-नाम-लेवा सिख परोपकारी बहुत हैं और इन्होंने कुर्बानियां भी बहुत की हैं। देश, कौम और समस्त मानवता के कल्याण को सम्मुख रखते हुए गुरु के सिखों ने जो बहु-प्रकारी कुर्बानियां की हैं उनमें बहुत बड़ी संख्या में शहीदियां भी शामिल हैं। शहीदी, कुर्बानी का सर्वोपरि शिखर माना जा सकता है। गुरमति विचारधारा और सिख जीवन-युक्ति को सही रूप में समझ सकने वाले गुरु के नाम-लेवा सिखों ने समस्त सिख पंथ की साख बहुत बढ़ाई है परंतु जिन सिख कहलाने वालों ने गुरमति विचारधारा और सिख जीवन-युक्ति को सही तरह नहीं समझा वे बाहरी रूप में सिख होकर भी देहधारी नकली गुरुओं, संतों-बाबाओं के पीछे भाग रहे हैं, उन्हें व्यर्थ का सम्मान दे रहे हैं तथा उनसे अपना और अपने घर-परिवार का बहु-प्रकारी शोषण करवा रहे हैं।

बहुत से सिख कहलवाने वाले आज ऐसे भी हैं जो धन एकत्र करने की दौड़ में भाग रहे हैं और सभी सिखी उसूल उन्होंने दरकिनार कर दिये हैं। धनवान बनकर गुरु-आदेशों के अनुसार सिख पंथ और पीड़ित मनुष्यता के कल्याण के लिए उनके पास कोई ठोस प्रोग्राम नहीं। फिर पतितपन और मादक पदार्थों का सेवन भी सिख समुदाय में अपने पैर पसार रहा है, जो बेहद चिंताजनक पहलू है।

ऊपर वर्णित अनचाही स्थिति का एक मात्र समाधान केवल और केवल जागत-ज्योति श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पूर्णरूपेण शब्द-गुरु के रूप में मानना, इस पावन ग्रंथ में विद्यमान पावन गुरु-आदेशों-निर्देशों को कमाना अथवा उनको जीवन-यापन का अटूट अंग बनाना है। ऐसा तभी संभव हो सकेगा जब हम अपनी श्रद्धा में 'ज्ञान' रूपी तत्व का मिश्रण करें, जिसके द्वारा हम अच्छे-बुरे, झूठे-सच्चे, पूर्ण-अपूर्ण और स्थिर-अस्थिर 'गुरु' की पहचान कर 'असली गुरु' तक पहुंचने को प्रयासरत हो सकें। तब हम 'ज्ञानवान' अथवा 'विकेकी श्रद्धा' द्वारा 'गुरु' रूप में मात्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आगे ही नत्मस्तक होंगे और कपटी एवं पाखंडी लुटेरों, जो खुद 'गुरु' होने का दम भर रहे हैं, का बोरिया-बिस्तर गोल कर उनको एक कोने में समेट कर रख देंगे। हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि ऐसे नकली गुरुओं का भरम-पोषण हमारे शोषण का ही परिणाम है। ऐसे 'सज्जनों' का अस्तित्व में आना हमारे ज्ञान के चक्षुओं के बंद होने पर निर्भर है। जैसे नैनों से अंधे मनुष्य के लिए चारों ओर अंधकार ही होता है, वैसे ही बिना ज्ञान या विवेक वाला श्रद्धावान पुरुष भी खुले नेत्रों वाला अंधकार में भटका राही ही होता है। बिना 'ज्ञान' के संसार की किसी वस्तु के लाभ-हानि या असली-नकली होने के बारे में पता करना असंभव होता है। यही हालत 'गुरु' तलाशने वाले हर जिज्ञासु की होती है।

सतिगुरु कृपा करें, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की तीसरी गुरुता-गद्दी शताब्दी का यह सुअवसर हमें समस्त गुरु नानक नाम-लेवा सिखों को इस सदीवी गुरु का सही अर्थों में दामन पकड़ने, सही अर्थों में सत्यवादी सिख होने की दिशा में प्रयत्नशील बना सके। ऐसा तो अंधी श्रद्धा से बचकर और सच्ची विवेकी तथा ज्ञानमयी श्रद्धा-भावना को विकसित करने से ही संभव हो सकता है।



लासानी शब्द-गुरु : श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

*-डॉ. जगजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी सिख धर्म के पूज्य ग्रंथ हैं, शब्द रूप गुरु हैं, कुल मानवता के पथ-प्रदर्शक हैं, रहनुमा हैं। इस पूज्य ग्रंथ की सत्य बाणी जिन मानव-मूल्यों की अभिव्यंजना करती है वे सार्वकालिक हैं, सार्वभौमिक हैं और युगों-युगों तक समूची मानवता का मार्ग प्रशस्त करने वाले हैं। यह रुहानी बाणी कुल मानवता को सांझे भ्रातृभाव, प्रेम, सहानुभूति, करुणा, दया, मैत्री, सहृदयता, सेवा, परोपकार, त्याग और बलिदान जैसे महत् दिव्य गुणों की प्रेरणा प्रदान करती है। आज जहां घोर संक्रामक और संकटकालीन युगीन परिस्थितियों से हम गुजर रहे हैं, ऐसे में तो इस पुनीत बाणी द्वारा प्रतिपादित दिव्य मानव-मूल्यों की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। आज के इस एटामिक और न्यूक्लीअर शक्ति के बढ़ते युग में स्वार्थ-बद्ध, राजनैतिक व सामाजिक वातावरण और आर्थिक असन्तुलन, मनुष्य को असुरक्षा, भय, आत्म-विश्वास का अभाव, उग्रता, उत्तेजना, द्वन्द्व, विरोध, आक्रोश और आक्रामक वृत्ति की बढ़ोत्तरी की ओर ले जा रहा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन शिक्षा ही हमें मानसिक सुख-शान्ति, सुरक्षा, संतोष, कल्याण और परम आनंद की ओर ले जा सकती है। यही शिक्षा हमें तनावमुक्त करके स्वस्थ चिंतन का दिशा-निर्देश कर सकती है। इसीलिए क्या भारतीय और क्या विदेशी संपूर्ण विश्व के विचारक, ज्ञानी विद्वान, मनीषी इसे संसार भर के धर्म-ग्रंथों में एक विशेष सर्वोच्च आदरणीय स्थान का अधिकारी मानते हैं।

प्रसिद्ध भारतीय विद्वान साधू टी. एल. वासवानी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी का अध्ययन करने के पश्चात अति प्रसन्नता में गदगद होकर निर्णय देते हैं कि यह ग्रंथ विश्व भर का धर्म-ग्रंथ है क्योंकि इसमें विश्व-मानव की आत्मा से उमड़ी बाणी का भंडार है **"Out of world soul it rolled out."** हकीकत है कि इस अगम्य बाणी द्वारा जिन रस एवं माधुर्य-युक्त प्रेमानुभूतियों की अभिव्यंजना हुई है वह संतप्त मानव को अमृतमय ठंडी-मीठी शीतल रस-तरंगों और फुहारों से भिगोती चलती है, उसे अन्तरमन तक शीतल कर दिव्य आनंद लोक का राही बना देती है। इसलिए इस युग के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार इसे युग की सर्वश्रेष्ठ काव्य-रचना मानते हैं। अमेरिका की येल युनीवर्सिटी में लम्बे समय तक विश्व के धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के पद पर बहाल रहे प्रसिद्ध विद्वान डॉ. जे. सी. आरचर ने सन् १९४६ में अपने खोज-पत्रों के संग्रह ग्रंथ में लिखा है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का धर्म विश्व-धर्म है, व्यवहारिक धर्म एवं क्रियात्मक धर्म है। आज विश्व को इसकी प्रेम और शान्ति पर आधारित शिक्षा की अति आवश्यकता है।

"The religion of Guru Granth is universal and practical religion. The world needs its message of peace and love."

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१ मो. ९२१९८७५४३९*

इस महान ग्रंथ की संपादना सिख गुरु-परम्परा की पांचवीं पातशाही श्री गुरु अरजन देव जी ने की। श्री गुरु अरजन देव जी जहां उच्च कोटि के साधक, तपस्वी, प्रभु-भक्ति में लीन आध्यात्मिक शक्ति के पुंज थे, वहीं वे एक शानदार संगठनकर्त्ता, उत्साही प्रचारक और अद्वितीय प्रतिभा-सम्पन्न बाणीकार भी थे। उनमें बेजोड़ संपादन कुशलता थी। बाणी रचना की रसमयता तो उनमें जन्मजात थी। उनके अप्रतिम गुणों का गायन करते हुए इसीलिए तो भट्ट साहिबान के कहा है :

तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ ॥ (पन्ना १४०७)

गुरदेव जी की कर्मठ शख्सियत आजीवन मानव-कल्याण हेतु परोपकार के कार्यों में ही लगी रही। पिता श्री गुरु रामदास जी द्वारा केवल १८ वर्ष की आयु में गुरगद्दी पर प्रतिष्ठित किए जाते ही इन्होंने अपनी सम्पूर्ण चेतना निर्माण कार्यों में ही लगा दी। अमृतसर नगर में ५२ प्रकार के व्यापारियों को बसा कर नगर को समृद्ध किया, अमृत-सरोवर को पक्का करवाया और तब विश्व को वह नायाब तोहफा दिया जो मानवता के लिए सदैव ही आकर्षण का केन्द्र बना रहेगा। अमृत-सरोवर के ठीक बीचो-बीच चारों ओर से खुला, चार बड़े द्वारों वाला, चारों दिशाओं की मानवता के प्रवेश हेतु खुला, सुंदर 'हरिमंदर' प्रतिष्ठित किया। तरनतारन, करतारपुर, छिहरटा साहिब, बाउली साहिब लाहौर आदि भी गुरु जी के ही निर्माण-कार्य हैं। और सबसे बड़ा उपकार-कार्य जिसके लिए मानवता चिरकाल तक ऋणी रहेगी वह है श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संपादन।

श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने से पूर्व चार गुरु साहिबान द्वारा रची गई पुनीत बाणी, १२वीं सदी से लेकर १७वीं सदी के बीच में हुए प्रमुख १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान और चार प्रसिद्ध श्रद्धालु सिखों— भाई मरदाना जी, बाबा सुंदर जी, भाई सत्ता जी और भाई बलवंड राय जी की बाणी के साथ अपने द्वारा रचे गए २२१८ शब्द एकत्रित कर संपादित किए। बाणी-लेखन के लिए गुरु साहिब ने अमृतसर के रामसर सरोवर का शान्त एवं एकांत स्थान चुना। भाई गुरदास जी को लेखन-कार्य की सेवा सौंपी। स्वयं गुरु साहिब बाणी उच्चारण करते जाते और भाई साहिब जी लिखते। सभी गुरु साहिबान की बाणी, अपनी बाणी और अन्य बाणी को रागानुसार एक सुंदर तरतीब देकर, वैज्ञानिक तकनीक व क्रम देकर, सुंदर ढंग से संकलित किया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का आंतरिक क्रम और तरतीब गुरु साहिब को एक अद्भुत संपादन कला सम्पन्न, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न सिद्ध करती है। पूर्व गुरु साहिबान की बाणी श्री गुरु अरजन देव जी को विरासत में प्राप्त हुई थी। श्री गुरु नानक देव जी अपनी जगत-फेरी के दौरान उच्चरित बाणी को पोथी में लिखते जाते थे। समय-समय पर संपर्क में आए भक्तों-फकीरों की बाणी भी गुरु साहिब ने ही एकत्रित की थी और अपनी पोथी में लिख कर रखी थी। श्री गुरु अंगद देव जी को गुरतागद्दी प्रदान करते हुए उन्होंने एक पोथी बख्शी थी, जिस पोथी का जिक्र इतिहास में आता है। दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने रचे ६३ श्लोक उसी पोथी में लिखे और तृतीय ज्योति श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी के साथ बाणी की पोथी भी प्रदान की। श्री गुरु अमरदास जी ने स्वरचित बाणी पोथी में लिख कर श्री गुरु रामदास जी को दी और श्री गुरु रामदास जी ने अपने प्रेम-पूरित शब्द पोथी में लिखकर यह

अगंमी खजाना श्री गुरु अरजन देव जी को सौंपा। इस प्रकार बाणी मूल रूप में सुरक्षित व प्रमाणिक रही। इसमें किसी तरह की कच्ची बाणी का मिलगोभा नहीं हुआ। संपादन किया ही गुरु साहिब ने इसी उद्देश्य से था कि गुरु नानक पातशाह जी ने जिस निर्मल पंथ की नींव रखी थी उसके संपूर्ण सिद्धांत बाणी में निहित थे। बाकी गुरु साहिबान ने भी उन्हीं सिद्धांतों के अनुसार बाणी रचना की। गुरु साहिबान की बाणी का अत्यन्त विशद प्रचार-प्रसार देख और साधारण जन-मानस की इस पुनीत बाणी के प्रति बढ़ती श्रद्धा को देख, कुछ स्वार्थी, लोभी और ईर्ष्यालु 'नानक' नाम से बाणी रच कर लोगों को गुमराह कर रहे थे। उनके द्वारा रची कच्ची बाणी पुनीत बाणी में न मिल जाये, इस दृष्टिकोण से गुरु साहिब ने सच्ची बाणी को एक ही पोथी में एकत्रित कर संपादन करने का निर्णय लिया। वैसे भी सिख धर्म-चिन्तन का प्रचार-प्रसार बढ़ता ही जा रहा था। निश्चित था कि आगे चल कर यह स्थापित संगठन का रूप लेगा। आने वाली पीढ़ियों तक इस धर्म-चिन्तन की मूल युक्ति प्रमाणिक रूप में बिना किसी बाहरी मिलावट के पहुंचे, इसके लिए श्री गुरु अरजन देव जी ने बाणी को संपादित करना आवश्यक समझा।

यह संपादन-कार्य वर्षों के श्रम, कठिन साधना और लगन से सम्पन्न हुआ। बाणी के इस विशाल बोहिथ का लेखन-कार्य सन् १६०४ ई में सम्पन्न हुआ। इसका समापन काल इसकी मूल प्रति पर लिखा है-- "सूची पत्र पोथी का ततकरा रागां दा संवत् १६६१ मिति भादों वदी एकम १ पोथी लिखि पहुंचे।" यह पोथी ९७४ पन्नों की तैयार हुई। शुरू में इसे *'पोथी परमेसर'* कहा गया। भाई बन्नो जी लाहौर से इसकी जिल्द बंधवा कर लाए। इसे *'बीड़ साहिब'* भी कहा जाने लगा। दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी को इसमें स्थान देकर भाई मनी सिंघ जी से इसका पुनर्लेखन करवाया। इसे *'ग्रंथ साहिब'* कहा जाने लगा और जब दशमेश जी ने परम ज्योति में विलीन होने से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को नांदेड़ (महाराष्ट्र) में सन् १७०८ ई में गुरता-गद्दी प्रदान की और आदेश किया—*"सभ सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ"* तो यह सिखों के गुरु शोभायमान हुए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पुनर्लेखन श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो (बठिंडा) में करवाया था, इसलिए इसे 'दमदमी बीड़' कहते हैं। वर्तमान में सभी बीड़ों के उतारे इसी दमदमी बीड़ से होते हैं।

जब भाई बन्नो जी लाहौर से पावन पोथी की जिल्द बंधवा कर ले आए तो रामसर सरोवर वाले स्थान से बाबा बुड्ढा जी ने इन्हें अपने शीश पर विराजमान किया। श्रद्धालु संगतें एकत्रित हुईं। विशाल नगर-कीर्तन के रूप में सारे शहर में से निकालते हुए श्री हरिमंदर साहिब में इसे लाकर शोभायमान किया गया। श्री गुरु अरजन देव जी आप पूरे रास्ते संगतों के साथ नंगे पैर चलते हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर चंवर साहिब झुलाते रहे। श्री हरिमंदर साहिब में पोथी साहिब को प्रतिष्ठित किया गया। १७ भादों संवत् १६६१ को अमृत बेला में इसका प्रकाश किया गया। बाबा बुड्ढा जी को ग्रंथी थापा गया। पोथी साहिब की सेवा-संभाल का दायित्व बाबा जी को दिया गया। अमृत बेला में प्रकाश करके इसमें से हुकमनामा लिया गया। पहला हुकमनामा बख्शिश हुआ :

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु

करावणि आइआ राम ॥ . . . (पन्ना ७८३)

तब से यही मर्यादा चली। प्रतिदिन अमृत बेला में प्रकाश होता, हुकमनामा लिया जाता। संगतें श्रद्धा-प्रेम से हुकमनामा सुनतीं। अति उत्साह से श्री हरिमंदर साहिब में संगतें उमड़तीं। तब पूरे दिन कीर्तन होता। गुरबाणी के शब्द-गायन किए जाते। श्री गुरु अरजन देव जी आप सरंदा बजाते। भाई गुरदास जी को साथ लेकर गुरु साहिब मधुर रससिक्त कंठ से शब्द-गायन करते। छः और कीर्तनी जत्थे नियुक्त किए गए। भाई बलवंड राय जी और भाई सत्ता जी भी इसी जत्थे में थे। मुसलमान रबाबी अत्यन्त प्रेम से रबाब बजाते और बाणी गायन करते। श्री हरिमंदर साहिब में एक आलौकिक समय बंध गया। संगतों के भारी समूह उमड़ने लगे। केवल आस-पास के क्षेत्रों के ही नहीं दूर-दराज क्षेत्रों से, भारत के कोने-कोने से, भारत के बाहर काबुल और अफगानिस्तान से भी प्रेमी संगतें पोथी साहिब के दर्शन करने आने लगीं। 'पोथी परमेसर' के दर्शन करतीं, हुकमनामा श्रवण करतीं, रबाबियों से शब्द-बाणी सुनतीं। लंगर-पंगत की भी भरपूर गहमागहमी रहती। जाति-भेद से भिन्न सभी एक पंगत में बैठकर लंगर-प्रसाद प्राप्त करते। पूरे दिन श्रद्धालु प्रसन्नचित्त खिले चेहरों से गुरदेव जी की बख्शिशें प्राप्त करते, आनंद रस मंगल उपभोग करते, आलौकिक विस्मादजनक नजारा बना हुआ था।

सायं काल 'सो दरु रहरासि' का पाठ होता, तब कीर्तन, शब्द-गायन होता, तत्पश्चात 'ग्रंथ साहिब' जी का सुख-आसन होता। बाबा बुड्ढा जी इन्हें अपने शीश पर विराजमान करते, गुरु साहिब चंवर करते। संगतें प्रेम सहित शब्द-गायन करतीं और इन्हें गुरु अरजन साहिब जी के शयन कक्ष में ले आतीं। 'ग्रंथ साहिब' का जिस दिन से प्रकाश हुआ था गुरु जी ने अपने विश्राम कक्ष को ही 'ग्रंथ साहिब' जी का सुख-आसन स्थान बना दिया था। गुरु साहिब ने पलंग पर सोना छोड़ दिया था। सुख-आसन वाले स्थान पर बीड़ के पास ही जमीन पर लेटते थे, 'ग्रंथ साहिब' की सेवा में तत्पर रहते थे। श्री गुरु अरजन देव जी 'ग्रंथ साहिब' को 'प्रत्यक्ष गुरु' मानते थे, गुरबाणी के शब्दों को अकाल पुरख पारब्रहम परमेश्वर स्वरूप मानते थे। गुरदेव जी का यह विनम्र सत्कार-भाव आदर्श रूप में संगतों-श्रद्धालुओं को भी प्रभावित कर रहा था। शब्द-गुरु गुरबाणी के प्रति उनमें अटूट विश्वास, अथाह श्रद्धा, आस्था और प्रेम जागृत हो रहा था। गुरबाणी के शब्द और हुकमनामा उन्हें विस्मादजनक आनंद में सराबोर कर रहा था। 'पोथी परमेसर' की प्रस्थापना के दिन से श्री हरिमंदर साहिब एक आलौकिक आध्यात्मिक स्थल के रूप में विकसित होता चला गया।

इस प्रकार श्री गुरु अरजन देव जी ने मानवता को एक ऐसा अनमोल उपहार दिया जो युगों-युगों तक उसे सुख, सुकून और कल्याण प्रदान करता रहेगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब बेशकीमती हीरे, जवाहरात, रत्न, लाल एवं मणियों का अथाह भण्डार हैं। गुरु साहिब के ही शब्दों में :

हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥१॥रहाउ॥
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥
ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥१॥
रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥
भरे भंडार अखूट अतोल ॥२॥
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥ (पन्ना १८५-१८६)

इन बेशकीमती हीरे-मोतियों का हंस वृत्ति वाले जिज्ञासु जितना अधिक भुंचन करते जाएंगे, उतने ही अधिक आत्मिक बल की उन्हें प्राप्ति होगी और वे शब्द से जुड़कर *"जोध महाबल सूर"* की अवस्था को प्राप्त होंगे। गुरबाणी आत्मिक शक्ति का अत्यन्त प्रभावशाली स्रोत है। गुरबाणी का पाठ, कीर्तन, पठन, श्रवण मानव में ऊर्जा उत्पन्न करता है। निम्न से निम्न मनोस्थिति का उदास चिन्तातुर रोगी स्वभाव, गुरबाणी के पठन-श्रवण से उत्पन्न अमृत-रस को पीकर दुखों से मुक्त हो जाता है :

सुख उपजे दुख सगल बिनासे पारब्रहम लिव लाई ॥ (पन्ना १२६८)

गुरबाणी-प्रेमी तो दुख-सुख को महत्व ही नहीं देता। वह सुख और दुख से परे एक निर्लिप्त मनोवस्था की अनुभूति करता है। ऐसा ही अनुभव अमेरिका की नोबल पुरस्कार विजेता पर्ल एस. बक का रहा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात उन्होंने अपनी मनोस्थिति का इजहार करते हुए कहा कि हृदय और मन को जो ठहराव और प्रसन्नता श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पढ़ कर अनुभव हुई है वह शान्ति और ठहराव अन्य किसी धर्म-ग्रंथ को पढ़कर नहीं मिलता। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाएं और उपदेश प्रत्येक धर्म के श्रद्धालुओं के भले के लिए हर समय उपलब्ध हैं, जो मानव-हृदय और उत्सुक जिज्ञासु के मन की तृप्ति की तर्जमानी करते हैं, उसे रूपायमान करते हैं।

आज ३०० साला गुरता-गद्दी शताब्दी समागमों के अवसर पर एक सच्चे समर्पित गुरसिख के नाते हमारा फर्ज बनता है कि ऐसे सर्वोच्च दिव्य गुणों से पूरित महान गुरु साहिबान के सत्य अनुभवों की अभिव्यंजना, सच्ची बाणी का प्रकाश विश्व के कोने-कोने तक प्रसारित करें, जिससे कि तुच्छ स्वार्थों से घिरा विश्व-मानव, सत्य-पथ का राही बनकर एक स्वस्थ समाज की नव-सृजना कर सके। मनों में बसी जन्म-जन्मांतरों की घृणा, ईर्ष्या, द्वेष की मैल गुरु-दर्शनों से ही कटनी है :

तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ (पन्ना ९६७)



धन्यवाद!

ज्योति क्लाथ स्टोर, सागर (मध्य प्रदेश) ने अपने सज्जनों-मित्रों में 'गुरमति ज्ञान' बाटने हेतु १०,०००/- (दस हजार) रुपए का बैंक ड्राफ्ट भेजकर जीवन भर के लिए प्रति माह १०० प्रतियां बुक कराईं। स. त्रिलोक सिंघ खंडवा, दमोह (मध्य प्रदेश) ने १०००/- (एक हजार) रुपए का बैंक ड्राफ्ट भेजकर वर्ष भर के लिए १०० सज्जनों को 'गुरमति ज्ञान' का पाठक बनने का सुअवसर प्रदान किया।

गुरमति ज्ञान के आगामी विशेषांक

*सितंबर **2008**- श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार--- गुरु साहिबान, भक्त साहिबान, गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिख तथा भट्ट बाणीकारों सम्बंधी अलग-अलग विवरण।*

*अक्तूबर **2008**- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विश्व-बंधुत्व के तत्व।*

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला

*-डॉ. अमृत कौर**

"सिध गोसटि" में सिध श्री गुरु नानक देव जी से प्रश्न करते हैं—*"तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला"* और गुरु जी उत्तर देते हैं—*"सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥"* गुरमति चिन्तन में शब्द को 'गुरु' माना गया है। 'शब्द' को सिख चिन्तन, सिख सभ्याचार और सिख मर्यादा का केन्द्र-बिन्दु स्वीकार किया गया है। भाई गुरदास जी के अनुसार—*"सते दीप अन्हेरु है गुरमुखि दीपकु सबद उजाला।"* शब्द दैवी संगीत और दैवी ज्ञान का स्रोत है, दैवी ध्वनि और दैवी ज्योति का आधार है और सत्य के रूप में प्रकट होता है। अत: शब्द-आचरण को जीवन में रूपमान करना सदाचारिक जीवन की आधारशिला है। 'शब्द' जीवन में विकसित और प्रफुल्लित होकर निष्काम सेवा, सुसंस्कृत जीवन और कर्मयोग के रूप में अपने आप को प्रस्फुटित करता है। गुरु का शब्द दीपक है, मार्ग-निर्देशक है:

गुर का सबदु करि दीपको . . . ॥ (पन्ना ४००)

'शब्द', प्रभु की जीवनदायिनी बाणी है, ज्ञान और सत्य का भंडार है। 'शब्द' प्रकाश है और यह 'शब्द' प्रकाश बन कर सदियों से मानव का दिशा-निर्देशन कर रहा है।

'शब्द' प्रभु की जीवित आवाज है, मानव की अंतरात्मा में बसते प्रभु का प्रकटीकरण है:

आपे सबदु आपे नीसानु ॥ (पन्ना ७९५)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार 'शब्द' गुरु-उपदेश है, प्रभु की सच्चाई का प्रस्फुटन है। गुरु द्वारा शाश्वत सत्य का वर्णन गुरु-शब्द कहलाता है। 'शब्द' के द्वारा ही संसार की उत्पत्ति और विनाश होता है:

उतपति परलउ सबदे होवै ॥
सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ (पन्ना ११७)

'शब्द' की महिमा को जो जानता है, वो उसका जाप करता है। उसे मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। मन, तन प्रफुल्लित हो जाता है:

मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ (पन्ना ४४९)

और जब मनुष्य के अंदर 'शब्द' का निवास हो जाता है तो अज्ञान-अंधेरा मिट जाता है, दुख कट जाते हैं, मनुष्य ज्योति-स्वरूप बन जाता है:

—अंतरि सबदु मिटिआ अगिआनु अंधेरा ॥ (पन्ना ७९८)

—अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ (पन्ना ५४९)

गुरबाणी में 'शब्द' का गुणगान सर्वत्र बिखरा पड़ा है। 'शब्द' की महिमा का वर्णन गुरबाणी में इन शब्दों द्वारा किया गया है:

अखर महि त्रिभवन प्रभि धारे ॥
अखर करि करि बेद बीचारे ॥
अखर सासत्र सिंम्रिति पुराना ॥
अखर नाद कथन वख्याना ॥
अखर मुकति जुगति भै भरमा ॥
अखर करम किरति सुच धरमा ॥
द्रिसटिमान अखर है जेता ॥
नानक पारब्रहम निरलेपा ॥ (पन्ना २६१)

और इससे सम्पूर्ण ज्ञान की उत्पत्ति होती है:

**१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना-१४०६०४ (जीरकपुर)*

अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥
अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ (पन्ना ४)

प्रभु ने इस स्वयं को शब्द द्वारा प्रकट किया है—*"सुअसति आथि बाणी बरमाउ"* और यह बाणी 'शब्द ब्रह्म' बन कर प्रभु-मिलन का साधन बन जाती है:

गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ॥ (पन्ना ३९)

'शब्द' ज्ञान-गुरु है। यह आत्मिक शक्ति है। दैवी हुक्म इसकी उपजाऊ प्रेरणा है, रजा इसकी प्रसन्नता है, धर्म इसका स्वभाव है, कर्म इसकी काया है, नदर इसका विकास है, सत्य इसका प्रकाश है। 'शब्द' निरंकारी पैगाम है। प्रभु इसके द्वारा स्वयं बोलता है। यह परमात्मा की आवाज है। यह ज्योतिर्मयी शक्ति है, अविनाशी तत्व है:

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (पन्ना ५१५)

'शब्द' सर्वव्यापक शक्ति है, आत्मिक विकास के लिए प्रेरणास्रोत है। इसके द्वारा अज्ञानता का नाश और ज्ञान की प्राप्ति होती है। मन को शब्द-गुरु के द्वारा नियन्त्रित किया जा सकता है। यह आत्म-अन्वेषण की चाबी है। यह स्वयं को पहचानने के लिए दीपक है। इसके गायन, श्रवण एवं मनन के द्वारा आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है। विकारों का विनाश होता है और दुखों से छुटकारा मिलता है, अवगुणों का विनाश होता है। 'शब्द' नैतिक मूल्यों को जीवन में ढालने में सहायक सिद्ध होता है:

गुर कै सबदि कमलु परगासिआ हउमै दुरमति खोई ॥ (पन्ना १३३४)

आत्मा-परमात्मा के मिलन में बाधक 'हउमै' की दीवार 'शब्द' के द्वारा टूट जाती है, गिर जाती है:

—माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ (पन्ना १२०)
—गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ॥ (पन्ना ६१)

'शब्द' द्वारा काया निर्मल हो कंचन बन जाती है:

काइआ कंचनु सबदु वीचारा ॥ (पन्ना १०६४)

जो शब्द-शक्ति को अपना लेता है, जीवन में ढाल लेता है वह पवित्र हो जाता है:

सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥
जो चाखै सो निरमलु होइ ॥ (पन्ना ६६४)

गुरमति चिन्तन के अनुसार प्रभु 'शब्द' के द्वारा अपने आप को अभिव्यक्त करता है जो गुरबाणी के रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित है:

सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥ (पन्ना ७२३)

यह धुर की बाणी है, दैवी बाणी है। पश्चिम में इस शब्द-अभिव्यक्ति को इलहाम कहा गया है। इस दैवी बाणी का प्रस्फुटन होता है जब पाप की बारात लेकर कोई नि:शस्त्र व्यक्तियों की होली खेलता है, जब-जब धर्म की हानि होती है और जब संतों को उबारने के लिए, दुष्टों के दमन के लिए जनता अज्ञान के अंधेरे में भटक रही होती है, जनता का पथ-प्रदर्शन करने के लिए, उन्हें उबारने के लिए गुरु के हृदय में बाणी का आवेश होता है। प्रभु अपने आप को इस दैवी बाणी के माध्यम से अभिव्यक्त करता है:

हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ (पन्ना ७६३)

और ये 'शब्द' गुरबाणी के रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित होकर सदियों से लोगों का दिशा-निर्देशन कर रहे हैं। यह हमारा बहुमूल्य खजाना है—*"पीऊ दादे का खोलि डिठा*

खजाना ॥" जो सदियों से हमारे आध्यात्मिक, नैतिक, शैक्षणिक, सामाजिक विकास में योगदान दे रहा है। यह सदीवी प्रेरणास्रोत है। इसमें ज्ञान की बहुमूल्य माणिक-मोतियों की रश्मियें हैं:

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥ *(पन्ना ९८२)*

दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने ज्योति जोति समाने से पूर्व सिखों को उपदेश देते हुए कहा:

गुरू ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभु को मिलबो चहे खोज सबद मैं लेहु।

गुरबाणी गुरु साहिबान की प्रकट देह है। अत: प्रभु को **'शब्द'** में खोजो**!** **'शब्द'** सदा के लिए जीवित है।

मैकालिफ के अनुसार श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी ने अपने समय के सिखों को कहा कि "मेरा हृदय गुरु ग्रंथ साहिब सदैव तुम्हारे साथ रहेगा।"

'शब्द' जीवन को संवारता है। शब्द-लहरें ब्रह्मांड में व्याप्त हैं, जिनके द्वारा आलौकिक आनंद (नाद) का तराना ध्वनित हो रहा है, जिसको जीवन में विकसित कर प्रभु तक पहुंचा जा सकता है। इसलिए **'शब्द'** को ईश्वर और मनुष्य के बीच पुल भी कहा जाता है। **'शब्द'** द्वारा जीवन का नैतिक निर्माण होता है, सदाचार का विकास होता है और ये शुभ गुण परमात्मा तक पहुंचने में सहायक सिद्ध होते हैं। गुरु की शब्द-रूपी टकसाल पर व्यक्तित्व के निर्माण का गहना घड़ा जाता है, जिसमें संयम, धैर्य, बुद्धि, ज्ञान, प्रेम, तप जैसे दैवी गुणों का संचार होता है :

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ *(पन्ना ८)*

बिना **'शब्द'** को जीवन में ढाले, सदाचार की प्राप्ति नहीं होती:

बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥
(पन्ना १२८५)

गुरबाणी में **'शब्द'** को साखी भी कहा गया है; नाम का सुनना कहा गया है, सुरति का आवेश कहा गया है:

—गुर साखी अंतरि जागी ॥
ता चंचल मति तिआगी ॥
गुर साखी का उजीआरा ॥
ता मिटिआ सगल अंध्यारा ॥ *(पन्ना ५९९)*
—गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥ *(पन्ना ३६०)*

जब तक गुरु-शब्द अंदर जागृत नहीं होता तब तक पूर्ण रूप से परमात्मा के ज्ञान से लाभ नहीं होता और न ही आत्म-साक्षात्कार होता है, न ही अंतर-चक्षु खुलते हैं। मानव शरीर रूपी सागर अनंत शक्तियों का भंडार है, परंतु इन शक्तियों का विकास शब्द-गायन, श्रवण और मनन से होता है। शब्द-गायन द्वारा केवल मन का ही विकास नहीं होता बल्कि शरीर भी निरोग रहता है। शरीर और मन का पारस्परिक संबंध है। जब मन शांत होता है तो शरीर भी निरोग रहता है और जब पाप तथा विकार दूर हो जाते हैं तो हृदय रूपी कंवल खिल जाता है:

हिरदै कमलु परगासिआ जोती जोति मिलाइ ॥
(पन्ना १४२४)

मनोवैज्ञानिक रूप से हम कह सकते हैं कि जब उच्च मूल्यों का जीवन में विकास होता है, शुभ विचारों की तरंगें वातावरण में प्रसारित होकर मानसिक प्रदूषण को दूर करती हैं तो शारीरिक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है:

गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ ॥

(शेष पृष्ठ १७ पर)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पादना एवं इसका महत्व

*-श्रीमती शैल वर्मा**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब मध्यकालीन भक्ति साहित्य का एक महान ग्रंथ है। इस पवित्र ग्रंथ में १२वीं सदी से १७वीं सदी तक के सिख गुरुओं, संतों, भक्तों, भट्टों, एवं गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिखों की बाणी अंकित है। इसके पहले लोगों की बाणियां अलग-अलग ढंग से व्यक्तिगत रूप से सुरक्षित रहीं। इन गुरु-बाणियों को एक जगह संकलित करके 'ग्रंथ साहिब' के रूप में सुरक्षित करने की कला का श्रेय श्री गुरु अरजन देव जी को जाता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ का सम्पादन पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने १५ भादों सं. १६६१ तक सम्पूर्ण किया। इस बीड़ का लेखन-कार्य सिख धर्म के विद्वान भाई गुरदास जी ने रामसर साहिब में पूर्ण किया। १७ भादों सं. १६६१ को पहली बार इस पावन ग्रंथ का स्थापन श्री हरिमंदर साहिब, अमृतसर में हुआ। इसके प्रथम ग्रंथी बाबा बुड्ढा जी थे। इस पावन ग्रंथ का सम्पादन पुनः श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किया। उन्होंने इसमें अपने पूज्य पिता श्री गुरु तेग बहादर जी के शब्दों तथा श्लोकों को सम्मिलित किया। इसको लिखने का कार्य माननीय भाई मनी सिंघ जी ने किया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आरंभ में मूल-मंत्र एवं जपु जी साहिब है। यह पावन ग्रंथ ३१ रागों में लिखा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं देशीय राग-रागनियों के अनुरूप बाणी के संगीत के तत्व को बरकरार रखा गया है। यह एक महान धार्मिक एवं साहित्यिक ग्रंथ है। इस पावन ग्रंथ में कई भाषाओं के शब्द विद्यमान हैं। इसमें आध्यात्मिक, दार्शनिक विचारों को व्यक्त किया गया है। इसके तीन विशिष्ट सिद्धांत हैं:

१. प्रभु का नाम-सुमिरन करना (नाम जपो)
२. परिश्रम करके जीवन-यापन (किरत करो)
३. बांट कर खाना (वंड छको)

जीव को प्रभु-ज्योति-अंश माना गया है। विश्व-बंधुत्व की भावना पर बल दिया गया है। भक्त कबीर जी का कथन है:

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल १४३० पन्ने हैं। ३६ महापुरुषों की बाणी संग्रहित है। ३६ महापुरुषों में ६ गुरु साहिबान, १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान और ४ गुरसिख हैं। कुछ बाणी राग-मुक्त है। छोटे लेख में रागों का विवरण देना सम्भव नहीं है। इसमें श्री गुरु नानक देव जी तथा अन्य गुरु साहिबान द्वारा निर्धारित बुनियादी सिद्धांत, एक आदर्श जीवन-शैली के गुर बताये गये हैं। यह मानव-मात्र का मार्गदर्शन कराने वाला पहला विलक्षण ग्रंथ है।

उस समय पंडितवाद एवं पाखंड का बोलबाला था। कर्म-ग्रंथ संस्कृत में थे। उस पर पंडितों का अधिकार था। जनसाधारण भ्रमित था। ऐसे-ऐसे 'गुरु' हुये कि जनता को कंगाल बनाने में लग गये। किन्तु सिख गुरु साहिबान ने तमाम बनावटी पहरावों का खंडन किया।

**४८/८, सागर सदन, बभनगांवा (पुलिस चौकी के पीछे), गांधी नगर, बस्ती, उ. प्र.-२७२००१*

विशेषतया मध्यकालीन लोग, समाज और संस्कृति के लिये हानिकारक थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब इसके प्रमाण हैं। जिज्ञासु के मन में उठने वाले भ्रमों के निवारण की आवश्यकता थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब ने एक सच्चा आधार समाज को दिया। गुरबाणी के महत्व की पहचान श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं ही आरंभ कर दी। बाद में अन्य बाणीकारों ने इसे और स्पष्ट किया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सच्ची बाणी यानी गुरबाणी संकलित है। गुरबाणी की तर्ज पर कुछ तत्कालीन **'कवियों'** ने अपनी रचनाएं इसमें सम्मिलित करनी चाहीं। वे पहले-पहल अपने प्रयास में कुछ सफल भी रहे। एक दिन गुरु-दरबार में किसी सिख ने कीर्तन करते समय कवि मिहरबान रचित **'शब्द'** पढ़ा जो श्री गुरु अरजन देव जी ने भी सुना। शब्द प्रामाणिक बाणी में न होने के कारण परन्तु प्रामाणिक तौर पर चल पड़ने की आशंका ने श्री गुरु अरजन देव जी को शीघ्र प्रामाणिक बाणी की संपादना करने की आवश्यकता अनुभव कराई। उन्होंने अपनी देख-रेख में इस कार्य को भाई गुरदास जी की सेवाएं लेते हुए अंजाम दिया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की भाषा-शुद्धता बनाये रखने के लिये गुरु-कृपा भाई गुरदास जी के सिर पर थी।

कच्ची बाणी की मिलावट से गुरबाणी को अलग करना ही है। तमाम भक्त बाणीकारों की रचनाएं-पोथियां बड़े यत्नपूर्वक एकत्रित की गयीं। सच्ची बाणी को अलग रखा गया। गुरबाणी से जुड़ने के लिये कुछ लोगों ने पृथक प्रयास किया लेकिन किसी की न चली।

समाज धर्म के नाम पर भटक रहा था। संस्कृत में उपलब्ध ज्ञान पर पंडितों का राज था। पंडितवाद की भ्रमित दशा देख कर विचारकों एवं गुरु साहिबान की जो सच्ची बातें, लोक-जीवन संवारने वाली थीं, उन सच्ची बातों को जनहित के लिए प्रकट करने हेतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाशन होना आवश्यक था। श्री गुरु अरजन देव जी की कृपा से यह महती कार्य सम्पन्न हुआ। अन्य भी कई कारणों के कारण इसके संकलन एवं संपादन की आवश्यकता अनुभव की गयी। आज जिस श्री गुरु ग्रंथ साहिब का हम दर्शन करते हैं वह भाषा-शुद्धता के साथ सच्ची बाणी हमारे समक्ष है। सिख पंजाबी आज जहां भी है, चाहे जहां भी बैठा हो, वह मेहनत से कमाई रोटी बांट कर खायेगा; कुछ ही दिनों में खुशहाल बन जायेगा बिना चोरी-बेईमानी किये। बुद्धिबल गुरु-कृपा से आगे बढने का ही उद्देश्य रहेगा। काश! पूरा देश श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में होता, देश दुर्दशा से बच जाता! महापुरुषों की बाणी में लोक-मंगल की भावना निहित रहती है जो हम सबके लिये कल्याणकारी है।

'पुरातन जनम साखी' से कुछ ऐसे संकेत मिलते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी के साथ उदासियों के समय कुछ सेवक रहते थे जो उनके द्वारा उच्चारण की गयी बाणी को लिखते जाते थे। इस प्रकार एकत्रित की गयी बाणी को श्री गुरु नानक देव जी ने सदैव अपने पास रखा। गुरु जी के मक्का की यात्रा पर जाते समय भाई गुरदास जी ने गुरु साहिब के पास एक पोथी होने का उल्लेख किया है। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का संकलन श्री गुरु अंगद देव जी तक पहुंचा। श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी अगले गुरु श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी के समय मिली। बाणी का अगला संकलन श्री गुरु अमरदास जी ने तैयार करवाया जो "बाबे मोहन वालियां पोथियां" के नाम से प्रसिद्ध है। इन पोथियों की लिखावट के द्वारा गुरमुखी के प्राचीनतम रूप के दर्शन होते हैं। एक पोथी पर

श्री गुरु रामदास जी के दस्तखत उपलब्ध हैं। श्री गुरु अरजन देव जी इन पोथियों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्पादन के समय गोइंदवाल साहिब से लेकर आये थे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया कि उन भक्तों, संतों की बाणी को शामिल किया जाए जो निर्गुण भक्तिधारा के विकास में सहायक रहे। विभिन्न प्रदेशों के संतों, भक्तों, भट्टों की बाणी को गुरबाणी के साथ एक स्थान पर संकलित कर गुरु जी ने विश्व-बंधुत्व की भावना को सिख धर्म के द्वारा प्रचारित किया। सम्पूर्ण बाणी में व्याकरण मात्र ताल जोड़ राग आदि की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया गया। नियम कानून के तहत सभी बाणियां समाहित हैं। श्री गुरु अरजन देव जी प्रयत्नपूर्वक लाई गयी रचनाओं का स्वयं संशोधन करते थे। कहीं भाव मात्रा या ताल में बारीक अंतर पाते तो स्वयं उनका निराकरण करते थे। जो गुरमति की कसौटी पर खरी नहीं उतरी उसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान नहीं मिला, चाहे वह किसी की भी रचना क्यों न थी।

श्री गुरु अरजन देव जी ने मानव-उन्नति के निमित्त श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन करवाया। वैसे किसी भी धर्म को अपने धर्म-सिद्धांतों को सबके लिये परोसना अच्छा होता है, किन्तु यह पावन ग्रंथ जो सच्चे धर्म गुरुओं की सच्ची बाणी मानवता के सम्मुख ज्यों की त्यों रख देता है। यह सही मायने में समूची मानवता का एक मात्र सर्व-हितकारी धर्म-ग्रंथ है, जो सबके लिये ऊंचा संदेश और निर्मल उपदेश देता है। यह शब्द-गुरु है। इसके होते हमें कहीं अन्य देहधारी गुरु खोजने की आवश्यकता नहीं। यह 'सम्पूर्ण गुरु' परमात्मा तक लेकर जाता है। यह ऐसा 'गुरु' है जो समस्त मानवीय कुविचारों को नष्ट करके सदाचारों को ग्रहण करवाने की क्षमता रखता है।

"गु= अंधकार, रु= प्रकाश" भाव अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक अलग ही महत्व रखते हैं। गुरु साहिबान ने यह नहीं देखा कि रचनायें किस धर्म से, कहां से आईं, लिखने वाले कौन सी बोली बोलते हैं, अछूत हैं या उच्च वर्ग वाले, बस कल्याणकारी विचारों एवं भावों को एक जगह संकलित किया।



सबदु गुरू सुरति धुनि चेला

(पृष्ठ १४ का शेष)

हउमै रोगु गइआ भउ भागा सहजे सहजि मिलाइआ ॥ *(पन्ना ७७३)*

शब्द-बाणी के द्वारा परमात्मा का ज्ञान होता है, ज्ञान और धर्म की प्राप्ति होती है, पापों का विनाश होता है:

बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥ *(पन्ना ७७३)*

गुरमुखि व्यक्ति 'हउमै' को शब्द के द्वारा जला कर प्रभु की प्राप्ति करता है:

गुरमुखि हउमै सबदि जलाए ॥ (पन्ना ९४२)

इस संसार रूपी सागर को पार करने के लिए शब्द-गुरु नौका का काम करता है:

—भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ (पन्ना ९४३)

—सबदि गुरू भव सागरु तरीऐ . . . ॥

(पन्ना ९४४)

सहायक पुस्तक:

मैकालिफ : *सिख रिलीजन,* जिल्द-४, १९६३, पृ. २३८.



श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लेखन-कार्य में भाई गुरदास जी की भूमिका

*-डॉ. निर्मल कौशिक**

भाई गुरदास जी सिख धर्म के प्रसिद्ध विचारक, प्रचारक, कवि और व्याख्याता के रूप में विश्वविख्यात हैं। उनका गुरु-चरणों में श्रद्धाभाव और समर्पण भाव अपने आप में एक अनूठा उदाहरण है। तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी से लेकर छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी तक गुरसिखी का प्रचार आपने दूर-दूर तक किया। आपकी विद्वता और बुद्धिमता किसी से छिपी नहीं है। इसी के फलस्वरूप आपको गुरु-घर के महान कार्यों की जिम्मेवारी सौंपी गईं जिसे आपने बाखूबी निभाया। आपने सिख धर्म के गहन तत्त्वों को अपनी रचनाओं के माध्यम से सार रूप में प्रकट किया। इन रचनाओं का आधार सिख धर्म और दर्शन है। आपके महान कार्यों तथा व्यक्तित्व के आधार पर अगर आपको सिख गुरु साहिबान के बाद महान सिख धर्म के महान व्याख्याकार कह दिया जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी।

भाई गुरदास जी केवल एक आदर्श गुरसिख, आज्ञाकारी सेवक अथवा गुरमति के प्रचारक ही नहीं थे, वे एक प्रतिभाशाली तथा विद्वान कवि भी थे। उन्होंने गुरमति सिद्धांतों की अपने ढंग से व्याख्या की। प्रचारक का तत्व सहज स्वभाव इनकी बाणी से प्रकट होता है। उन्होंने अपनी मौलिक रचनाओं के माध्यम से अपने दैनिक जीवन की घटनाओं और अनुभवों को भी अपनी रचनाओं में साकार करते हुए गुरमति काव्य और प्रचार में वृद्धि की। आप देश के दूर-दराज के क्षेत्रों के भ्रमणकर्त्ता, अनेक विद्याओं के ज्ञाता, धुरंधर विद्वान तथा प्रभावोत्पादक व्याख्याता थे। अब तक के अनुसंधानों के आधार पर भाई गुरदास जी की निम्नलिखित रचनाएं उपलब्ध होती हैं:-

१. संस्कृत के श्लोक, जो 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में 'वाहिगुरु स्तोत्र' के अंतर्गत संकलित हैं।
२. वारें, जिनकी भाषा पंजाबी है।
३. कबित्त सवय्ये : ये दो खण्डों में उपलब्ध हैं। पूर्व स्कंध ५५६, दूसरा स्कंध ११९। इनकी भाषा ब्रज है।

भाई गुरदास जी की उक्त तीनों रचनाएं गुरमति काव्य की महत्त्वपूर्ण निधि हैं। इन रचनाओं द्वारा भाई गुरदास जी ने पंजाबी बोली को साहित्यिक रूप प्रदान किया और गुरमति साहित्य को प्रोढ़ता प्रदान की। 'साहित्य समाज का दर्पण है' की उक्ति इनकी रचनाओं पर अक्षरशः चरितार्थ होती है। आपने तत्कालीन, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक स्थिति का खुले मन से चित्रण किया है। संस्कृत के श्लोक, आपकी प्रतिभा और विद्वता का प्रबल प्रमाण हैं।

भाई गुरदास जी तीसरे गुरु जी के समय से ही अनेक महापुरुषों और गुरु साहिबान की बाणियों का संग्रह करने में जुटे हुए थे। गुरमति का प्रचार करते समय उनके प्रतिद्वंदी प्रिथी चंद के पुत्र मिहरबान ने गुरु की बाणी के नकल स्वरूप एक ग्रंथ का संकलन किया। तब श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरुओं तथा संतों-भक्तों की

**१६३, आदर्श नगर, पुरानी छावनी रोड, फरीदकोट (पंजाब)-१५१२०३*

असली और प्रमाणिक बाणी को शीघ्र से शीघ्र प्रकाश में लाने के उद्देश्य से श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन कार्य का संकल्प लिया। भाई गुरदास जी के सहयोग और परिश्रम से जो भी बाणी एकत्रित की गई उसके पुन: लेखन, संशोधन और संपादन का कार्य करने के लिए एक सुयोग्य विद्वान और गुरु-घर के अनन्य श्रद्धावान सेवक का होना अनिवार्य था। गुरु जी की दृष्टि में इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए भाई गुरदास जी से उपयुक्त कोई दूसरा सेवक न था। भाई गुरदास जी गुरमति के सिद्धांतों और गूढ़ रहस्यों को भली-भांति समझते थे। गुरु जी की दृष्टि में भाई गुरदास जी से श्रेष्ठ सेवक इस कार्य के लिए अन्य कोई नहीं था। अत: पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने इस कार्य को भाई गुरदास जी को सौंपते हुए गुरबाणी के संकलन, लेखन और सम्पादन के कार्य में सेवा निभाने का आदेश दिया। जब गुरु जी ने भाई गुरदास जी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लेखन का कार्य-भार सौंपा तो भाई गुरदास जी ने श्री गुरु अरजन देव जी से प्रार्थना की कि जिस ग्रंथ को आपने लिखने की सेवा मुझे लगाई है वह मेरी सामर्थ्य से बाहर है। इतने महान पुरुषों, गुरुओं, पीरों, संतों, भक्तों, भट्टों की बाणियों में से मैं क्या छोड़ूं, क्या रखूं, कैसे इतना लिखूं ? यह कैसे सम्भव है? मैं अल्प बुद्धि हूं। श्री गुरु अरजन देव जी ने भाई गुरदास जी के सिर पर हाथ रखा और उनकी विनम्रता से प्रसन्न होकर एक कलम उनके हाथ में थमा दी। भाई गुरदास जी ने उस कलम को गुरु-चरणों से स्पर्श किया और वाहिगुरु का हुक्म मानकर गुरबाणी लिखने की सेवा करने लगे।

गुरु जी जो बाणी उच्चारण करते भाई गुरदास जी नतमस्तक होकर लिखते जाते। गुरु जी ने एक दिन भाई गुरदास जी से कहा कि आप तो विद्वान हो, गुरमति सिद्धांतों से परिचित हो, समूची बाणी में से संकलित करने योग्य बाणी का चयन करने में हमारी मदद करो। गुरु जी के आदेश से भाई गुरदास जी सिख-सिद्धांतों के अनुरूप बाणी का संचयन कर गुरु जी के पास ले आते। एक दिन गुरु जी ने भाई गुरदास जी से पूछा कि आप भिन्न-भिन्न गुरुओं, संतों, भक्तों की बाणी में से गुरबाणी के अनुरूप बाणी को कैसे पहचान लेते हो। तो भाई गुरदास जी ने उत्तर दिया कि जिस प्रकार पत्नी अपने स्वामी (खसम) की आवाज (वाणी) को पहचान लेती है इसी प्रकार मैं भी अपने स्वामी (खसम) की आवाज (वाणी) को पहचान लेता हूं। गुरु जी ने उनके इस उत्तर से प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें गुरमति के प्रचारक नियुक्त कर दिया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सम्पादन करते समय श्री गुरु अरजन देव जी ने समूची संकलित बाणी को गुरु-क्रम तथा राग-क्रमानुसार योजानबद्ध किया। तदनन्तर बाणी के लेखन-कार्य के लिए भाई गुरदास जी को अपने पास बुलाया। इस पावन ग्रंथ का लेखन-कार्य अमृतसर में रामसर सरोवर के किनारे रमणीय प्रकृति के आंचल में सम्पन्न किया गया। कहा जाता है कि गुरु जी एक कुटिया में बैठकर शब्द उच्चारण करते थे। गुरु जी के मुख से उच्चरित बाणी को भाई गुरदास जी कलमबद्ध करते जाते थे। बाणी का क्रम निर्धारण करने में भी भाई गुरदास जी की अहम भूमिका रही है।

एक बार बादशाह अकबर लाहौर जाते हुए बटाला शहर में रुका तो श्री गुरु अरजन देव जी के प्रतिद्वंदी बने बैठे प्रिथी चंद ने गुरु जी

के विरुद्ध शिकायत की कि श्री आदि ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अरजन देव जी ने इस्लाम धर्म की निन्दा की है। अकबर ने श्री गुरु अरजन देव जी को श्री आदि ग्रंथ साहिब बटाला में लाने के लिए कहा। गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी को आदि श्री ग्रंथ साहिब की प्रति देकर कुछ शिष्यों के साथ बटाला भेज दिया। अकबर ने भाई गुरदास जी को श्री आदि ग्रंथ साहिब में से कुछ शब्द पढ़ कर सुनाने को कहा। उसने जो भी पन्ने सुनाने को कहा भाई गुरदास जी ने पढ़ कर सुनाए और उनका तात्पर्य भी बताया। बादशाह बाणी सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसकी शंका की निवृत्ति हो गई। इससे भी भाई गुरदास जी की विलक्षण प्रतिभा और विद्वता का आभास होता है।

भाई गुरदास जी अधिकतर गुरमति के प्रचारक और बाणी के व्याख्याता के रूप में ही जाने जाते रहे हैं, मगर बहुत कम लोग यह जानते हैं कि श्री आदि ग्रंथ साहिब के सम्पादन तथा लेखन-कार्य में भी भाई गुरदास जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। श्री गुरु अरजन देव जी के विश्वसनीय शिष्य होने के कारण गुरु जी भाई जी के सुझावों का भी सम्मान करते थे। श्री आदि ग्रंथ साहिब के लेखन-कार्य के साथ-साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सम्पादन कला में भी भाई गुरदास जी का योगदान है। श्री आदि ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त रविदास जी, शेख फरीद जी, भक्त सूरदास जी, भक्त सधना जी, भक्त पीपा जी आदि भक्त साहिबान छः सिख गुरुओं, भट्टों तथा गुरसिखों की बाणी की रागों के अनुसार क्रमबद्ध प्रस्तुति कोई सहज कार्य न था। गुरु जी के मार्गदर्शन व दिशा-निर्देश में भाई गुरदास जी ने शेख फरीद जी से लेकर ६०० वर्षों की विस्तृत साहित्यिक परम्परा एवं सांस्कृतिक विरासत को एक सूत्र में पिरो दिया। श्री आदि ग्रंथ साहिब केवल सिख धर्म का ही नहीं सभी भारतीयों का महत्त्वपूर्ण, धार्मिक व दार्शनिक ग्रंथ है। यह भारतीय साहित्य एक संस्कृति की अमीर और अमर विरासत है। यह भारतीय और मानवीय एकता का प्रमाणिक दस्तावेज है। इस से भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह सारी मानवता का आदर्शतम ग्रंथ है।

भाई गुरदास जी ने श्री आदि ग्रंथ साहिब के लेखन और सम्पादन-कार्य का कार्य सम्पन्न होने पर गुरमति प्रचार का कार्य आरंभ किया। आप हिन्दी-प्रांतों में संस्कृत और ब्रज भाषा में गुरबाणी तथा गुरमति सिद्धांतों का प्रचार-कार्य करते रहे। आपने 'वाहिगुरु' का अर्थ बताने हेतु काशी (बनारस) के चेतन मठ में संस्कृत भाषा का अध्ययन किया। संस्कृत भाषा सीखकर वहां के ब्रह्मणों से संस्कृत में शास्त्रार्थ करके उन्हें वाहिगुरु के सन्दर्भ में गुरबाणी का महत्त्व बताया। जैसा कि पहले कहा जा चुका है आपके द्वारा रचित संस्कृत के श्लोक भाई संतोख सिंघ जी द्वारा रचित 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में अंकित हैं। इसी प्रकार आपने पंजाबी भाषा में 'वारों' तथा हिन्दी-ब्रज भाषा में 'कबित-सवय्यों' की रचना की।

कहा जाता है कि एक बार गुरु जी ने भाई गुरदास जी से कहा कि आप भी अपनी रचनाओं में से कुछ बाणी ले आओ ताकि वह भी इस पावन ग्रंथ में सम्मिलित की जा सके। तब भाई साहिब ने गुरु जी के आगे नत्मस्तक होकर हाथ जोड़ते हुए निवेदन किया कि हे गुरु जी! मैं तो आपका और आपके भक्तों का तुच्छ सा सेवक हूं। सेवक की बाणी स्वामी की पावन बाणी के समक्ष (बराबर) कैसे बैठ सकती है?

तब भाई गुरदास जी की श्रद्धा एवं गुरु-भक्ति से प्रसन्न होकर गुरु जी ने उन्हें वरदान दिया कि आपकी बाणी 'गुरबाणी की कुंजी' होगी। जो भी व्यक्ति आपकी बाणी को श्रद्धायुक्त होकर पढ़ेगा उसे गुरबाणी के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान सहज ही हो जाएगा। भाई गुरदास जी ने गुरबाणी की जैसी व्याख्या की है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। निश्चित रूप से आप सम्पादन-कला, गुरमति ज्ञान और विद्वता की त्रिवेणी हैं।

आप गुरु-घर के अनन्य सेवक, अनुपम शिष्य, आदर्श प्रचारक, निष्ठावान भक्त व प्रतिभाशाली विद्वान थे। आपकी प्रतिभा और सामर्थ्य देखकर आम आदमी आश्चर्यचकित हो जाता है। आपके इन्हीं गुणों के कारण श्री गुरु अरजन देव जी ने आपको श्री गुरु ग्रंथ साहिब जैसी महत्त्वपूर्ण कृति के सम्पादन और लेखन में सदा परछाई की तरह अपने साथ रखा। यह गौरव भाई गुरदास जी को ही प्राप्त हुआ।

श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी देख-रेख में अपनी उच्चरित बाणी तथा पूर्व संकलित बाणी को भाई गुरदास जी के लेखन द्वारा जो अमरता प्रदान की है, उसके लिए अन्य मिसाल मिलना दुर्लभ है। भाई गुरदास जी ने गुरु-घर की आजीवन सेवा की जिसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्पादन और लेखन-कार्य में उनका विलक्षण योगदान भी सम्मिलित है। उनके इस महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आगे नत्मस्तक होने वाले तथा सिख धर्म में आस्था एवं श्रद्धा रखने वाले सभी जन भाई गुरदास जी के भी ऋणी रहेंगे। सिख समुदाय में वन्दनीय विद्वान, कवि, गुरमुख, 'गुरबाणी की कुंजी' के वरदान से अलंकृत भाई गुरदास जी का गुरबाणी के सम्पादन तथा लेखन-कार्य में दिया गया योगदान निश्चय ही एक महत्त्वपूर्ण एवं मानवकल्याणार्थ किया गया एक स्तुत्य कार्य है। गुरबाणी को श्रद्धा और आस्था सहित पढ़ने एवं सुनने वाले सज्जन भाई गुरदास जी के इस अमूल्य योगदान का अनुभव करते हैं। ❁

कविता

मिलन की आस

जन्म-जन्म की प्यास रे।
मुझको तुमसे मिलन की आस रे।
तुम मुझको पास कब बुलाओगे?
हृदय में अपने कब बसाओगे?
इस मोह-माया के बंधन से
मुझको कब छुड़वाओगे?
जन्म-मरण के चक्र से,
मुक्त कब करवाओगे?
जन्म-जन्म की प्यास रे।
मुझको तुमसे मिलन की आस रे।
सोचता हूं कि इस भवसागर में,
मुझको बचाने कब आओगे?
काल के इस चक्र से,
मेरा पल्लू कब छुड़वाओगे?
इस काम, क्रोध, लोभ के द्वन्द युद्ध में,
क्या मुझे विजयी नहीं बनाओगे?
जन्म-जन्म की प्यास रे।
मुझको तुमसे मिलन की आस रे।
मुझे पता है कि तुम आओगे।
मुझे ज्ञान-उजाला बख्शोगे,
और अज्ञानता दूर भगाओगे।
अपने नाम-सुमिरन भंडार से,
मेरा परिचय कराओगे।
तुम आओगे, तुम आओगे, . . .। ❁

-स. नरेन्द्रपाल सिंघ, कृष्णा नगर करथोली, छन्नी, निअर सर्च लाईट अकेडमी, बडी-ब्राहमणा (जम्मू)-१८११३३

श्री गुरु ग्रंथ साहिब : मध्ययुगीन इतिहास का स्रोत ग्रंथ

-डॉ. अविनाश शर्मा*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व का एक मात्र विलक्षण ग्रंथ है जिससे धर्मशास्त्री, समाजशास्त्री, साहित्यकार एवं दार्शनिक, प्रेरणा और दिशा-निर्देश प्राप्त करते आ रहे हैं। इस पावन ग्रंथ में १२वीं शताब्दी से लेकर १७वीं शताब्दी तक के विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों तथा मत-मतांतरों को मानने वाले गुरुओं, संतों, भक्तों एवं सूफियों की बाणी संकलित की गई है। विद्वानों का विश्वास है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन भले ही श्री गुरु अरजन देव जी ने किया है किन्तु बाणी का संकलन पूर्ववर्ती गुरु साहिबान ने ही आरंभ कर दिया था। 'पोथी' के रूप में पर्याप्त एकत्रित बाणी श्री गुरु अरजन देव जी के पास पूर्व गुरु साहिबान के द्वारा ही पहुंची थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संकलन का कार्य इतिहास के एक विशेष कालखंड में आरंभ हुआ था, किन्तु गुरबाणी को समझने वाली दृष्टि इस तथ्य को समझती है कि इस परम पवित्र ग्रंथ की आधारशिला स्वयं श्री गुरु नानक देव जी ने ही रख दी थी। इस पावन ग्रंथ में पांच शताब्दियों के सांस्कृतिक इतिहास के अतिरिक्त भारतीय इतिहास की मध्यकालीन, मिथइतिहास दृष्टि भी लक्षित होती है। विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों के संकेतों के अतिरिक्त उस युग की राजनीतिक अवस्था सम्बंधी जानकारी भी इस पावन ग्रंथ में मिलती है।

विश्व के अनेक प्रसिद्ध इतिहासकारों ने मध्ययुगीन इतिहास की अनेक घटनाओं की प्रमाणिकता के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब को एक स्रोत के रूप में मान्यता दी है। डॉ. जसविंदर कौर का विचार है कि गुरबाणी में हमें ऐसे कई सन्दर्भ मिलते हैं जिनसे इतिहास-निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण हो सकती है। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में काल-क्रमानुसार कोई व्यवस्थित जानकारी उपलब्ध नहीं होती, परन्तु इतिहासकार बाणी के विश्लेषण से ज्ञात घटनाओं को वैज्ञानिक ढंग से एकत्रित करके अज्ञात घटनाओं का ऐसा यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर सकते हैं जो सार्थक भी होगा और वास्तविक इतिहास भी। डॉ. गंडा सिंघ ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी को भारतीय इतिहास में आए अन्तरालों को पूरा करने में समर्थ पाया है। डॉ. हरफान हबीब का मत है कि मध्यकालीन भू-प्रबंधन सम्बंधी विश्वसनीय तथ्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब से प्राप्त होते हैं। वास्तव में बाणीकारों ने अपनी बाणी में अपने युग की अनेक ऐतिहासिक घटनाओं को बीज रूप में स्थान दिया है। इन सांकेतिक बिन्दुओं को आधार बनाकर इतिहासकार अनेक ऐतिहासिक पहलुओं को उजागर कर सकते हैं।

इतिहास केवल घटनाओं का संकलन ही नहीं है, वह युग की आत्म-कथा भी होता है। साम्राज्य बनते हैं, बिगड़ते हैं; राजवंश जमते हैं, उखड़ते हैं। इन बनने और बिगड़ने में प्रजा और साधारण नागरिकों का क्रंदन दब जाता है। उनके आंसू, उनकी बेबसी और उनकी असमर्थता के एहसास से सूख जाते हैं। इतिहासकारों की नजर प्राय: इन पर नहीं पड़ती, किन्तु श्री

*निदेशक, स्वामी सर्वानंद कॉलेज ऑफ ऐजूकेशन, दीनानगर (गुरदासपुर)।

गुरु नानक देव जी के भीतर के इतिहासकार ने अपने दायित्व को पहचाना और अपने युग की पीड़ा को स्वर दिया।

बाबर ने जब पंजाब पर आक्रमण किया तब श्री गुरु नानक देव जी सैदपुर (एमनाबाद) में थे। बाबर की विजयी सेना ने स्थानीय लोगों पर जो अत्याचार किये श्री गुरु नानक देव जी उनके साक्षी हैं। उन्होंने अपनी बाणी में इस ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया है। उनके विचार में बाबर काबुल से पाप की बारात लेकर आया है और लोगों से जबरदस्ती उपहार एवं नजराने मांग रहा है। शर्म एवं धर्म दोनों आलोप हो चुके हैं। चारों ओर झूठ की प्रधानता है, चारों ओर रक्त बह रहा है, शहर लाशों से भरा हुआ है। इस आक्रमण ने भारत के शरीर को क्षत-विक्षत कर दिया है। जिन नगरों में कभी चहल-पहल हुआ करती थी, अब वे रौनक तथा चहल-पहल विहीन हो गए हैं। सुंदर महल, भवन, सराय, सुंदर स्त्रियां सबको धन के लोभियों ने तबाह कर दिया है। बाबर के आक्रमण के सामने पठान शासकों के सभी जादू निष्फल हो गए हैं। पठान राज्य को बाबर ने टुकड़े-टुकड़े करके मिट्टी में मिला दिया था। मुगलों तथा पठानों के युद्ध में तलवारों आदि शस्त्रों के अतिरिक्त मुगलों द्वारा बंदूकों का भी उपयोग किया गया था। श्री गुरु नानक देव जी ने बाबर को 'शेर' कहा है और यहां के स्थानीय लोगों को 'भेड़ों का झुंड'। बाबर की शक्ति के आगे लोग असहाय गऊयों की भांति हैं। लोगों की इस अवस्था को देख कर गुरु नानक साहिब का दिल कराह उठा और उन्होंने ईश्वर को उलाहना दिया कि इतना अत्याचार हो रहा है क्या तुझे तरस नहीं आया?

इतिहास-निर्माण में तद्‌युगीन राजनीतिक परिस्थितियां बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी बाणी में उस काल की राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया है। राजे लोगों पर अत्याचार करते हैं, उनसे कर इकट्ठा करने के नाम पर भिखारियों की भांति पैसा मांगते हैं। भक्त नामदेव जी ने बादशाह द्वारा उन पर किए गए अत्याचारों का वर्णन अपनी बाणी में किया है। श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में एक दृष्टांत है कि किसी व्यक्ति ने श्री गुरु अमरदास जी की शिकायत की। वह बेचारा अपना मुंह काला करवा कर वापस लौटा। उसके सम्बंधियों और रिश्तेदारों ने भी उसे मुंह नहीं लगाया। श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी बाणी में गुरु-घर के विरोधियों के बारे में विचार व्यक्त किए हैं। उनके ये विचार सिख इतिहास का अंग हैं। इन्हीं से पता चलता है कि सिख धर्म ने किस प्रकार विरोधी शक्तियों से टक्कर लेकर अपना मार्ग प्रशस्त किया है। श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी में सिखों के पवित्र स्थान 'रामदासपुर' के बसने, 'रामदास सरोवर' की मान्यता, 'हरिमंदर साहिब' के सम्पूर्ण होने पर 'अमृतसर' के धार्मिक तथा आध्यात्मिक वातावरण की झलक दिखाई देती है।

डॉ. गरेवाल ने अपनी पुस्तक 'गुरु नानक इन हिस्ट्री' में लिखा है कि श्री गुरु नानक देव जी ने देश-विदेश के अनेक नगरों, तीर्थों, नदियों तथा पवित्र स्थानों का भ्रमण किया था और उन्होंने इन सबका उल्लेख अपनी बाणी में किया है। इस उल्लेख के साथ-साथ इन नगरों का सामाजिक विज्ञान, धार्मिक अवस्था तथा आर्थिक स्थितियों का भी आकलन स्वयंमेव हो गया है। सामाजिक तथा धार्मिक अवस्थाओं के वर्णन से युगीन इतिहास को समझने में सुविधा हो जाती है।

गुरु बाणी के पावन शब्दों में श्री गुरु

(शेष पृष्ठ २८ पर)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निर्दिष्ट आदर्श जीवन-मार्ग

-डॉ. परमजीत कौर*

चौरासी लाख योनियों में श्रेष्ठ बहुत पुण्यों के बाद प्राप्त दुर्लभ मानव देह को प्राप्त कर मनुष्य संसार के माया-जाल में फंसकर उन कर्मों में उलझ जाता है जो उसके जीवन को निरर्थक बना देते हैं:

छोडि जाहि से करहि पराल ॥
कामि न आवहि से जंजाल ॥
संगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥
जो बैराई सेई मीत ॥
ऐसे भरमि भुले संसारा ॥
जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ (पन्ना ६७६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निर्दिष्ट जीवन-मार्ग पर चलकर जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

गुरु साहिबान ने गृहस्थ जीवन में रहकर अपने सभी आवश्यक कृत्यों को करते हुये, सारे उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुये आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने का आदेश दिया है। गुरु नानक साहिब समझाते हैं कि जैसे जल में कमल कीचड़ से निर्लिप्त रहता है वैसे ही गृहस्थ में रहकर, नाम-सुमिरन करते हुये दुख-सुख, लाभ-हानि में समभाव से विचरण करते हुये विरक्त रहा जा सकता है:

जिउ जल महि कमलु अलिपतो वरतै तिउ विचे गिरह उदासु ॥ (पन्ना ९४९)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का फरमान है:

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥
(पन्ना ६८४)

जीवन-मार्ग पर सफलतापूर्वक चलने के लिये यह आवश्यक है कि परमात्मा को अपना रक्षक सहायक, पथ-प्रदर्शक तथा मित्र समझा जाये और मन में पूर्ण विश्वास रखा जाये कि प्रभु सदैव हमारे साथ हैं। गुरु साहिब समझाते हैं कि प्रत्येक कार्य प्रारंभ करने से पहले परमात्मा के समक्ष प्रार्थना करने से कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हो जाता है। श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है:

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥
(पन्ना ९१)

इसके साथ ही मन में प्रभु की याद तथा प्रभु का भय रखना जरूरी है। ऐसा न करने से मनुष्य प्राय: मन्द कर्मों में प्रवृत्त हो जाता है तथा सारा जीवन चिन्ता, तनाव एवं मानसिक अशान्ति में बिता देता है। पंचम पातशाह के पावन वचन हैं:

बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥
कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥ (पन्ना १९७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्वाभिमान-युक्त सम्मानित जीवन बिताने पर बल दिया गया है:

जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

पराधीनता से मौत को बेहतर माना गया है:

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥

*****अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)-१३५००१

जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥
(पन्ना १३८०)

सुखी तथा सम्मानित जीवन बनाने के लिये यह आवश्यक है कि केवल शारीरिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति को जीवन का लक्ष्य न बनाया जाये क्योंकि इनसे प्राप्त सुख क्षणिक होता है। पंचम पातशाह कथन करते हैं:

सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥
सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥
सुखु नाही बहु देस कमाए ॥
सरब सुखा हरि हरि गुण गाए ॥ (पन्ना ११४७)

हमें शरीर, मन तथा आत्मा तीनों को ही अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाना चाहिये। धन जीवन के लिये आवश्यक है पर उतना ही सुखदायक है जो मेहनत से कमाया जाता है। अनुचित साधनों से अर्जित किया गया धन अर्थ न रहकर अनर्थ बन जाता है तथा मानसिक अशान्ति का कारण बनता है। गुरु साहिब के अनुसार नाम जपना, किरत करना तथा बांट कर छकना ही सफल जीवन का आधार है। गृहस्थ में रहकर मेहनत की कमाई में से दसवंध (दसवां भाग) निकालकर जरूरतमंदों की सहायता करने का आदेश दिया गया है:

—घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)
—उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ (पन्ना ५२२)

धन का लोभ त्यागना ही कल्याणकारी है। पराया हक मारना पाप है। जो यह करता है वह कभी सुखी नहीं रह सकता:

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

पराया हक मारकर दूसरों को दुख देकर प्राप्त किया गया अन्न तथा सुख शरीर में विकारों को पैदा करता है। इससे मन तथा तन दोनों अपाहिज हो जाते हैं। मन की अपवित्रता हमें लोभ तथा छल-कपट के मार्ग पर ले जाती है तथा परमात्मा से दूर कर देती है:

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ (पन्ना १४०)

मन ही मनुष्य को सुमार्ग या कुमार्ग पर ले जाता है। मनुष्य जो भी अच्छे या बुरे कर्म करता है उसके संस्कार उसके अंदर एकत्र हो जाते हैं। उन संस्कारों से ही उसका व्यक्तित्व बनता है। यदि मनुष्य के विचार नेक नहीं हैं, पवित्र नहीं हैं तो शरीर से वह कोई भी धार्मिक समझे जाने वाले कर्मकांड करता रहे, उसका मन स्थिर नहीं रहता, सदा भटकता रहता है। गुरबाणी को पढ़ने-सुनने तथा उसकी विचार करने से मनुष्य की बुद्धि निर्मल हो जाती है तथा मन को वश में करना आ जाता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आध्यात्मिक मार्ग का निर्देशन वैज्ञानिक ढंग से दिया गया है। इस विचार को दृढ़ किया गया है कि आध्यात्मिकता का आधार सदाचार है इसलिये पवित्र तथा सदाचारी जीवन पर बल दिया गया है:

—सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
(पन्ना ६२)
—मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ॥ (पन्ना ३९)

जीवन को सफल बनाने के लिये सच्चाई, मधुरता, विनम्रता, क्षमा, सहनशीलता, संतोष, सेवा, परोपकार की भावना आदि गुणों के महत्व का प्रतिपादन किया गया है तथा समझाया गया है कि विनम्रता से सब मित्र प्रतीत होने लगते हैं तथा परमात्मा की कृपा-दृष्टि प्राप्त हो जाती है:

—सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि

मीत पिआरे ॥ (पन्ना ३७९)
—होइ निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥ (पन्ना २५९)

जिसने अपने मन से बुराई मिटा दी, जो किसी का बुरा नहीं सोचता, वह कभी दुखी नहीं होता। उसके लिये तो सारा संसार ही मित्रवत् हो जाता है:

—मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥ (पन्ना २६६)
—पर का बुरा न राखहु चीत ॥
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ (पन्ना ३८६)

सत्य, संतोष, दया आदि गुणों को धारण करने वाला मनुष्य चिंता, तनाव, क्लेशों से शीघ्र मुक्त हो जाता है। मानसिक शान्ति तथा संतुष्टि के कारण उसके अन्दर उत्साह तथा प्रसन्नता बने रहते हैं जो उसको सुन्दर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी बना देते हैं। ये गुण आत्मिक जीवन का शृंगार बन जाते हैं:

—सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ ॥
मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ॥ (पन्ना ४२२)
—सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥ (पन्ना ८१२)

गुरु साहिब स्पष्ट करते हैं कि जीवों पर दया करने में ही सारे अठसठ तीर्थों की यात्रा तथा सारे दान-पुण्य आ जाते हैं:

अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥ (पन्ना १३६)

क्षमा करने का स्वभाव बनाना ही व्रत रखना है:

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥ (पन्ना २२३)

गुरु साहिबान ने तीर्थ-व्रत आदि फोकट कर्मकाण्डों का निषेध किया है। गुरु साहिबान के अनुसार इन कर्मकाण्डों से मन पवित्र नहीं होता। यदि मन मलिन है तो सारा जीवन ही अवगुणों से भरा हुआ प्रतीत होता है। भिन्न-भिन्न तीर्थों पर स्नान करने से अवगुण दूर नहीं होते। श्री गुरु नानक देव जी ने समझाया है कि जो मनुष्य गुरबाणी अनुसार जीवन बनाता है उसका मन प्रभु के नाम-सुमिरन में लग जाता है। उसका पवित्र मन आत्मिक जीवन की सूझ प्राप्त करके नाम रूप तीर्थ पर स्नान करता है तथा आत्मिक जीवनदायक अमृत प्राप्त करता है:

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥ (पन्ना ६८७)

व्रत आदि रखकर अन्न का त्याग करने के स्थान पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, निन्दा, चुगली आदि विकारों का त्याग करना चाहिये जो सफलता तथा आत्मिक उन्नति में बाधक हैं। क्रोध विवेकहीन कर देता है, लोभ पथ-भ्रष्ट करता है, अहंकार गुणों को विकसित नहीं होने देता, काम एवं क्रोध शरीर को उसी प्रकार नष्ट कर देते हैं जैसे सुहागा सोने को पिघला देता है। इसलिये इनका त्याग कल्याणकारी है :

तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥ (पन्ना १०१८)

मन की स्थिरता के लिये मन को विकारों के मुकाबले में मजबूत बनाना आवश्यक है। गुणों को धारण कर अवगुणों को छोड़ने से यह कार्य सरल हो जाता है:

साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥ (पन्ना ७६६)

नाम को अंदर बसाने के लिये मन को दृढ़ करने का तरीका बताते हुये गुरु पातशाह समझाते हैं कि अमृत वेला में उठकर प्रभु का ध्यान करो, इससे मन तथा तन निरोग हो जाते

हैं। इस समय मन प्राय: स्थिर रहता है। लेकिन अमृत वेला प्रभु के चरणों में गुजारकर शेष सात पहर भी अच्छा आचरण बनाना जरूरी है। गुरु साहिबान ने चलते-फिरते, उठते-बैठते, जागते-सोते हर समय प्रभु को याद रखने की ताकीद की है:

चलत बैसत सोवत जागत गुर मंत्रु रिदै चितारि ॥
चरण सरण भजु संगि साधू भव सागर उतरहि पारि ॥ (पन्ना १००६)

छल-कपट से रहित निर्मम चित्त से नाम जपने से हर तरह का दुख, दरिद्र तथा मानसिक अशान्ति नष्ट हो जाती है:

दुख दारिद अपवित्रता नासहि नाम अधार ॥
(पन्ना २९७)

समाज में रहते हुये लोगों से सम्बंध बनाना भले ही जरूरी है, पर स्वार्थ तथा दुनिया को दिखाने के लिये लोगों की अनावश्यक खुशामद तथा प्रशंसा नहीं करनी चाहिये, क्योंकि झूठी प्रशंसा करना जब आदत बन जाये तो मनुष्य हीन भावना का शिकार बन जाता है तथा उसके अंदर से स्वाभिमान और आत्म-सम्मान की भावना समाप्त होती चली जाती है। वह समाज में अपना आदर गंवा बैठता है। गुरु साहिब समझा रहे हैं कि हे भाई! दुनिया की खुशामद न करता रह, दुनिया तो नष्ट हो जायेगी। गुरु की शरण में आकर सदैव परमात्मा का गुण-कीर्तन कर:

दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी ॥
लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥
वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥
(पन्ना ७५५)

सहज-भाव तथा चित्त की स्थिरता के लिये थोड़ा खाना, थोड़ा बोलना तथा थोड़ा सोना जरूरी है:

खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥
(पन्ना ९३९)

गुरु साहिब ने मनुष्य को खाने-पीने आदि के सांसारिक सुख को त्यागकर सन्यास लेने का उपदेश नहीं दिया। आप जी ने समझाया है कि जिन पदार्थों को खाने से, जिन सुखों को भोगने से तथा जिन वस्त्रों को पहनने से मन में विकार पैदा हों तथा मन परमात्मा के डर-अदब को भुलाकर गलत रास्ते पर चल पड़े, वे सुख दुखों के मूल हैं तथा त्यागने योग्य हैं:

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥
(पन्ना १६)

आज इस दौड़-धूप तथा दिखावे वाले युग में मनुष्य खोखले भ्रम-जाल में फंसकर समय तथा धन दोनों नष्ट कर रहा है। शगुन-अपशगुन, वहम-भ्रम, दिन-तिथि का विचार तथा श्राद्ध आदि 'धार्मिक' समझी जाने वाली रस्मों, रीति-रिवाजों तथा अंधविश्वासों को धर्म समझकर अज्ञानता के उस मार्ग की ओर जा रहा है जो मानसिक अशान्ति पैदा करता है। आज धर्म के बारे में अपने दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है। गुरु साहिबान के अनुसार धर्म मनुष्य को ऊंचा तथा छल-कपट से रहित एवं पवित्र बनाता है। श्री गुरु अरजन देव जी समझाते हैं कि कल्याणकारी कार्यों में ढील न करनी, परमात्मा को सदैव याद रखना, पर-धन, पर-स्त्री आदि का लालच न करना, संतात्मा लोगों की संगत करना तथा निन्दित कर्मों का त्याग करना ये धर्म के लक्षण हैं। इन गुणों से रहित मनुष्य धर्महीन है:

नह बिलंब धरमं बिलंब पापं ॥
द्रिड़ंत नामं तजंत लोभं ॥

सरणि संतं किलबिख नासं प्रापतं धरम लख्यिण ॥
नानक जिह सुप्रसंन माधवह ॥ (पन्ना १३५४)

श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि परमात्मा सच्चाई की भेंट स्वीकार करता है। जीवन-राह पर मन, वचन तथा कर्म से सत्य का आश्रय लेना ही प्रभु की पूजा है। सत्य तथा संतोष का जीवन व्यतीत करना ही परमात्मा के समक्ष प्रार्थना करना है:

तुधनो निवणु मंनणु तेरा नाउ ॥
साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥
सतु संतोखु होवै अरदासि ॥
ता सुणि सदि बहाले पासि ॥ (पन्ना ८७८)

नशों के सेवन से बुद्धि नष्ट हो जाती है, मन वश में नहीं रहता। अधीनता, आलस्य, कमजोरी तथा कई तरह के रोग पैदा हो जाते हैं। मानसिक तनाव, अशान्ति तथा झगड़ों के कारण आचरण भ्रष्ट हो जाता है। गुरु साहिबान ने नशों से वर्जित किया है:

. . . किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥
(पन्ना ३६०)
—जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥
(पन्ना ५५४)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सामाजिक, व्यवहारिक तथा धार्मिक-जीवन सम्बंधी दिये गये निर्देशों पर चलकर ही जीवन में फैले हुये अज्ञानता के अंधकार को दूर किया जा सकता है। इसके लिये आवश्यक है कि गुरबाणी का पाठ करने तथा सुनने के साथ-साथ उस पर विचार किया जाये ताकि उसको जीवन में लागू कर सकें।

आओ! श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के तीन सौ साला गुरुता-गद्‌दी पर्व को इस तरह मनायें कि नित्य कम से कम एक शब्द की विचार करने का प्रण करें तथा श्री गुरु नानक देव जी के इस उपदेश को सदा याद रखें : "वह कार्य करें जो सतिगुरु जी ने बताये हैं। सतिगुरु जी द्वारा बतायी गयी करणी से दूर न भागें!"

गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥
गुर की करणी काहे धावहु ॥ (पन्ना ९३३)



. . . मध्ययुगीन इतिहास का स्रोत ग्रंथ

नानक देव जी ने जिस ढंग से मुगलों के आक्रमणों का वर्णन किया है वैसा वर्णन किसी दूसरे इतिहासकार ने नहीं किया। इन श्लोकों/शब्दों में युग चित्रण के साथ-साथ परम्परागत तथा रूढ़िगत विचारों एवं धार्मिक कर्म-काण्डों की निन्दा करते हुए नए मार्ग के दर्शन की रूप-रेखा भी बनाई है। इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब परमात्मा की उसतति और धार्मिक तथा ऐतिहासिक स्रोतों को अपने में समेटे हुए एक महान ग्रंथ हैं।

सन्दर्भ सूची

१. गुरु नानक इन हिस्ट्री--डॉ. जगतार सिंघ (गरेवाल)।

(पृष्ठ २३ का शेष)

२. ऐवीडैंस फार दी सिक्टींथ सेन्चुरी एगगेरियन कण्डीशनज इन गुरु ग्रंथ साहिब--इरफान हबीब
३. दी आदि ग्रंथ ऐज़ ए सोरस हिस्ट्री--डॉ. कृपाल सिंघ।
४ भक्तस आफ दी गुरु ग्रंथ साहिब--डॉ. पशौरा सिंघ।
५. हिस्ट्री ऑफ पंजाब--डॉ. फौजा सिंघ।
६. आदि ग्रंथ का आलोचनात्मक अध्ययन--एस. एस. कोहली।
७. श्री गुरु ग्रंथ साहिब।
८. श्री गुरु ग्रंथ साहिब : इतिहास का प्रमुख स्रोत--डॉ. जसविंदर कौर।
प्रधानगी भाषण ३६वीं पंजाब हिस्ट्री कांफ्रेंस।



बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे

-डॉ. मनजीत कौर*

दुनिया के समूचे धर्मों में शब्द-गुरु रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हैं। बेशक कलगीधर पातशाह ने खालसा पंथ को आदेशित किया- '*सभ सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ*' फिर भी इस हकीकत को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि यह पावन ग्रंथ समूची मानवता की रहनुमाई करने में सक्षम है। इस संदर्भ में यह भी विचारणीय तथ्य है कि श्री गुरु नानक देव जी के कोई देहधारी गुरु नहीं थे। गुरदेव ने स्पष्ट किया कि मेरा 'गुरु' भी 'शब्द' ही है :

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (पन्ना ९४३)

अर्थात् मेरा 'गुरु' वह 'शब्द' है जो 'धुर की बाणी' है, 'परमेश्वर की बाणी' है या यूं कहें कि मेरा 'गुरु' 'परमेश्वर' है, उसका सुमिरन करके, उससे चित्त जोड़ने वाला मैं उसी अकाल पुरख का शिष्य हूं। गुरु साहिबान 'धुर की बाणी' के उच्चारणकर्त्ता हैं इसलिए उनके मुखारबिंद से उच्चरित बाणी को इलाही बाणी कहा जाता है, यथा :

धुर की बाणी आई ॥
तिनि सगली चिंत मटाई ॥ (पन्ना ६२८)

लगभग समस्त धर्मों ने सतिगुरु की महिमा पर प्रकाश डाला है। वह परमात्मा सर्वव्यापी है, जर्रे-जर्रे में विद्यमान है, चींटी से हाथी तक सभी जीवों में वही समाया हुआ है, जैसा कि भक्त नामदेव जी का पावन शब्द है :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥ . . .
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥ (पन्ना ९८८)

उस ईश्वर की सर्वव्यापकता के बोध के लिए गुरु की मध्यस्थता अनिवार्य हो जाती है। गुरु-शब्द का अर्थ ही है जो अज्ञानता रूपी अन्धेरे से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर तथा नश्वरता से अमरता की ओर ले जाए।

श्री गुरु अंगद देव जी का गुरु की महत्ता को दर्शाता पावन शब्द है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

अर्थात् अगर आसमान में सौ चंद्रमा उदय हो जाएं, हजार सूर्य भी प्रकाशमान हो जाएं, इतनी रोशनी के हो जाने पर भी गुरु के बिना अंत:करण में अंधकार ही अंधकार है।

यही नहीं पावन बाणी तो हमें यही संदेश देती है :

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥
गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ (पन्ना १३९९)

अत: स्पष्ट है जब ईश्वर की अपार कृपा होती है तब पूर्ण गुरु मिल जाता है :

पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ (पन्ना ८५१)

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-४ (राजस्थान)*

पंचम पातशाह ने कहा कि पूर्ण गुरु की प्राप्ति से ही जीवन के सभी दायित्वों का बाखूबी निर्वाह करते हुए हंसते-खेलते, खाते-पीते अर्थात सही जीवन-युक्ति से ही मुक्ति हो जाती है। इस हकीकत को बयान करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ (पन्ना ५२२)

इसलिए गुरबाणी हमें टेढ़े-मेढ़े कर्मकांडी मार्गों पर चलने वाले, माया में लिप्त पाखंडी गुरुओं से सावधान करती है, जैसा कि भक्त कबीर जी का पावन शब्द इस सन्दर्भ में हमारा दिशा-निर्देश करता है :

कबीर सिख साखा बहुते कीए केसो कीओ न मीतु ॥
चाले थे हरि मिलन कउ बीचै अटिकिओ चीतु ॥ (पन्ना १३६९)

ऐसे गुरु जिन्होंने स्वयं ईश्वर को मित्र नहीं बनाया, जो खुद शिष्यों से अपनी पूजा करवाने में व्यस्त हो गए, जो स्वयं ईश्वर-प्रेम से वंचित हैं वे दूसरों को नाम रूपी अमृत कैसे बांट सकते हैं? दूसरे शब्दों में, जो मार्गदर्शक ही अंधा अर्थात् अज्ञान की मूर्त होगा उसके शिष्यों को आत्मिक सुख कैसे मिल सकता है? यथा :

गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥ (पन्ना ५८)

श्री गुरु रामदास जी गुरु को पारस मानते हैं जो कि अपवित्र हृदय को भी पवित्र करके खरा सोना बना देता है :

गुर पारस हम लोह मिलि कंचनु होइआ राम ॥ (पन्ना १११४)

वस्तुतः गुरु के बिना अगम-अगोचर परमात्मा की सर्वव्यापकता की सूझ पैदा नहीं हो सकती और न ही आत्मिक अडोलता की स्थिति बन सकती है, यथा :

अगमु अगोचरु गुरू दिखाइआ ॥
भूला मारगि सतिगुरि पाइआ ॥
गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि पूर द्रिढ़ाइआ गिआनां हे ॥
गुरि द्रिसटाइआ सभनी ठांई ॥
जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥
ऊच ऊन सभ एक समानां मनि लागा सहजि धिआना हे ॥ (पन्ना १०७५)

सभी में उस परमात्मा की ज्योति व्याप्त है। यह बात शब्द के माध्यम से पूर्ण सतिगुरु दिखा देते हैं :

एका जोति जोति है सरीरा ॥
सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ॥ (पन्ना १२५)

दशम पातशाह ने आने वाले समय की नजाकत को पहचानते हुए सिखों को आदेश दिया:

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सभ सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ।
गुरू ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभ को मिलबो चहै खोज सबद मै लेह।
(प्राचीन पंथ प्रकाश कृत ज्ञानी ज्ञान सिंघ)

आज भी ज्यादातर सिख अपने रोजमर्रा के कार्यों या विशेष कारजों की गुरु-वाक के अनुसार प्रारम्भता करना ही शुभ मानते हैं।

इस सर्वोत्तम बाणी को गायन करने की प्रेरणा देते हुए पावन फरमान है :

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ (पन्ना ९२०)

सतिगुरु की बाणी प्रेरक है, मार्गदर्शक है। यह बाणी जिस हृदय-घर में वाहिगुरु की रहमत से रस-बस जाती है उसका जीवन सफल व धन्य हो जाता है, यथा :

गुरबाणी गावह भाई ॥

ओह सफल सदा सुखदाई ॥ (पन्ना ६२८)

यही नहीं:

गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥ (पन्ना ६७)

श्री गुरु रामदास जी का पावन संदेश है:

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ (पन्ना ९८२)

गुरु के पावन मुखारबिंद से उच्चारण की गई बाणी आत्मिक कल्याण का स्रोत है, ईश्वर से साक्षात्कर करवाने का प्रमुख मार्ग है। इलाही बाणी होने के कारण गुरु और बाणी अभेद हैं। इस बाणी को प्रत्यक्ष गुरु-रूप मान कर दिशा-निर्देश लेकर अर्थात् पूर्ण श्रद्धा से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी को पढ़-सुन कर, मनन कर, इसके अनुसार जीवन बना कर, लोक और परलोक के सुखों से झोलियां भर जाती हैं, समस्त चिंताओं, संतापों, दरिद्रों से छुटकारा मिल जाता है, जैसे कि श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है :

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ (पन्ना २)

आवश्यकता है तो बस पावन उपदेशों के अनुरूप जीवन बनाने की, यथा :

सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥
गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥ (पन्ना ६६९)



कविताएं

कुसंग व सतसंग से भेंट-वार्ता

चलता जा रहा था मैं अपने ही खयालों में,
रास्ते में भरी हुई सामान से,
थैली मुझे मिल गई एक।
उठाकर थैली मैं जा रहा था रास्ते अपने
कि मुझे 'कुसंग' गया मिल।
लगा कहने आकर पास, चंचल!
इस थैली को फेंक दे नाले में,
व्यर्थ है यह सामान।
थोड़ा आगे जाने के बाद, मुझे मिल गया 'सतसंग'।
और वह लगा कहने—यह थैली है दुर्लभ,
इस थैली को रखना संभाल कर।
थैली 'रत्न, नीलम' से भी कीमती,
'प्रभु-नाम' से भरी हुई थी।
अच्छा हुआ कि मैंने 'कुसंग' की बात कर दी अस्वीकार।
और 'सतसंग' से मेरा, अब हो रहा उद्धार।

धर्म के नाम पर कत्ल करने वाले

गुरु सभी के सांझे हैं। भगवान सबके सांझे हैं।
धर्म के रास्तों में, चलने वाले इंसानों को
दया का कम्पल्सरी सब्जेक्ट
पास करना ही पड़ता है,
जो कि इंसानियत कहलाता है।
तब कहीं जाकर वो मनुष्य
सिख, हिंदू, मुस्लिम या ईसाई
कहलवा सकता है।
धर्म के नाम पर कत्ल करने वालों के पास
धर्म की युनीवर्सिटी की कोई डिग्री नहीं होती,
कोई मार्कलिस्ट नहीं होती,
उनकी कोई लिविंग ही नहीं होती।
मैं तो कहूंगा कि वे लोग
धर्म की युनीवर्सिटी के
विद्यार्थी ही नहीं होते।

-स. चंचल सिंघ, २८, ग्रेट नाग रोड, नागपुर। 

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विलक्षण सामाजिक एवं दार्शनिक स्थापनाएं

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब भारतीय दर्शन एवं विचार-परम्परा का परम चिंतन है। पहले पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपादित और बाद में दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा पुनर्संपादित इस अद्भुत पावन ग्रंथ में पहले पांच गुरु साहिबान, नवम पातशाह, १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान एवं ४ निकटवर्ती गुरसिखों की बाणी दर्ज है।

१४३० पन्नों पर आधारित शब्द-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी एक ऐसे 'ज्ञान सरोवर' हैं जिसमें डुबकी लगा कर मनुष्य की अतीत, वर्तमान, भविष्य की सारी समस्याओं के हल खोजे जा सकते हैं। जीवन की कोई भी स्थिति हो, मानव-मन की कोई भी दशा हो या जिंदगी का कोई भी पहलू हो, सबके बारे में गंभीर-गहन दिशा-निर्देश गुरबाणी में मिल जाते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि मानव-जीवन के किसी भी पक्ष से संबंधित स्पष्ट, पूर्ण, सृजनात्मक और व्यवहारिक दृष्टि प्रदान करते हैं।

यह सही है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ब्रह्म, आत्मा, माया, सृष्टि, विभिन्न साधना-पद्धतियों आदि से सम्बद्ध धार्मिक-दार्शनिक सिद्धांत एवं उनका निचोड़ मिलता है बल्कि यहां मानवीय समता, एकता एवं विश्व-बंधुत्व जैसी, सामाजिक सरोकारों से संबंधित अवधारणाएं भी मिलती हैं। यही नहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आध्यात्मिक-दार्शनिक के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक पक्ष की भी ऐसी अलग, विशिष्ट और विलक्षण स्थापनाएं मिलती हैं जो अपने आप में अद्वितीय हैं। ये स्थापनाएं न सिर्फ भक्ति-साहित्य संबंधी चिंतन-मनन को नये आयाम प्रदान करती हैं बल्कि सहज, स्वाभाविक, संपूर्ण एवं खुशहाल जीवन जीने की युक्ति भी सुझाती हैं।

उदाहरण के तौर पर यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ऐसी ही कुछ अद्वितीय एवं विलक्षण स्थापनाओं का संक्षेप में परिचय प्रदान करने का प्रयास किया गया है—

भौतिक संसार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

लगभग सभी दार्शनिक चिंतनों एवं विचारधाराओं में संसार अथवा सृष्टि को नश्वर, मिथ्या और क्षणभंगुर माना गया है। परन्तु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संसार को नश्वर, कूड़ (मिथ्या) एवं क्षणभंगुर मानने के बावजूद भी *"सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥"* कहकर सृष्टि अथवा संसार को सत्य भी माना गया है।

श्री गुरु नानक देव जी इसे सत्य-रूप ईश्वर का घर मानते हैं और उस सत्य-रूप अकाल पुरख को इसमें निवास करने वाला बताते हैं :

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ *(पन्ना ४६३)*

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का माझ राग में फरमान है :

इहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥
सदा समाले को नाही खाली ॥ (पन्ना ११८)

गुरु साहिबान ने संसार को 'जगत-अखाड़ा'

**१/३३८ 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१ मो: ०९४१७२-७६२७१*

कहकर इसे मनुष्य की कर्म-भूमि माना है। आप किसी भी स्थिति में इसे त्याज्य नहीं मानते।

आर्थिक उन्नति स्वीकार्य

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा मनुष्य द्वारा संसार में रहते हुए अपनी भौतिक जरूरतें पूरी करने के लिए अर्थ-उपार्जन को उचित एवं श्रेष्ठ मानती है। इसीलिए यहां 'किरत' यानी कार्य करके जीविका कमाने को सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति माना गया है। श्री गुरु नानक देव जी अर्थ-उपभोग को अकाल पुरख द्वारा प्रदत्त 'रिज़क' कहकर पवित्र मानते हैं :

खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि ॥
(पन्ना ४७२)

श्री गुरु अरजन देव जी गूजरी राग में स्पष्ट फरमाते हैं कि इसी प्रकार खाते-पीते, खेलते-पहनते हुए भी 'मोक्ष' या 'मुक्ति' प्राप्त की जा सकती है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ *(पन्ना ५२२)*

दरअसल गुरमति में मनुष्य की आर्थिक उन्नति को सामाजिक उन्नति का आधार माना गया है। यही नहीं स्वरोजगार में रत व्यक्ति सदाचारी भी होता है जो समाज की नैतिक, उन्नति में भी भूमिका निभाता है जबकि कर्महीन व्यक्ति नकारात्मक भावों से ग्रस्त हो जाता है।

सीमित निजी सम्पत्ति अर्जित करने का हक

गुरमति विचारधारा मनुष्य को निजी सम्पत्ति अर्थात् अपनी भौतिक आवश्यकताओं के अनुसार अर्थ-अर्जन करने के लिए प्रेरित करती है। श्री गुरु अरजन देव जी राग गूजरी में मनुष्य से कहते हैं कि उसे परिश्रम करते हुए जीवन जीना चाहिए और अपनी कमाई से सुख का भोग करना चाहिए :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
(पन्ना ५२२)

स्तरीय जीवन जीने का अधिकार

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उचित, स्तरीय और खुशहाल जीवन गुजारने को मनुष्य का बुनियादी हक माना गया है, इसीलिए गुरमति में 'देग तेग फतह' का सिद्धांत स्थापित हुआ है। 'देग' (भोजन वाला बर्तन) मनुष्य की आर्थिक एवं भौतिक जरूरतों का प्रतीक है, जिसे 'फतह' (जीतने यानी प्राप्त) करने की कामना की गई है। श्री गुरु रामदास जी राग गउड़ी में फरमाते हैं कि जिस मनुष्य का 'साहिब' ही नंगा-भूखा होगा, वह खुद कैसे पेट भर खा सकता है ?

साहिबु जिस का नंगा भुखा होवै
तिस दा नफरु किथहु रजि खाए ॥ (पन्ना ३०६)

इसलिए एक खुशहाल जिंदगी जीने के लिए अकाल पुरख से सब कुछ मांगा गया है। भक्त धन्ना जी की मांगें देखिए, जिन्हें दाल, आटा, घी, जूते, अनाज, दूध के लिए गाय-भैंस, सवारी के लिए घोड़ी और एक सुशील व कुशल पत्नी चाहिए :

दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
पन्हीआ छादनु नीका ॥
अनाजु मगउ सत सी का ॥
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥
जनु धंना लेवै मंगी ॥ *(पन्ना ६९५)*

यही नहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी का भी एक ऐसा पद दर्ज है जिसमें भक्त कबीर जी प्रभु से खुशहाल जीवन जीने के लिए जरूरी सारी वस्तुएं मांग रहे हैं और कहते हैं, मुझसे भूखे रहकर तेरी भक्ति नहीं

होती। यह अपनी माला ले! ये चीजें मांग कर मैं कोई लोभ नहीं कर रहा :

भूखे भगति न कीजै ॥
यह माला अपनी लीजै ॥ . . .
दुइ सेर मांगउ चूना ॥
पाउ घीउ संगि लूना ॥
अध सेरु मांगउ दाले ॥
मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥
खाट मांगउ चउपाई ॥
सिरहाना अवर तुलाई ॥ . . .
मै नाही कीता लबो ॥
इकु नाउ तेरा मै फबो ॥ (पन्ना ६५६)

गृहस्थ जीवन की श्रेष्ठता

भारतीय दर्शन परंपरा में 'गृहस्थ' को हमेशा से दोयम दर्जे का प्राणी माना गया है परंतु गुरमति में गृहस्थ जीवन को सर्वोत्तम धर्म कहा गया है। आर्थिक उन्नति एवं स्तरीय जीवन जीने जैसे लक्ष्य गृहस्थ जीवन में रहकर ही प्राप्त किये जा सकते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा में सन्यास को निषिद्ध एवं गृहस्थ को श्रेष्ठ कहा गया है। श्री गुरु नानक देव जी राग आसा में स्पष्ट फरमान करते हैं कि योगी, पंडित, पांधे, ज्योतिषि आदि रोज ही इधर-उधर भटकते रहते हैं परंतु अकाल पुरख के तत्वसार को नहीं पहचानते। इन सबसे उत्तम गृहस्थी है जो अपनी सांसारिक जिम्मेदारियां पूरी करते हुए नाम, दान, भक्ति में दृढ़ रहता है:

जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥
गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥
पंडित पाधे जोइसी नित पढ़हि पुराणा ॥
अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रहमु लुकाणा ॥
इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥
आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥
इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥
बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥
इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥
नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥
गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥
नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥
(पन्ना ४१९)

मानवीय अधिकारों की बात

मानवीय अधिकार आधुनिक काल की एक अति महत्वपूर्ण अवधारणा हैं परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आश्चर्यजनक रूप से समस्त मानवीय अधिकारों को मनुष्य के लिए अनिवार्य मानने की व्यापक चर्चा की गई है। श्री गुरु नानक देव जी मानवीय अधिकारों के हनन को सबसे बड़ा पाप मानते हैं :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी प्रकार के मानवीय अधिकारों की रक्षा की बात और मनुष्य के लिए एक आदर्शतम जीवन जीने के लिए आवश्यक परिस्थितियां बनाने की बात श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान-स्थान पर की गई है।

सामाजिक अधिकार—भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ (पन्ना १४२७)
आर्थिक अधिकार—गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥
पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥ (पन्ना १९९)
धार्मिक अधिकार—कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ (पन्ना ८८५)
राजनीतिक अधिकार—राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥
चाकर नहदा पइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना १२८८)

नारी की श्रेष्ठता

गुरमति स्त्री-पुरुष में कोई अंतर नहीं करती। यहां स्त्री और पुरुष के अधिकार समान माने गये हैं। श्री गुरु नानक देव जी का आसा की वार में प्रसिद्ध कथन है कि जीवन के समस्त कार्य-व्यवहार का आधार है नारी, अत: नारी बुरी कैसे हो सकती है?

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

कहते हैं कि स्त्री के बिना कोई अस्तित्व कैसे उपज सकता है? सिर्फ अकाल पुरख ही इस दायरे से बाहर है :

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥
(पन्ना ४७३)

पूर्ववर्ती दर्शन-चिंतनों में नारी को सहज मनुष्य माना ही नहीं गया था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्त्री को स्वाभाविक सम्मान प्रदान करने की बात की गई है। यह नारी के उन दोनों रूपों से अलग है जहां उसे या तो देवी के पद पर बैठा दिया जाता है या फिर उसे नरक का द्वार बता दिया जाता है।

'नदरि' का सिद्धांत

गुरमति में मोक्ष की अवधारणा भी विलक्षण है। श्री गुरु नानक देव जी का कहना है-- *"जोरु न जुगती छुटै संसारु"* अर्थात् किसी भी प्रकार के यत्न करने से 'मोक्ष' नहीं पाया जा सकता। वास्तव में 'आवागमन' और 'मोक्ष' सभी अकाल पुरख की रजा से हो रहा है :

इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ *(पन्ना १)*

संसार में जो प्राणी जो-जो कार्य कर रहा है वह अकाल पुरख का हुक्म ही है :

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
(पन्ना १)

इसलिए जब अकाल पुरख की रजा होगी तब वह 'नदरि' (कृपा) करके प्राणी को मुक्ति दे देगा :

जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥
(पन्ना ११)

जब तक अकाल पुरख की 'नदरि' नहीं होती तब तक *"उतमु करमु नामि विचारु"* करते हुए 'नदरि' की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

व्यक्तिगत मुक्ति के साथ-साथ सामूहिक मुक्ति

अक्सर दार्शनिक अवधारणाओं में 'मुक्ति' का अर्थ 'व्यक्तिगत मुक्ति' ही है परंतु गुरमति, व्यक्तिगत मुक्ति के साथ-साथ सामूहिक मुक्ति की बात भी करती है। 'संगत', 'सरबत्त के भले' जैसी अवधारणाएं इसी उद्देश्य से प्रेरित हैं। हर मनुष्य से अपेक्षा की जाती है कि वह संपूर्ण मनुष्य बनकर समाज में विचरण करे और अन्य मनुष्यों की मुक्ति भाव कल्याण में सहयोग करे :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुछ नई सामाजिक एवं दार्शनिक अवधारणाएं प्राप्त होती हैं। इन नई चिंतन-धाराओं का भक्ति साहित्य विश्लेषण में समावेश निश्चित रूप से भक्ति-साहित्य के अनेक नवीन आयामों को उद्घाटित करेगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा मात्र एक दार्शनिक चिंतन या आध्यात्मिक विचार ही नहीं है बल्कि यह सहज-स्वाभाविक, संपूर्ण, खुशहाल जीवन जीने की युक्ति भी है।



सामाजिक जवाबदेही : सिख दर्शन का मूल मर्म

*-डॉ. हरनाम सिंघ**

सिख मत के उद्भव और बाद के सारे इतिहास के समग्र अनुशीलन, जिसमें सिख गुरुओं का जीवन, उनके दार्शनिक दृष्टिकोणों तथा विचार-शैलियों की विवेचनाओं, सिख परम्परा के सम्माननीय विद्वान विचारकों की व्याख्याओं, सूरमाओं, महावीरों के जीवन-आचारों का अवलोकन तथा कुर्बानियों और शहीदियों की विस्तृत श्रृंखला का अध्ययन आदि करने के पश्चात निश्चित और निःसंदेहपूर्वक कहा जा सकता है कि सिख विचारधारा या संप्रदाय समाज, जगत् को आध्यात्म के समतुल्य महत्व देने वाला एक सामाजिक दर्शन या पंथ है।

सिख गुरु साहिबान जगह-जगह उद्घोष करते, प्रेरित करते हुए सिखों से कहते हैं--इस जगत में निर्भयपूर्वक रहते हुए इसके व्यवहारिक, नैतिक मूल्यों से गहराईपूर्वक जुड़े रहो और उस परमात्मा को स्मृति में रखते हुए अटूट विश्वास रखो। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अलग-अलग स्वभाव के साधक-सिखों की भिन्न-भिन्न भाव-दशाओं, उनकी अनुभूति के अनेक रहस्यात्मक स्तरों, अन्तर्ज्ञानात्मक शक्तियों के प्रकटीकरण, यहां तक कि विभिन्न ऋतुओं में होने वाली मनोवैज्ञानिक प्रभाव की दशाओं या अनुभूतिजन्य मानसिक परिवर्तनों की प्रतीकात्मक व्याख्याओं द्वारा आध्यात्मिक साध्यों की प्राप्ति के वर्णनों पर आधारित प्रेम से पगे, भाव-विह्वल और विचलित कर देने वाले अंतहीन शब्दों का विशाल संग्रह प्राप्त होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्त जयदेव जी, भक्त नामदेव जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त परमानंद जी, भक्त सधना जी, भक्त बेणी जी, भक्त रामानंद जी, भक्त धन्ना जी, भक्त पीपा जी, भक्त सैण जी, भक्त रविदास जी, भक्त फरीद जी, भक्त भीखन जी, भक्त सूरदास जी और भक्त कबीर जी जैसे १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान और चार गुरसिखों की पावन बाणी को सम्मानीय स्थान देकर इसे सर्वसांझी एवं मानवतावादी धरोहर बना दिया।

सिख पंथ के विद्वान विचारक प्रो साहिब सिंघ ने भाई सत्ता जी, भाई बलवंड जी द्वारा रचित वारों, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं की टीका-भूमिका में उनके पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी से प्रथम मुलाकात का उल्लेख किया है कि "वे इस आशा से गोइंदवाल साहिब आए थे कि उन्हें किसी सन्यासी गुरु के दर्शन होंगे पर वे वहां गृहस्थ और आध्यात्म को साथ-साथ देखकर हैरान हो गए।" सिख पंथ के महान विद्वान भाई गुरदास जी, जिनकी रचनाओं को पंचम गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी को समझने की कुंजी कहा है, की वारों में राजा जनक की एक कथा का उल्लेख है कि किस प्रकार राजा जनक ने नर्क में दुख भोगती आत्माओं की कातर पुकार से द्रवित होकर उन्हें मुक्ति प्रदान करने के लिए करुणावश धर्मराज के समक्ष अपने जीवन की समस्त भक्ति का त्याग कर दिया था। यही अद्वितीय करुणा हमें श्री गुरु नानक देव जी की चारों दिशाओं में दूर-दूर तक की गई यात्राओं में दिखलाई पड़ती है। गुरु जी अपनी यात्राओं में सैकड़ों प्रकार के लोगों से मिले, विरोधियों से भी और प्रशंसकों से भी, चोरों, ठगों, और लुटेरों से भी, पंडितों, योगियों और तांत्रिकों से भी, शेखों, काजियों और मुल्लाओं से भी। सर्वज्ञ उनके मृदुल स्वभाव और सत्यशील

**विभागाध्यक्ष, दर्शन विभाग, दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)*

आचरण ने विजय पाई। कटुता कहीं नहीं आई, विरोध ने वैर का रूप कभी नहीं लिया। यह एक ऐसी सिद्धि है जिस पर सहज ही विश्वास करना कठिन है, पर है सत्य। उस काल की अवस्था का अध्ययन करने से ज्ञात हो जाता है कि हिन्दू धर्म के अनुयायियों ने अपने धर्म में निहित, मानव जाति के सार्वभौमिक स्वतंत्रता और उदारता के महान गुणों का दुरुपयोग करते हुए मिथ्याचारों एवं कुरीतियों को फैला रखा था। ऊंच-नीच तथा कर्मकांड आदि अनुष्ठान, उनकी स्वार्थ-सिद्धि में सहायक थे। सामान्य व सरल मनुष्य स्वयं को बंधा हुआ महसूस करता था। श्री गुरु नानक देव जी ने प्रेम और करुणा के निर्झर प्रवाह से उसे विभिन्न अंधविश्वासों और जंजालों से मुक्ति प्रदान की तथा कर्त्तव्य व दायित्व के ईमानदारीपूर्वक पालन पर बल दिया। उनका एक अद्भुत शब्द हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्राप्त होता है जिसमें वे 'अंजलि में पानी लेकर ली जाने वाली शपथ' जैसी क्रिया के मायने में विभिन्न कर्त्तव्यों को स्पष्ट करते हैं, जो इस प्रकार है :

नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥
सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥
ब्रहमण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥
राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥
(पन्ना १२४०)

श्री गुरु नानक देव जी समाज को ऐसा धर्म देना चाहते थे जो शोषण-मुक्त हो। वे ऐसे मानव की परिकल्पना करते थे जो अमृत वेले रात के आखिरी प्रहर उठकर परमात्मा का नाम-स्मरण करता हो और फिर वह दिन भर अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का पालन सतर्क और मानवीय होकर करता हो। हम कह सकते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी ने अज्ञान और अत्याचार को समय-समय पर दूर कर मनुष्य को सत्य और शुभ रास्ता दिखलाया। श्री गुरु नानक देव जी ऐसे महानायक हैं जिन्होंने एक इंकलाबी मशाल अपने हाथ में ले रखी है, जिसके प्रकाश से धर्म और समाज के असत्य और पाखंडी रूपों को जांचते हुए वे सरल और सहज मार्ग का निर्माण करते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी की स्पष्ट और साहसपूर्ण दृष्टि के परिणामस्वरूप निर्भय व निडर घटक उनसे जुड़ते चले गए। उन्होंने अपनी इस विचार-क्रान्ति को लगातार जारी रखने के लिए गुरु-शिष्य परम्परा को प्रारंभ किया और अनेक परीक्षाएं लेते हुए भाई लहणा जी को इसके योग्य पाया। यहां यह बेहद उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण है कि अपने उत्तराधिकार रूपी गुरगद्दी की पदवी उन्होंने अपने पुत्र श्रीचंद को नहीं दी। दरअसल उनके पुत्र बाबा श्रीचंद एक वैराग्यवादी साधक थे। यही घटना स्पष्ट कर देती है कि श्री गुरु नानक देव जी अपनी विचारधारा में ऐसे लोगों को नहीं देखना चाहते थे जो वैरागी जगत् छोड़कर स्वसाधना को महत्व देते हों वरन् वे सकारात्मक गृहस्थ को आगे बढ़ाते हैं। सिख मत के बाद के सभी गुरु साहिबान ने इसी सकारात्मक जीवन-शैली पर ही बल दिया।

द्वितीय गुरु श्री गुरु अंगद देव जी के संबंध में प्रिंसीपल सतबीर सिंघ जी लिखते हैं कि "अब तक तो योगियों, सन्यासियों ने शरीर को कष्ट देने वाली साधनाओं पर जोर दिया था पर गुरु जी ने शरीर को मजबूत बनाने पर जोर दिया। यदि शरीर रूपी घोड़ा बलवान न हो तो इसे कई बीमारियां लग सकती हैं। इस विचार को ध्यान में रखते हुए श्री गुरु अंगद देव जी ने खडूर साहिब में एक अखाड़ा बनवाया, जहां वे रोज कुश्तियां करवाते, दांव-पेच देखते थे और खेलने वालों को प्रोत्साहित किया करते थे।" हम समझ सकते हैं कि श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की सोच के उस मूल मर्म, भावना को जान लिया था। उन्होंने पंजाबी (गुरमुखी) भाषा का भी, सरलतापूर्वक संप्रेषण करने के लिए "बालबोध" की रचना की।

तृतीय गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने संगत (सामूहिक आराधना) और पंगत या लंगर (सभी जाति के लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना) को दृढ़ किया। उन्होंने पर्दा-प्रथा और सती-प्रथा का भी विरोध किया।

चतुर्थ गुरु श्री गुरु रामदास जी ने 'चक्क रामदास' नामक नगर बसाया तथा एक पवित्र अमृत सरोवर बनवाया। यह नगर इस सोरवर के नाम पर 'अमृतसर' के नाम से विख्यात हुआ।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इसी नगर में अमृत-सरोवर के बीचो-बीच श्री हरिमंदर साहिब की नींव मुस्लिम सूफी फकीर साईं मियां मीर से रखवाकर, एक ऐसे आध्यात्मिक केन्द्र की स्थापना को प्रारंभ किया जिससे देश-परदेस के किसी भी कोने में रहने वाला सिख, ऊर्जा और शक्ति प्राप्त कर, एक संगठन और जुड़ाव की अनुभूति को प्राप्त करता था। पंचम गुरु का जीवन अद्‌भुत था। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को संपादित ही नहीं किया, उसे प्रतिष्ठा देते हुये श्री हरिमंदर साहिब में प्रतिष्ठित भी किया। अन्य गुरुओं की तरह सामाजिक सेवा के रूप में पानी के कुंएं एवं बावलियां खुदवाईं, कोढ़ीखानों, दीवानखानों का निर्माण करवाया, लेकिन उनके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कर्म यदि देखा जाए तो कहा जा सकता है कि श्री गुरु नानक देव जी के आदर्शों पर चलते हुए, सामाजिक अन्याय के विरुद्ध वे कौम के प्रथम बलिदानी पुरुष बन गए। उन्होंने अपनी शहादत देकर यह संदेश दिया कि सिख मत कोरा आध्यात्मिक उपदेशों का मानसिक मंथन मात्र नहीं है। उन्होंने धर्म सम्बंधी प्रतिबद्धता हेतु शहीद होने वालों का मार्ग खोलकर, सिख मत का परिचय चारों दिशाओं में लहरा दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सिख पंथ के न्यायपूर्ण राजसी रूप का व्यक्त और मूर्त प्रस्फुटन हो गया।

षष्ठम गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने सिखों के पहले किले लोहगढ़ का निर्माण करवाया तथा फौजी ताकत को स्थूल रूप दिया और सर्वोच्य न्यायप्रियता हेतु श्री अकाल तख्त साहिब को भी निर्मित किया। षष्ठम गुरु स्वयं दो तलवारों का धारण करते थे, जो इस विचार का प्रतीक थीं कि सिख सदैव स्मरण रखें कि उनका कर्त्तव्य जहां आध्यात्मिक उत्थान को न भूलना है वहीं उसके लिए राजनीतिक उत्तरदायित्व भी उतना ही महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने आध्यात्म और संसार के सुंदर समन्वित रूप को गुंफित किया था।

इस प्रकार इन गुरुओं का जीवन-दर्शन कहीं भी, किन्हीं भी परिस्थितियों में समाज के प्रति जवाबदेही जिम्मेदारी से हटा नहीं था। सिख संप्रदाय या पंथ की मूल विशेषता या निशानी यही सामाजिक प्रतिबद्धात्मक स्वरूप ही है। सिख स्वभाव को समझने का प्रयास किया जाए तो बिल्कुल स्पष्ट है कि प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी से लेकर दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक सब गुरु साहिबान द्वारा मानव-मानव के भेद की गैर-इंसानी जात-पात की सोच के विरुद्ध संघर्ष किया गया और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो एक ही खंडे-बाटे से सभी जाति के लोगों को अमृत छका कर, इस कुरीति को खत्म करने का समाधान निकाला। इसके अलावा सिख मत में लंगर का प्रत्यय इसके सामाजिक आचार के उदारवादी स्वरूप का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। वहीं, सभी भक्त साहिबान की बाणियों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान देकर सम्मानित करते हुए सिख मत अपने वैचारिक स्वरूप में भी स्वतंत्रता और उदारता का परिचय देता है। अत: सिख पंथ सामाजिक स्वरूप में एक सहज और जागरूक क्रांतिकारी विचारधारा है जो अपने आचार और विचार, दोनों में सहृदय और मानवीय है।

सिख मत के सामाजिक स्वरूप और प्रतिबद्धता का सबल उदाहरण श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का युद्ध-दर्शन भी है। सबसे पहले तो उन्होंने 'बचित्र नाटक' में अपने जन्म लेने के उद्‌देश्य को स्पष्ट

किया है। वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वे लिखते हैं:
या ही काज धरा हम जनमं।
समझ लेहु साधू सभ मन मं ॥
धरम चलावन संत उबारन।
दुसट सभन को मूल उपारन ॥४३॥

नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की शहादत के बाद युवा-गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के मन में यह विचार स्पष्टतया से बैठ गया कि सांप्रदायिक और अन्यायपूर्ण राजनैतिक नीतियों व सामाजिक विषमता को दूर करने हेतु इस समय-पद्धति को समयानुसार आकार देना पड़ेगा और उन्होंने सिखों को बतलाया कि :
या कल मै सभ काल क्रिपान के भारी भुजान को भारी भरोसो ॥९२॥१॥ (बचित्र नाटक, पा: १०)

इस कलयुग में कृपाण रूपी काल और भारी भुजाओं का ही अधिक से अधिक भरोसा किया जा सकता है। उन्होंने विशाल अनंदपुर किले का निर्माण करवाया जहां सिख घुड़सवारी व शस्त्र-सज्जित होकर अभ्यास करते थे। छोटी-छोटी घटनाओं के प्रयोग से पता चलता है कि वे अपने लक्ष्य के प्रति कितने गंभीर थे। उन्होंने एक बड़ा मजबूत नगाड़ा बनवाया जिसका नाम "रणजीत नगाड़ा" रखा और जिसकी समय-समय पर गगनभेदी और बुलन्द आवाज से सिखों का उत्साहवर्धन होता था। उनके द्वारा सिखों को अमृत-पान तथा खालसा सजाते समय एक प्रण करना पड़ता था जिसके अनुसार प्रत्येक सिख अपने अंदर की कुछ रूढ़ मान्यताओं को नष्ट करने की घोषणा करता था। ये भी धर्मनाश (वर्णाश्रम से मुक्ति), कर्मनाश (कर्मकांडों से मुक्ति), भरम (भ्रम) नाश (अंधविश्वासों से मुक्ति), कुल नाश (उच्च कुल या वर्ण में जन्म लेने की भावना से मुक्ति), कृतनाश (दीन समझे जाने वाले कामों से मुक्ति)।" उनके दरबार में ५२ कवि विद्वानों को सम्मान प्राप्त था। वे साहित्य-सृजन करते, विचार-विमर्श करते और सिख उनकी रचनाओं से प्रेरणा व उत्साह प्राप्त करते थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं महान कवि और विचारक थे। उनका सिख, मुख में परमात्मा का नाम और हाथ में किप्राण रखता था।

सिख का यही रूप उन्हें प्रिय था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा बतलाए गए परमात्मा के लक्षणों से "निरभउ निरवैर" को समक्ष रखकर सिख को भय से परे, वैर से दूर, निर्भीक एवं निर्मल रूप प्रदान कर दिया। उन्होंने अन्याय के विरुद्ध श्री गुरु नानक देव जी की यात्राओं में रबाबमयी अमृत-कीर्तन, जो पाखंड और आडंबर के पर्दाफाश का साधन बनता था, उसको नगाड़ा, तलवार, ढाल और समर क्षेत्र प्रदान कर पद्धति को समयानुसार परिष्कृत किया। उनका युद्ध-दर्शन तत्कालीन समीचित समाधान था। मनुष्यता की रक्षा हेतु युद्ध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने माता-पिता, चारों साहिबजादों तथा स्वयं को कुर्बान कर दिया। इस प्रकार सिख मत का सामाजिक स्वरूप चढ़ते हुए सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश की तरह चकाचौंध करता हुआ सुस्पष्ट है।

सहायक पुस्तकें :
१. श्री नरहर रामचंद्र परांजपे, रामकृष्ण लीलामृत (सप्तम संस्करण)।
२. प्रो साहिब सिंघ, सत्ते बलवंडे दी वार (सटीक, पंजाबी)।
३. श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी, सिख गुरुओं का पुण्य स्मरण।
४. प्रिंसीपल सतबीर सिंघ, साडा इतिहास, दस पातशाहीआं, भाग-१ (पंजाबी)
५. डॉ महीप सिंघ के लेख 'पूरी कौम को योद्धा बनाने का दर्शन', दैनिक भास्कर, ५ जनवरी २००४





श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विलक्षणता, सार्वभौमिकता और सर्वकालिता

*-स. गुरबख्श सिंघ 'प्यासा'**

गुजराती समाचार-पत्र 'दैनिक संदेश' में प्रकाशित एक आलेख में उसके लेखक द्वारा सभी धर्मग्रंथों की प्रासंगिकता के बारे में जो आपत्ति प्रकट की गई, 'गुरमति ज्ञान' के लिए लिखने वाले स. गुरबख्श सिंघ प्यासा ने उसका प्रतिकर्म पत्रिका के संपादक को एक विस्तृत लेख पत्र लिखकर प्रकट किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की प्रासंगिकता जैसे महत्वपूर्ण विषय के साथ संबंधित होने के कारण इस पत्र के कुछ अंश 'गुरमति ज्ञान' के पाठकों की जानकारी हेतु प्रकाशित कर रहे हैं। —संपादक।

मेरी यह मान्यता है कि विचारों में भिन्नता, विरोधता की प्रतीक नहीं होती और अपेक्षा है कि मेरे पत्र में व्यक्त विचारों को उसी रूप में लिया जाएगा।

यह बात गुजरात के 'दैनिक संदेश' समाचार पत्र दिनांक १२-०८-०७ के 'संस्कार' में छपे लेख '. . . संबंधों ना समीकरण' (रचनाकार श्री काजल ओझा वैध) के बारे में है।

अन्य धर्मों की धर्म-पुस्तकों के साथ सिखों के धर्म-ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब का भी जिक्र किया गया है कि समय के साथ धर्म-पुस्तकें अप्रासंगिक हो जाती हैं, यथार्थ से परे है। ऐसा आभास होता है कि सिखों के धर्म-ग्रंथ के बारे में रचनाकार के ज्ञान का स्रोत सुनी-सुनाई बातों पर आधारित है।

यह मैं इसलिए नहीं कह रहा हूं कि मैं सिख धर्म को मानने वाला हूं और अंध-श्रद्धावश कह रहा हूं बल्कि इस तथ्य को संसार भर के सत्य के शोधार्थियों ने मानते हुए मुक्त कंठ से इस ग्रंथ की विलक्षणता, सार्वभौमिकता और सर्वकालिता को स्वीकार किया है कि यह ग्रंथ सर्व मानवता का कल्याण करने वाला सर्वसांझा ग्रंथ है।

इनमें जहां श्री विनोबा जी जैसे चिंतक हैं तो डॉ. राधा कृष्णन जी जैसे फिलास्फर भी, टी. एल. वासवानी जी जैसे साधू भी, दण्डी स्वामी जी जैसे साधक भी, ए. टायनबी जैसे इतिहासकार भी, पर्ल एस. बक जैसे नोबल पुरुस्कार विजेता भी, डॉ. एन. मुत्थु मोहन, ब्रॉडशा, ग्रीनलीज एवं एम. ए. मैकालिफ जैसे अनेकों देश-विदेश के लेखकों ने इसे 'सर्वकालिक-रहबर' के रूप में स्वीकारते हुए अपने श्रद्धा-सुमन भेंट किए हैं।

१४३० पन्नों के बड़े आकार के इस धर्म-ग्रंथ में जहां ६ सिख गुरुओं की बाणी है वहां अन्य ३० महापुरुषों की बाणी भी अंकित है जिनका चयन जाति, बोली, धर्म, वर्ग के आधार पर न होकर विचारों की समता के आधार पर किया गया है।

जहां भक्त जयदेव जी ब्राह्मण थे तो ६ सिख गुरु साहिबान, भक्त त्रिलोचन जी वैश्य और भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त रविदास जी, भक्त सधना जी, भक्त सैन जी कथित शूद्र जाति से थे एवं शेख फरीद जी सूफी संत थे।

यह संसार का एक मात्र धर्म-ग्रंथ है जिसमें उस धर्म के संस्थापकों के अतिरिक्त अन्य

२२, प्रभु पार्क सोसायटी, ओल्ड छानी रोड, वडोदरा-२

धर्मों के संतों, भक्तों की बाणी शामिल की गयी है और उनकी बाणी को भी शब्द-गुरु का दर्जा दिया गया है एवं इसकी अधिकांश बाणी (३१) रागों में रागबद्ध है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपूर्ण बाणी में सत्य की व्याख्या है क्योंकि मनुष्य का परम लक्ष्य निराकार के सत्य-स्वरूप के अनुरूप सत्याचारी होना है।

क्योंकि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का धर्म गृहस्थियों का धर्म है इसलिए सन्यास आदि को पलायन की संज्ञा दी गयी है। ईश्वर एक है और उसी ने इस सृष्टि की रचना की है। वह ही सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। प्रभु के सुमिरन और निर्मल कर्म पर बल दिया है। एक ही पिता की संतान होने के कारण हम सब समान हैं। इसलिए हम सबका कर्त्तव्य है कि मानवता के कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहें।

इसका उपदेश *"खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा ॥"* के अनुसार सबके लिए सांझा है क्योंकि यह *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* का सूत्र देती है और सृष्टिकर्ता के एक मात्र होने को दृढ़ करवाने के लिए ईश्वर और अल्लाह को एक ही दर्शाती है :

कहु नानक गुरि खोए भरम ॥
एको अलहु पारब्रहम ॥ *(पन्ना ८९७)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब (ब्राह्मण) हिन्दू को सच्चा हिन्दू और मुसलमान को सच्चा मुसलमान बनने का उपदेश देते हैं:

सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥ . . .
दानसबंदु सोई दिलि धोवै ॥
मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥ *(पन्ना ६६२)*

वे तो सबको अपना मीत बनाने को कहते हैं:

ना को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)

जहां सब के प्रति प्रेम होगा, वहां ईर्ष्या, द्वेष, शत्रुता कैसे टिक पायेगी?

कथनी नहीं, करनी अर्थात अमलों पर जोर दिया गया है। सच और हक की किरत करते हुए बांट कर खाने पर बल दिया है क्योंकि पराये हक को गाय और सूअर खाने के बराबर कहा गया है :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

और जो मुरदार नहीं खाते, उन्हीं की गुरु, पीर हामी भरते हैं। सत्य और सत्याचार को इस प्रकार शब्दबद्ध किया गया है :

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
(पन्ना ६२)

और यह सीख हम सब को किस ओर इंगत करती है:

—जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ . . . ॥
(पन्ना ५६६)
—बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥
(पन्ना ४८८)
—मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥ *(पन्ना ४७४)*

द्वारा शुभ गुणों को धारण करके सदाचारी बनने को प्रेरती है। जब प्रार्थना के लिए हाथ उठें तो सबके मंगल की कामना अर्थात सबके भले की अरदास हो :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ (पन्ना ८५३)

अर्थात हे प्रभु! इस जलते हुए संसार को अपनी कृपा द्वारा उबार ले।

विलक्षणता इसमें यह भी है कि उन (३६) महान विभूतियों ने (जो ईश्वर से तदारूप हो चुके थे) एक ही स्वर में गाया है जबकि वे भारत के अलग-अलग स्थानों के रहने वाले थे और समकालीन न होकर उनका जीवन-काल १२वीं शताब्दी से १७वीं शताब्दी के बीच फैला

हुआ है। इस आश्चर्यजनक सत्य के पीछे 'एक' ही अवधारणा थी कि यह संसार बागीचा है और सृष्टि-कर्ता उसका माली है। इसलिए नि:स्वार्थ लोक-सेवा ही उसकी पूजा है। धर्म, जाति एवं लिंग-भेद के आधार पर निर्मित भेदभाव मानवता के नाम पर कलंक हैं।

उत्तम व्यक्ति ही उत्तम समाज की इकाई है। ऐसे जीवन पर धिक्कार है जिसमें मनुष्य को अपनी आबरू खोनी पड़े। इसलिए 'न डरो और न डराओ' अर्थात 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांत को अपनाने की सीख दी। यदि अन्याय का प्रतिरोध करते हुए अपनी जान भी न्यौछावर करनी पड़े तो तत्पर रहें। 'समस्त संसार एक परिवार' की भावना ही सर्वोपरि रहे। *'आपि तरहि सगले कुल तारे'* का आदर्श ही इसे सारभौमिक एवं सार्वकालिक मानने की अवधारणा को पुष्ट करता है।

अंत में मैं मान्य रचनाकार से विनम्र निवेदन करता हूं कि यदि उन्हें श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कोई ऐसा प्रसंग दिखाई दिया हो, जो समय के साथ अप्रासंगिक प्रतीत होता हो तो इस अल्पज्ञ जीव को कृप्या अवगत कराने की कृपा करें जिससे मेरे ज्ञान में वृद्धि हो सके।



कविताएं

प्रदूषण

खा-पी जिसका अन्न-जल, हुए मनुज तुम पुष्ट।
क्यों उस धात्री धरा पर, हुए अकारण रुष्ट?
घाव बनाते धरा के, उर पर कर विस्फोट।
प्राणिवर्ग व स्वयं के, यह अस्तित्व पर चोट।
करें वायु-ध्वनि-प्रदूषण, ये कल-वाहन-यंत्र।
उलट दिया विज्ञान ने, सहज प्रकृति का तंत्र।
लील रहा है शान्ति को, कान फोड़ता शोर।
समर-साधनों के दनुज, करें भयंकर रोर।
खाद्य वस्तु, जल मृदा को, कीट-विनाशक-खाद।
यंत्र-अस्म ध्वनि-वायु को, करते हैं बर्बाद।
सोन सुनहरे समय में, सुरभित हुए दिगन्त।
वायु-प्रदूषण लीलता, उनको आज दुरन्त।
सर-जल दूषित सरित्-जल, भू-जल सागर-नीर।
मृदा प्रदूषित गगन भी, दूषित हुआ समीर।
हुए प्रदूषित मनुज-मन, सहसा रुका विकास।
प्रेम त्याग पाली घृणा, सृजन त्यागकर नाश।
ओजोन पर्त में प्रदूषण, सतत बढ़ाता छेद।
कब समझेगा मूढ़ मनुज, सर्वनाश का भेद?
कलम लिए विज्ञान की, आज मनुज मति मन्द।
प्रदूषण-मसि से लिखे, सर्वनाश के छंद।

वृक्ष

छाया पत्ते फूल फल, प्राण वायु-संचार।
औषधि-वर्षा-काष्ठ-पट, तरु देते उपहार।
जिन पर नीड़ बना विहग, करते मधुरालाप।
सुनकर जिनको शान्त हो, जाता मन का ताप।
चिंतकों ने जिनके तले, चिंतन किया अपार।
उस चिंतन से लाभ ले, जग ने किया सुधार।
गुरु नानक ने जगत् को, दिए वृक्ष-तले उपदेश।
दिए शेख फरीद ने, अकाल पुरख-संदेश।
देते छाया ग्रीष्म में, शीतल-मन्द बयार।
घन इनके संस्पर्श से, बरसाते जलधार।
वृक्षावलि के सिंहासन पर, हुआ आरूढ़ वसन्त।
श्री-सौरभ-समृद्धि से, पूरित करे दिगन्त।
मृदा-क्षरण को रोकते, ये उपकारी वृक्ष।
बदले में कुछ लें नहीं, सदा दान में दक्ष।
काट वृक्ष हम प्रकृति की, सूनी करते गोद।
सर्वनाश को न्योतकर, मना रहे हैं मोद।
पदच्युत कर ऋतुराज को, प्रकृति-द्वेष ने आज।
भीष्म ग्रीष्म के शीश पर, रखा स्वयं ही ताज।



-डॉ. दादूराम शर्मा 'कोविद', प्राध्यापक, महाराज बाग, भैरोगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

गुरू मानीओ ग्रंथ

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी जगत-कल्याण के लिए प्रकट हुए। शब्द-गुरु, श्री गुरु ग्रंथ साहिब को "गुरुआई" तो चाहे दसवें जामे में १७०८ ई. में जाकर प्राप्त हुई, पर जागति-ज्योति का प्रारंभ तो श्री गुरु नानक देव जी से ही हो गया था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपादना, संपूर्णता तथा गुरु-पद की प्राप्ति तक का लंबा इतिहास है। श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी इलाही बाणी को संभाल कर रखा। भक्तों की बाणी एकत्र करने हेतु, उनको दूर-दूर स्थानों पर जाना पड़ा। जंगलों, पहाड़ों और अति कठिन रास्तों से गुजर कर आप जी ने आम लोगों तक अकाल पुरख का संदेश पहुंचाया और साथ ही भक्तों की बाणी को भी अपने पास ले लिया और उसको सुरिक्षत रखा। मक्के-मदीने की उदासी के दौरान भी गुरु जी के पास पोथी मौजूद थी। इसका प्रमाण भाई गुरदास जी की वारों में उपलब्ध है:

पुछनि फोलि किताब नो हिंदू वडा कि मुसलमानोई?
बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई। *(वार १:३३)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी के ९७४ शब्द हैं जो विभिन्न १९ रागों में अंकित हैं। श्री गुरु अंगद देव जी को गुरुता-गद्दी की दात देने के समय श्री गुरु नानक देव जी ने यह गुरबाणी की पोथियां भी उन्हीं को दे दी थीं। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी बाणी, श्री गुरु अमरदास जी को और इसी प्रकार श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु रामदास जी को सम्पूर्ण बाणी सौंप दी थी। गुरबाणी की कुछ पोथियां श्री गुरु अरजन देव जी ने बाबा मोहन जी से प्राप्त कीं। श्री गुरु अरजन देव जी ने छः गुरु साहिबान, पंद्रह भक्तों, ग्यारह भट्टों और चार गुरसिखों की बाणी को विभिन्न रागों के अनुसार क्रमबद्ध किया।

आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की तैयारी के उपरांत श्री गुरु अरजन देव जी ने इसे बाबा बुड्ढा जी के सिर पर रखवा कर, आप पीछे-पीछे चंवर करते हुए, सिख-संगतों के साथ मंगलमयी शब्द-गायन करते हुए श्री हरिमंदर साहिब में लाकर प्रकाश किया।

श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई मनी सिंघ जी से अंकित करवाई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ज्योति-जोति समाने से पहले ६ कार्तिक सं. १७६५ को श्री अबिचलनगर साहिब नांदेड़ (महाराष्ट्र) में आदि श्री ग्रंथ साहिब को गुरुता-गद्दी बख्श कर समूह सिख जगत को हुक्म किया:

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सभ सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ।
(पंथ पकाश, कृत ज्ञानी ज्ञान सिंघ, पन्ना ३५३)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हुक्म किया, "जिसने दस गुरु साहिबान के दर्शन करने हों, वो मन-चित्त एकाग्र करके, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी पढ़े, सुने और उसकी विचार करे। गुरु जी ने उपदेश किया:

जो मम साथ चाहे कर बात।
ग्रंथ जी पढ़े सुणे बिचारे साथ ॥१८॥

(शेष पृष्ठ ५२ पर)

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केन्द्र, गुरदासपुर-१४३५२१ (पंजाब)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

*-बीबी राजिंदरपाल कौर**

श्री गुरु अरजन देव जी महाराज ने समस्त मानवता के लिए कल्याणकारी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रथम प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में करने हेतु गुरुद्वारा रामसर साहिब से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र आदि बीड़ को श्री हरिमंदर साहिब की तरफ ले जाया जा रहा था। लगभग एक सौ सिख नंगे पांव 'सति नामु-वाहिगुरु' का जाप करते हुए जा रहे थे। बाबा बुड्ढा जी के शीश पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब महाराज जी की बीड़ थी। पूर्ण प्यार, सत्कार, श्रद्धा, नम्रता, भरोसे व प्रीति सहित श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को सत्कार-स्वरूप सुंदर पीढ़े पर सुशोभित करके प्रकाश किया गया, सुंदर कीमती रुमाले सजाए गए। सिखों सहित पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी भी श्री हरिमंदर साहिब जी के सम्मुख एक-मन व एक-चित्त होकर बैठ गये। बाबा बुड्ढा जी को हुक्मनामा लेने के लिए कहा गया। उस समय यह पवित्र ईश्वरीय हुक्मनामा आया:

संता के कारजि आपि खलोइआ
हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥
धरति सुहावी तालु सुहावा
विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥ . . . (पन्ना ७८३)

श्री गुरु रामदास जी ने अमृतसर में अमृत सरोवर बनाया, इस कारण ही इस नगर का नाम अमृतसर हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी ने सरोवर के बीच में श्री हरिमंदर साहिब बनवाया। श्री हरिमंदर साहिब के अंदर ही श्री आदि ग्रंथ साहिब जी का पहला प्रकाश किया गया। श्री हरिमंदर साहिब समस्त मानवता के लिए प्रेम, भक्ति व सेवा-भाव का पवित्र स्थान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब छः गुरुओं व अनेक संतों-भक्तों का अनुभव व प्रकाश-ज्ञान का संगम है। इसके अंदर कोई जातीय भेदभाव नहीं है।

गुरु साहिबान के साथ ही भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त रविदास जी, भक्त भीखन जी आदि भक्त साहिबान को बराबर मान व सत्कार दिया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब संगीत, काव्य व अनेक भाषाओं का भण्डार होने का मान भी रखते हैं। इसके अंदर भक्ति-ज्ञान व वैराग्य का अथाह सागर भरा है। जीवन की अनेक गहराइयों का इसमें बखान किया गया है। जुल्म के खिलाफ रोष भी प्रकट किया गया है। कई ऐतिहासिक घटनाओं का प्रमाण भी इसमें समाया हुआ है। भाई संतोख सिंघ जी ने 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'अमृत की नदी' कहकर इसकी बढ़ाई की है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी को गुरु साहिब ने अपने आप अंकित किया है तथा श्री गुरु अरजन देव जी ने इसको पावन बीड़ का रूप दिया। इसके अंदर नाम की महिमा है, सच्चाई को नेकी के साथ जोड़ा गया है तथा बुरे कर्मों व वाशनाओं से रोका गया है।

गुरु साहिब ने समस्त मतों का अध्ययन किया, इसलिए उन्होंने कई मतों के सिद्धांतों का बयान किया है, निर्णयात्मक आलोचना भी की है। गुरबाणी में कठिन तपस्या तथा हठ-योग की जगह सहज-भक्ति व कर्म-योग की प्रधानता है।

तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी को उस समय के पंडितों ने पूछा कि वेद-शास्त्र, पुराण, अंजील तथा कुरान आदि के होते हुए श्री गुरु

**८८९, फेस १०, मोहाली-१६००६२*

ग्रंथ साहिब अर्थात गुरबाणी-बीड़ के रूप में तैयार करने की जरूरत क्यों है? इसका उत्तर श्री गुरु अमरदास जी ने इस प्रकार दिया:

जैसी धरती ऊपरि मेघुला बरसतु है
किआ धरती मधे पाणी नाही ॥
जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ
बिनु पगा वरसत फिराही ॥ (पन्ना १६२)

जैसे कि धरती पर मेघ बरसता है तो समस्त वनस्पति को हरा-भरा कर देता है। क्या धरती में पानी नहीं है? धरती में पानी है। उसके इर्द-गिर्द भी समुद्र का पानी है, परन्तु धरती का पानी प्राप्त करने के लिए कुआं खोदने पर फिर कुएं से पानी निकालने के लिए कोशिश करनी पड़ती है। इसी प्रकार संसार से काशी के संस्कृत भाषा में रचे वेद, उपनिषद, गीता, इस्राइली व अरबी में बाईबल तथा कुरान का अध्ययन एवं ज्ञान प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की महानता इस कारण नहीं कि वह सिखों का धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि इस महानता का बड़ा कारण यह है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंदर सर्वहित के लिए व्यवस्था है, जिसमें एकता के सिद्धांत के ऊपर मानव एकता का सुंदर महल जिस रंग में उभरता है वह मानव की सभ्यता के इतिहास में एक नया नींव-पत्थर है। जहां तक इस रुहानी संदेश का संबंध है वह नि:स्वार्थी व वैज्ञानिक है। इसलिए इसको सारे विश्व का कल्याणकारी तथा पूजनीय धर्म-ग्रंथ कहा जा सकता है। इसमें बिना किसी धर्म, जाति, भाषा, रंग, मजहब, सामाजिक भेदभाव या क्षेत्रीय असंतुलन के समस्त भारत की आध्यात्यिक आत्मा गूंज उठी है। भक्ति लहर में सर्गुणवाद की दो धाराएं थीं, परन्तु सतिगुरु जी ने दोनों का संगम रचा तथा कुदरत में व्यापक सर्गुण रूप तथा प्रभु के निर्गुण रूप की व्याख्या अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक रूप में की गई है। यह कुदरत व कादर की एकता का दर्शन है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का आध्यात्मिक शास्त्र एकतावादी व समाज-शास्त्र मानवतावादी है, जो समस्त विश्ववासियों का सुंदर आधार बनने की भली-भांति सामर्थ्य रखता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंदर आध्यात्मिक मार्ग को वैज्ञानिक ढंग से पेश किया गया है। विशेष रूप से पुराने धार्मिक ग्रंथों में काफी बड़े स्तर पर कई प्रकार के कर्मकाण्ड, वहम, भ्रम, मिथ्या व काल्पनिक कहानियों से काम लिया गया है, इसलिए नई पीढ़ी उनसे संतुष्ट नहीं, परन्तु श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सिद्धांत तर्क की कसौटी पर पूरा उतरने वाला है। कोई भी गैर-अनुभवी बात नहीं है। इस बात का स्पष्टीकरण भी इस प्रकार दिया गया है:

सुणि मुंधे हरणाखीए गूड़ा वैणु अपारु ॥
पहिला वसतु सिञाणि कै तां कीचै वापारु ॥
(पन्ना १४१०)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब केवल परलोक की अगवाई के लिए नहीं बल्कि इस लोक को संवारने एवं सुधारने तथा सामाजिक रूप से जीवन को ऊंचा करने के लिए भी उतना ही यत्नशील है जितना कि मुक्ति के लिए, क्योंकि गुरु साहिब कर्मयोगी जीवन के समर्थक रहे हैं, इसलिए संसारी पक्ष को आंखों से ओझल नहीं किया गया। महाबली सरबंसदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप को सन्मुख रखते हुए फरमाया:

पूजा अकाल की, परचा शब्द का, दीदार खालसे का।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरतागद्दी बख्शी व आदेश दिया:

आगिआ भई अकाल की, तबै चलायो पंथ।
सभ सिक्खन को हुकम है, गुरू मानीओ ग्रंथ।
(पंथ प्रकाश कृत ज्ञानी ज्ञान सिंघ)



सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान

*-डॉ. जसविंदर कौर**

सिख धर्म दुनिया के समस्त धर्मों में से नवीनतम और आधुनिकतम है। यह नवीन इसलिये है क्योंकि इसका जन्म लगभग पांच सदियों के आस-पास हुआ है और आधुनिक कहे जाने का कारण यह है कि इस अद्वितीय ग्रंथ में इस नये युग की समस्याओं और उनके समाधान की विधियों की चर्चा की गई है। आधुनिक समय की आवश्यकता है कि ऐसे समाज की संरचना की जाये जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिये हर वर्ग योगदान डाल सके। आधुनिक समय में सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक मूल्यों, व्यक्तियों और समाज के हितों में संतुलन रखना भी अति आवश्यक है। सिख धर्म के प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी ने इन्हीं मूल्यों और उनके संतुलन को ध्यान में रखते हुए, बिना धर्म, जाति, वर्ग, वर्ण और लिंग के भेद के, समस्त मानव समाज को संबोधित करते हुए ऐसी विचारधारा पेश की जो मात्र सैद्धांतिक ही नहीं व्यवहारिक स्तर से भी उपयोगी थी। श्री गुरु नानक देव जी के इसी संदेश को उनके उत्तराधिकारी गुरु साहिबान और सिख धर्म के अन्य महानुभवों ने प्रसारित और प्रफुल्लित करने का हर यत्न किया।

श्री गुरु नानक देव जी के समय के समाज में औरत को नीचों से भी नीच माना जाता था। उस समय योग मत का बोलबाला था। उनके गुरु गोरखनाथ तो औरत को 'बाघिनी' तक कहते थे और यह मानते थे कि वह त्रिलोकी को खा रही है। इसीलिये योगी गृहस्थ धर्म का त्याग करके जंगलों और पहाड़ों में रहना पसंद करते थे। श्री गुरु नानक देव जी की प्रसिद्ध बाणी 'सिध गोसटि' में चर्चा है कि जब श्री गुरु नानक देव जी ने योगियों से पूछा कि *'किसु कारणि ग्रिहु तजिओ उदासी'* तो योगियों ने इसका उत्तर दिया कि *'गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥'* इसके विपरित श्री गुरु नानक देव जी ने गृहस्थ जीवन को पवित्र बताते हुए कहा:

सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥
पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ (पन्ना ६६१)

श्री गुरु नानक देव जी ने नाथों और योगियों को समझाया कि अगर आप गृहस्थ और औरत को इतना बुरा मानते हो तो फिर गृहस्थियों के घर मांगने क्यों जाते हो? योगियों के मात्र कहे जाते ब्रह्मचर्य पर व्यंग्य करते हुए गुरु जी ने कहा:

हाथ कमंडलु कापड़ीआ मनि त्रिसना उपजी भारी ॥
इसत्री तजि करि कामि विआपिआ चितु लाइआ पर नारी ॥ पन्ना १०१३)

श्री गुरु नानक देव जी ने नारी के कामिनी रूप की बजाये उसके अर्धांगिनी रूप की महत्ता का वर्णन किया। गुरमति और गृहस्थ जीवन में रह कर नेक कमाई करनी, बांट कर खाना, संसार के कार्य-व्यवहारों को अच्छी तरह से करते हुए हर समय अपने स्वामी को याद रखना ही उत्तम इंसान के गुण हैं।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी 'आसा की वार' में नारी के समाज में महत्वपूर्ण स्थान की चर्चा करते हुए कहा गया है कि वह नारी ही है जिससे पुरुष पैदा होते हैं। नारी के गर्भ में ही पुरुष की सृजना होती है, उससे ही मंगनी और शादी होती है, उससे ही मित्रता का संबंध जुड़ता है और जीवन का सिलसिला चलता है। एक नारी

**प्रोफेसर, गुरु नानक अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, श्री अमृतसर।*

की मृत्यु के उपरांत दूसरी की तलाश शुरू हो जाती है। उससे फिर सांसारिक संबंध चलते हैं। गुरु साहिब आखिर में निष्कर्षत: कहते हैं:

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥

(पन्ना ४७३)

भाव सारी मनुष्यता सिवाय स्वंभू प्रभु के नारी द्वारा उपजी है, फिर उसका तिरस्कार क्यों?

श्री गुरु नानक देव जी नाम में लीन जीवात्माओं को सुहागिन, सुचज्जी, सचिआर कहते हैं, बिना इस भेदभाव के कि वह स्त्री है या पुरुष। ऐसी जीवात्मा को प्रभु बहुत चाहता है। इसके उल्ट जो दुहागिन, कूड़िआर, कुचज्जी है, द्वैताभाव में डूबी रहती है। इसलिये उसका जीवन धिक्कार योग्य है। सुचज्जी को जिन गुणों को धारण करने के लिये गुरु साहिब ने आदेश दिया है वह नर-नारी दोनों के लिये सामान्य हैं। सारे कर्त्तव्य पति या पत्नी दोनों में से सिर्फ किसी एक के नहीं हैं; दोनों को अपने फर्ज ईमादारी से निभाने चाहियें। प्राचीन समाज में स्त्री घर की चारदीवारी में रहती थी, इसलिये घर का काम-काज ही उसके जिम्मे होता था। नारी सशक्तिकरण की प्रक्रिया में आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु आधुनिक नारी पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है जिस कारण घर के काम-काज के साथ नौकरी या अपना कोई व्यवसाय करना होता है। इस बदले हुए माहौल में पति को घरेलू कार्यों में सहयोग देने में झिझक महसूस नहीं करनी चाहिये। पति-पत्नी दोनों को बच्चों के पालन-पोषण तथा बजुर्गों की देखभाल में योगदान डालना चाहिये ताकि भविष्य के नागरिकों तथा भूत के अनुभव का उचित ध्यान रखा जा सके।

आज हम सिख कहलवाने वाले समाज में भी बढ़ते हुए दहेज, बलात्कार, कन्या-भ्रूण हत्याओं को पाते हैं। इसका कारण यह है कि हम सिख इतिहास में वर्णित स्त्री की महत्ता को विशेष महत्व नहीं देते। सिख इतिहास पर दृष्टिपात करने से सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि समाज में स्त्री के महत्वपूर्ण स्थान के बारे में जो श्री गुरु नानक देव जी ने चर्चा की है उसी को ध्यान में रखते हुए श्री गुरु अमरदास जी ने सती-प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई और 'सती' शब्द को परिभाषित करते हुए कहा:

नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥

(पन्ना ७८७)

यह गुरु साहिबान की शिक्षाओं का ही प्रभाव है कि पंजाब में पिछली सदी में सती की कोई घटना नहीं हुई और शादी संस्था से संबंधित बाल-विवाह का प्रचलन भी पंजाब में नहीं है, जबकि भारत के कई और प्रांतों में इस प्रकार की प्रथाएं दिखाई देती हैं।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा आरंभ किया हुआ धर्म प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक-आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की स्वतंत्रता देता है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। गुरु जी के द्वारा बतलाए गये स्वतंत्रता, समानता और न्याय के सद्गुण स्त्री-पुरुष की हर क्षेत्र में समता में सहायक बने। श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री-पुरुष को, पति-पत्नी को *"एक जोति दुइ मूरती"* का आदर्श अपनाने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने पर-स्त्री या पर-पुरुष-गमन को अवगुण बतलाते हुए कहा:

पर घरि चीतु मनमुखि डोलाइ ॥
गलि जेवरी धंधै लपटाए ॥ (पन्ना २२६)

यह ध्यान योग्य है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के इस संदेश को भूल जाने के कारण ही आज समाज में एड्स आदि जैसे भयंकर रोग फैल रहे हैं और कई प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं जिनके बारे में हम रोज समाचार पत्रों तथा टी. वी. आदि से जानते हैं। रहितनामों में कुड़ीमार (लड़की को मारने वाले) से मेलजोल न रखने की हिदायत है। पर आज पंजाब में स्त्री-पुरुष के जन्म दर के अनुपात में बढ़ रही असमानता के पीछे कन्या-भ्रूण

हत्याओं का ही मुख्य कारण है। 'गुर बिलास पातशाही छेवीं' में वर्णन किया गया है कि बाबा गुरदित्ता जी के जन्म के समय माता गंगा जी ने आशीष दी कि 'जोड़ी रले' (जोड़ी बने, भाव एक लड़का और हो) पर गुरु जी ने आगे से कहा 'माता जी! बेटे तो पांच होंगे, मुझे आशीष दो— *शीलखान कंनिआ इक होवै। नाही तां मां ग्रिहसत विगोवै।*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी वर्णन है कि:
बाबुल कै घरि बेटड़ी बाली बालै नेहि ॥
(पन्ना ९३५)

ध्यान योग्य है कि सिख धर्म के प्रचार-प्रसार में स्त्रियों ने विशेष योगदान डाला। माता खीवी जी ने सिख धर्म के प्रचार में विशेष सहयोग दिया। लंगर की सेवा के अतिरिक्त उन्होंने बच्चों को बाणी कंठ कराने की सेवा भी निभाई। माता भानी जी, माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी ने सिख संगतों और संस्थाओं को क्रमवार रहनुमाई और संचालन की प्रेरणा, माता सुलक्खणी जी और पहली सिख स्त्री बेबे नानकी जी से ली। करतारपुर धर्मसाल और लंगर का प्रबंध माता सुलक्खणी जी करते थे। यहां सब स्त्री-पुरुष इकट्ठे लंगर ग्रहण करते, लंगर की सेवा करते। यह भेदभाव नहीं किया जाता था कि कौन क्या काम करेगा।

श्री गुरु अमरदास जी ने सती-प्रथा की समाप्ति के यत्न किये। उसके पीछे भी उनकी अर्द्धांगिनी माता मनसा देवी जी की सूझ ही थी। श्री गुरु अमरदास जी ने २२ मंजियां और बावन पीढ़े स्थापित किये। उनमें से कुछ की जिम्मेदारी स्त्रियों को सौंपी गई। माता मनसा देवी जी और माता किशन कौर जी अपने पतियों के साथ प्रचार दौरों में भी जाती रहीं। गुरुओं की पत्नियों ने पंथ की खातिर जो कुर्बानियां दीं उनसे इतिहास भरा पड़ा है।

गुरु महिलों (सुपत्नियों) के अतिरिक्त माई भागो जी, रानी सदा कौर, महाराणी जिंदां जैसे कई और नाम सिख इतिहास में सदा अमर रहेंगे। अट्ठारहवीं सदी में सिख औरतों ने त्याग और बलिदान की जो मिसाल कायम की वह अरदास में रोज याद की जाती है।

सिख इतिहास में स्त्रियों की गौरवशाली स्थिति को ध्यान में रखते हुए आज भी सिख धर्म, सिख समाज में औरतों को बराबर के अधिकार दिये जाने चाहिये। स्त्रियों की शिक्षा और उनके सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। दहेज-प्रथा को जड़ से खत्म करना चाहिये जो कन्या-भ्रूण हत्या का मूल कारण है। जब तक औरत को अबला और उपभोग की वस्तु समझा जायेगा उतनी देर समाज में शांति-स्थापना की संभावना नहीं होगी। जितनी देर तक समाज के आधे हिस्से (औरत) को बराबर की महत्ता नहीं दी जायेगी (सिर्फ सैद्धांतिक ही नहीं व्यवहारिक रूप में भी) उतनी देर तक समाज का समुचित विकास संभव नहीं है। समाज में संतुलन बनाये रखने के लिये औरत को विकास के बराबर अधिकार दिये जाने चाहिये। पर ध्यान योग्य है कि औरत को स्वयं भी विषय-विकारों और देखादेखी के गलत फैशनों आदि से मुक्त होकर उच्च मूल्यों को अपनाने की ओर ध्यान देना चाहिये।

गुरु साहिबान ने न ही सैद्धांतिक और न ही व्यवहारिक स्तर पर औरत के साथ कोई भेदभाव किया। गुरु साहिबान के इन्हीं आदर्शों को ध्यान में रखते हुए औरतों की शिक्षा, सेहत, उनके अधिकारों तथा उन्नति के अवसरों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये ताकि एक स्वस्थ समाज की सृजना हो सके। एक संतुलित समाज ही आदर्श समाज हो सकता है। ऐसे समाज की ही गुरु साहिबान ने कल्पना की थी। गुरु जी के सपनों को साकार करना हर सिख का धर्म होना चाहिये।



ईश्वर के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता

*-ज्योति खरे**

इतना सुंदर संसार, जिसमें प्रतिदिन सूरज उगता, जो प्रकाश व गर्मी देता और अपने समय पर अस्त हो जाता। दिन भर के थके हारे लोगों और प्राणियों को रात्रि अपने आंचल में विश्राम देती है, वन प्रान्तर में भूल-भटक गए यात्रियों को तारे दिशा बताते हैं। ऋतुएं समय पर आती और जाती हैं। हर प्राणी के लिए अनुकूल आहार, जलवायु की व्यवस्था और प्रतिकूलताओं से सुरक्षा का प्रबंध प्रकृति में उपलब्ध है। ये सुविधाएं और व्यवस्थाएं सहज ही उपलब्ध हैं, इसलिए इन पर कोई आश्चर्य भले ही न होता हो, पर हैं तो विस्मयजनक ही। इस विस्मय के साथ ही प्रश्न खड़ा होता है कि इन आश्चर्यों की सृजक-सत्ता कौन है? उसी सत्ता को भिन्न-भिन्न धर्मों, ऋषियों और मनीषियों ने 'ईश्वर' कहा है।

जो लोग ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्न उठाते और उसे संदिग्ध बताते हैं, उनके लिए प्रति प्रश्न यह है कि जब संसार के इतने आश्चर्यों का कोई न कोई निर्माता है तो इतने बड़े संसार का निर्माता बिना सृजक के कैसे हुआ? यूं व्यर्थ के तर्क के लिए कहा जा रहा है कि जब संसार का निर्माण ईश्वर ने किया तो ईश्वर का निर्माण किसने किया? इस प्रकार के तर्कों-वितर्कों का अंत नहीं है और उन्हें कितना ही लंबा खींचा जा सकता है, लेकिन तभी जबकि ईश्वर को कोई व्यक्ति मान कर चला जाए।

स्मरण रखा जाना चाहिए कि प्राचीन आध्यात्मवादी विचारकों ने ईश्वरीय-सत्ता का प्रतिपादन कहीं भी व्यक्तिक इकाई के रूप में नहीं किया है। उसे एक नियामक शक्ति के रूप में ही जाना और समझा जाता है। उसके प्रभाव और शक्ति का परिचय प्रकृति के चारों ओर संतुलन के रूप में बिखरा पड़ा देखा जा सकता है। यदि कोई नियम-व्यवस्था न रही होती तो करोड़ों की संख्या में तारागण किसी व्यवस्था के अभाव में अब तक न जाने कहां कब के आपस में टकराकर लड़-मरे होते। यदि इन सब में कोई नियम-व्यवस्था काम न कर रही होती तो अमुक दिन, अमुक समय, अमुक सूर्य या चंद्र-ग्रहण, सूर्य-संक्रान्ति आदि का ज्ञान किस प्रकार संभव होता?

सूर्य से पृथ्वी ९ करोड़ ३० लाख मील दूर है और पृथ्वी से चन्द्रमा २ लाख ४० हजार मील दूर। यह दूरी पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य के निरंतर घूमते रहने के बाद भी नहीं घटती और न बढ़ती है। जैसे कोई कठपुतली नचाने वाला एक सुनिश्चित क्रम से अपनी अंगुलियों की डोरों को हिलाता हुआ कठपुतली का खेल दिखाता है और उसकी प्रवीणता के कारण खेल कभी नहीं बिगड़ता, उसी प्रकार सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा ही नहीं, ब्रह्माण्ड के अन्यान्य ग्रह-नक्षत्र भी उसी गति, उसी नियम-व्यवस्था से चल रहे हैं।

चंद्रमा, पृथ्वी की परिक्रमा २७ दिन ७

**सम्पादक "अभिसारिका", 'विभावरी' जी-९, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा, झांसी-२८४००३ (उ. प्र.)*

घण्टे ४३ मिनट और १२ सेकेण्ड में पूरी कर लेता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर २३ घण्टे ५६ मिनट ४९ सेकेण्ड में घूम जाती है। सूर्य की परिक्रमा करते समय वह एक सेकेण्ड में लगभग १८ मील की दूरी तय करती है और अपनी धुरी पर १०३७ मील प्रति घण्टा की चाल से घूमती है। वृहस्पति अपनी धुरी पर ९ घण्टे ५५ मिनट में घूम जाता है और २३३ दिन में सूर्य की परिक्रमा पूरी करता है। सौर परिवार के इन सदस्यों ने निर्धारित समय में अपना यह क्रम पूरा करने में न कभी विलंब किया और न उतावली से काम लिया। इनका नियमन करने वाली कोई व्यवस्था, सत्ता या शक्ति के अस्तित्व से किस प्रकार इंकार किया जा सकता है, जबकि बिना उठाने वाले के एक पत्थर भी उठकर इधर से उधर नहीं जाता?

कार्यालयों में कोई नियम-व्यवस्था न हो, कोई नियंत्रणकर्ता या प्रबंधक न हो तो वहां का काम चल पाना कठिन हो जाता है। सब अपनी मनमानी करने लगें तो कैसी अव्यवस्था उत्पन्न हो जाएगी, कहा नहीं जा सकता यह मान लिया जाए कि किसी प्रकार थोड़ी देर के लिए यह व्यवस्था चल भी जाए तो वह स्थिर नहीं हो सकती। मुश्किल से पन्द्रह मिनट भी नहीं चल पायेगी। नियामक के बिना स्थिर और अनवरत नियम-व्यवस्था और प्रशासक के बिना प्रशासन की कल्पना नहीं की जा सकती। परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति के हाथ में सारी गृहस्थी का नियंत्रण होता है। गांव का एक मुखिया होता है, तो कई गांवों के समूह की बनी तहसील का स्वामी नियंत्रणकर्ता तहसीलदार, जिले का कलेक्टर, राज्य का गवर्नर और देश की शासन-व्यवस्था का सूत्र संचालक राष्ट्रपति होता है। मिलों तक में मैनेजर और कंपनियों में डायरेक्टर न हों तो उनकी व्यवस्था ही ठप्प पड़ जाती है और अस्तित्व डावांडोल हो जाता है, फिर इतनी बड़ी सृष्टि का प्रशासक स्वामी और मुखिया न होता तो संसार न जाने कब का विनष्ट हो गया होता!

यह एक मानी हुई बात है कि जड़ में शक्ति हो सकती है, व्यवस्था नहीं। राह में गड़े पत्थर से किसी को चोट लग जाए तो खून निकल सकता है, लेकिन पत्थर खुद चलने वाले को देखकर चोट पहुंचाने के लिए उसके अंगूठों की नोंक तक नहीं पहुंचता, क्योंकि वह जड़ है। हालांकि अब तो जड़ की परिभाषा भी बदल गई है और कहा जाता है कि इस दुनिया में जड़ कुछ नहीं है। पर यह विषय अलग है, उसका प्रस्तुत पंक्तियों से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। यहां तो इतना भर कहा जा रहा है कि व्यवस्था, प्रशासन, संचालन, नियमन और नियंत्रण जिस-तिस-की के बस की बात नहीं है, यह कार्य कोई समर्थ सत्ता ही कर सकती है और जब प्रश्न ब्रह्माण्ड का आता है, जिसके विस्तार का ही अनुमान नहीं लगाया जा सकता बल्कि यह अनुभव किया जाता है कि आकाशस्थ समस्त पिण्ड अंडाकार वृत्त में एक निश्चित गति क्रम से गतिमान हैं तो प्रश्न उठता है कि कोई नियामक सत्ता नहीं, इस बात का क्या प्रमाण है?





स्वाधीनता संग्राम में सिखों का अपूर्व योगदान

*-स. दमनजीत सिंघ**

भारत में सिखों की जनसंख्या देश की पूरी आबादी का दो प्रतीशत भी नहीं है। फिर भी स्वाधीनता संग्राम में इनका योगदान अस्सी प्रतिशत से अधिक है। स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास तब तक अपूर्ण माना जाता है जब तक सिखों के योगदान का पूरा उल्लेख नहीं होता।

सही बात तो यह है कि अंग्रेज जब पूरे भारत को गुलामी की जंजीर में कसकर जकड़ चुके थे, किसी की हिम्मत नहीं थी उनकी पकड़ से मुक्त होने और करवाने की। ऐसे दम घुटने वाले वातावरण में भी आजादी के प्यारे सिखों में कूका लहर (नामधारी) पैदा हुई। इस लहर के नेता बाबा राम सिंघ थे। बाबा राम सिंघ ने सबसे पहले विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार करने का आन्दोलन चलाया। उन्होंने विदेशी कपड़ों, न्यायालयों, रेलगाड़ियों, अंग्रेजी स्कूलों, कालेजों, डाकखानों का पूर्णत: बायकाट किया। अंग्रेज उनसे काफी भय खाते थे। उनको देश की आजादी से प्रेम एवं गुलामी से नफरत थी। जनमानस पर उनके प्रभाव को देखते हुए उन्हें १८७२ ई में इलाहाबाद के किले में बंद कर दिया गया। फिर बाद में उन्हें देश-निकाले की सजा देकर रंगून भेज दिया। इसके बावजूद वे देश की आजादी के लिए लड़ते रहे। उन पर अंग्रेजों द्वारा काफी सख्ती बरती गयी, इतिहास गवाह है कि ६८ जोशीले नामधारी सिखों को मौत की सजा दी गई, ४९ को तोप से उड़ा दिया गया, १६ को फांसी पर लटका दिया गया तथा ५२ को लंबी कैद की सजा दी गयी।

सच्चाई तो यह है कि भारत को आजाद कराने में नामधारी लहर (कूका आन्दोलन), अकाली लहर, बब्बर अकाली लहर और गदर पार्टी आदि में शामिल होकर हजारों सिख हंसते-हंसते देश की स्वतंत्रता के लिए शहीद हो गये। इस लहर ने विशेष कर पंजाब में अंग्रेजी सरकार की जड़ें हिला दी थीं। प्रकट रूप में यह एक गुरुद्वारा सुधार लहर थी। यह टक्कर अंग्रेजी सरकार की ज्यादतियों से थी। आजादी के इन दीवानों की अंग्रेज पुलिस द्वारा सख्त मारपीट की जाती थी। कई अंग्रेज सिपाही सिखों के केशों को पकड़ कर घसीटते थे। यह मार बहुत जुल्मी होती थी। पुलिस वाले अकालियों के शरीर पर चढ़कर नाचते देखे जाते थे। पुलिस सिखों को मारती-मारती थक जाती थी पर सिख मार खाते-खाते थकते नहीं थे। पुलिस जुल्म करती-करती थक जाती थी पर सिख जुल्म सहते-सहते थकते नहीं थे। गुरुद्वारों को आजाद कराने के मामले में अंग्रेजी सरकार को सिखों के सामने घुटने टेकने पड़े। अंग्रेजी सरकार हार गयी और सिख जीत गये।

चक्रवर्ती राज गोपालचार्य ने एक समागम में सिखों की कुर्बानी की प्रशंसा करते हुए कहा था, "मैं बिना खुशामद से कह सकता हूं कि अकालियों ने प्रकट कर दिया है कि वे भारत में दूसरी कौमों से तगड़े हैं। मैं अकालियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मेरी अगुआई की है।"

लाला मेलाराम वफा ने अकालियों की तारीफ में इस प्रकार लिखा था:

बड़ी तारीफ के काबिल, तेरी हिम्मती जुर्रत।

बब्बर अकाली लहर का एक मात्र संदेश

**८८९, फेज १०, मोहाली-१६००६२*

था देश में एकता की लहर पैदा करना और जान पर खेल जाना। देश की आजादी के लिए उनके दिल में बड़ी तड़प थी। सच्चाई तो यह है कि आजादी की लड़ाई में फांसी और कालापानी की सजा उस समय पंजाब में सिखों के हिस्से ही ज्यादा आयी। श्री शचेन्द्र नाथ सन्याल ने आजादी के लिए मर-मिटने वाले सिखों के बारे में लिखा है: "अपने देश के उद्धार के लिए अपना तन, मन और धन, दर्जनों वर्षों की खून-पसीने की कमाई, देश की आजादी के वास्ते एक क्षण में बलिदान कर देना यह हौंसला भारत के सिख बाहदुरों को ही अपने बुजुर्गों से विरासत में मिल सका है।"

वैसाखी पर्व, १३ अप्रैल १९१९ के दिन जलियांवाला बाग कांड को कौन नहीं जानता, जिसमें लगभग १३०० शहीद होने वालों में ७६९ सिख थे। *(अमरगाथा बन्दी जीवन, पृ. ६२)*

महात्मा गांधी ने कहा था— "मुझे देश आजाद कराने का नुसखा मिल गया है। गुरुद्वारे आजाद हो गये हैं, मुबारक हो।" पंडित मोतीलाल नेहरू को लिखना पड़ा— "मैं अकालियों को प्रणाम करता हूं जो देश की आजादी के लिए जंग लड़ते रहे हैं।" पंडित मदन मोहन मालवीय ने कहा कि "गुरू के बाग से देश की आजादी की लहर उठी थी और इसने देश को आजाद कराया है।"



गुरू मानीओ ग्रंथ

(पृष्ठ ४३ का शेष)

जो मुझ बचन सुणन की चाइ।
ग्रंथ जी पढ़े सुणे चित लाइ ॥१९॥
मेरा रूप ग्रंथ जी जाण।
इन में भेद नहीं कुझ मान ॥२०॥
(रहितनामा, भाई नंद लाल जी)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी किसी एक कौम, जाति अथवा किसी विशेष भाईचारे का ग्रंथ नहीं बल्कि सर्व-सांझा है। हर धर्म के अपने-अपने धार्मिक ग्रंथ, अपने-अपने स्थान पर महान हैं पर जो सर्व-सत्कार, प्रमाणिकता इस धर्म-ग्रंथ को प्राप्त है और जो सर्व-सांझीवालता इस महान शब्द-गुरु में है वो और कहीं नहीं मिलती।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी को "धुर की बाणी", "खसम की बाणी", "गोबिंद की बाणी" के विशेषणों से अलंकृत किया गया है। यह धुर की बाणी प्रभु ने अपने प्यारों के मुंह से बुलवाई है। यह दुनियावी कृत होते हुए भी निरोल निरंकारी कृत है, जो "हरि-जन" को 'हरि' में अभेद करवा देती है। ऐसी महान शक्ति केवल "धुर की बाणी" में ही है।

गुरबाणी अथवा गुरु की आवाज में इतनी सामर्थ्य है कि इसको प्यार, सत्कार से पढ़ने, सुनने, सुनाने और विचार करने वाला सीधे तौर पर ही गुरु साहिबान के साथ बातें करता है और वो गुरु जी के पावन वचनों का आनंद लेता हुआ विस्मादी हो जाता है। गुरबाणी ही गुरु है। यह गुरु साहिब की आत्मा है, रूह है, शरीर है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समूची बाणी ब्रह्म-केंद्रित है। गुरबाणी के महान बाणीकारों ने मनुष्य को सही इंसान बनने और लोक-कल्याण की दृष्टि से बहुत सी रचना-युक्तियों का प्रयोग किया है। प्यार, भय, दृष्टांत, दोहराव, प्रेरणा, उद्यम आदि युक्तियों से मनुष्य को आध्यात्मिक संदेश संचारित किया गया है।

नि:संदेह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में निरोल प्रभु की विचार है, जिसको पढ़ने, सुनने और कमाने वाला मुक्त पद को प्राप्त करके, प्रभु के साथ एक हो जाता है।



क्या है मन की जीत और हार ?

-श्री मानव शर्मा*

मन सभी इन्द्रियों का स्वामी और केन्द्र है। मन ही शरीर का सबसे अधिक चंचल, जागरूक और चेतन अंग है। मानव शरीर की सभी इन्द्रियों का संचालक भी मन ही है। मन ही शरीर के सभी अंगों को निर्देश देता है। मन से ही पहले कुछ करने का, कोई खेल खेलने का विचार बनता है तभी अन्य अंग उस विचार को स्वरूपाकार देने के लिए सक्रिय हुआ करते हैं। अच्छा, बुरा जो भी किया जाता है, वह सब मन की इच्छा अथवा प्रेरणा से ही किया जाता है। मन में बना विचार यदि ढीला-ढाला हो तो शरीर के अन्य अंग भी ढीले-ढाले रहकर ही उस पूर्ति में आगे बढ़ा करते हैं। मन द्वारा किये गए अच्छे-बुरे कार्य के परिणाम को भी मन को ही भोगना पड़ता है। यों चाहे भोगता या सहता शरीर भी है किन्तु शरीर को उसकी अनुभूति भी मन के कारण ही होती है। अत: यह कहा जा सकता है कि मन का सामर्थ्य और महत्त्व सर्वोपरि है।

मन की इसी सामर्थ्य और महत्ता को देखते हुए बड़ों ने कहा है कि मन की चंचलता को रोको, मन को डावांडोल न होने दो, मन को स्थिर बनाए रखो, मन को काबू में रखो, क्योंकि मन के दृढ़ होने पर ही व्यक्ति कभी हारता नहीं है, चाहे वह कोई भी क्षेत्र क्यों न हो। मन में दृढ़ रहने पर ही व्यक्ति को देर-सवेर सफलता प्राप्त हो जाती है जबकि मन हार जाने वाले व्यक्ति को सफलता कभी नसीब नहीं होती। हारे हुए मन वाला व्यक्ति तो किसी भी काम को शुरू ही नहीं कर पाता। इसी कारण तो कहा गया है कि "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।" जिसने अपने मन को जीत लिया है, अपने मन की चंचलता या अस्थिरता पर काबू पा लिया है समझो उसने जग जीत लिया:

आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥
(पन्ना ४)

घर में किसी प्रियजन के बीमार हो जाने पर यदि उसकी बीमारी की गंभीरता को देखकर हम मन हार बैठें तो उसका हम इलाज नहीं करवाएंगे। इसके विपरीत यदि हम मन नहीं हारते हैं तो उसकी बीमारी का विभिन्न चिकित्सकों से इलाज करवाते हैं। जीवन-मरण तो ईश्वर के हाथ में है। रोगी यदि अच्छा न भी हो तब भी हमें यह संतोष तो रहता ही है कि हमने रोगी का इलाज करवाने के लिए अपना पूरा-पूरा जोर लगा दिया। संतोष की यही भावना मन को जीत लेने के बराबर है। आज जीवन में एक कहावत प्रचलित है-- 'जान है तो जहान है।' वास्तव में इस कहावत में जान से तात्पर्य मन से ही है। इसका भाव यह है कि हारे हुए मन वाला व्यक्ति जीवन में हर प्रकार की सुख-सुविधा प्राप्त होने पर भी जीवन का वास्तविक सुख नहीं भोग सकता। जीवन उसे बोझ लगता है। इसके विपरीत, दृढ़ मन वाला अर्थात् मन को जीतने वाला व्यक्ति उत्साह एवं जोश से हर कार्य करता है भले ही उसके जीवन में काफी अभाव हों। मन को जीतकर ही जीवन में सक्रिय हुआ जा सकता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव ने जितनी भी उन्नति, प्रगति, जितना भी विकास किया है, उस सबके पीछे यही भावना काम करती है कि मन मारकर बैठ जाने से काम नहीं चलेगा, मन को जीत कर ही आगे बढ़ा जा सकता है। इसी भावना के अन्तर्गत अनेक विघ्न, अनेक बाधाएं आने पर भी मनुष्य आगे बढ़ता रहा और बढ़ रहा है।

हार-जीत तो दोनों मन के व्यापार हैं। सुदृढ़ मन वाले के लिए ऊपर से नजर आने वाली हार कुछ मायने नहीं रखती। मंजिल तक पहुंच कर वह अपनी जीत का सुख एवं आनंद प्राप्त कर लिया करता है। दृढ़ मन वाले व्यक्ति से जीत कभी दूर नहीं रहा करती, बल्कि खिंची चली आती है।



*अंदरून खजूरी गेट, इमली मोहल्ला, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५, मो. ९८७६८-०९०४०

गुरबाणी राग परिचय-१२

रागु धनासरी

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी में रागु सोरठि के बाद क्रमांक १० पर धनासरी राग की बाणी अंकित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंत में दी गई रागमाला के अनुसार छः प्रमुख रागों में द्वितीय राग मालकौस है तथा धनासरी मालकौस राग की रागिनी है—*"धनासरी ए पाचउ गाई ॥"* इस रागिनी का गायन राग मालकौस की छाया में आसावरी और माखा मिला कर किया तथा इसका गायन का समय दोपहर है। धनासरी राग में अंकित बाणी का विस्तार मात्र ३६ पन्नों (६६०-६९५) में है किन्तु इस राग की गणना विस्तृत रागों के समक्ष की जाती है। इस राग की विशेषता आरती सम्बंधी शब्दों के कारण विशेष रूप से मानी जाती है जिसका उच्चारण निर्गुण प्रभु की स्तुति में संध्या के समय किया जाता है।

राग धनासरी के आरंभ में श्री गुरु नानक देव जी के अलग-अलग शैली में रचित ९ शब्दों का अंकन है। इस राग के प्रथम शब्द का केन्द्रीय भाव है कि मैं अपने स्वामी (साहिब) के नाम पर खण्ड-खण्ड होकर पल-पल बलिहार जाता हूं:

साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥

(पन्ना ६६०)

अन्य शब्दों की भांति इसमें 'रहाउ' की संख्या एक नहीं है तथा प्रत्येक पद में उसी पद के भाव के अनुसार 'रहाउ' की पंक्ति दी गई है। प्रथम और चतुर्थ पद में 'रहाउ' में पद की पंक्ति को दोहरा दिया है—*"साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु"* तथा *"साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥"* द्वितीय पद का भाव है कि निरंतर प्रभु-सेवा (नाम-साधना) से जीव का उद्धार होता है। इस पद के रहाउ में उद्धार सम्बंधी संकेत को स्पष्ट किया गया है—*"दइआल तेरै नामि तरा ॥ सद कुरबाणै जाउ ॥"* तृतीय पद में सत्य स्वरूप प्रभु के एकत्व भाव का वर्णन है। उस प्रभु का कोई दूसरा समक्ष नहीं है इस कथन से इसकी पुष्टि की गई है। प्रभु की सेवा (नाम-सुमिरन, सेवा, सबद, सुरति, विचार) का अवसर उसे मिलता है जिस पर प्रभु की कृपा होती है:

सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥
ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥

(पन्ना ६६०)

तृतीय पद के 'रहाउ' में पद के दोनों भावों— प्रभु के 'समक्ष न होना' तथा 'नदरि से प्राप्ति' को स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार 'रहाउ' में तीन पंक्तियां हैं— हे प्रिय! मैं तुम्हारे बगैर कैसे रह सकता हूं? मुझे कृपापूर्वक वह गौरव प्रदान करो जिससे तेरे नाम में अच्छी प्रीति (स+रति) लग जावे। आपके समान कोई दूसरा नहीं है इसलिए मैं अन्य किससे निवेदन करूं?

तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥
सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां ॥
दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥

(पन्ना ६६०)

इस प्रकार इस शब्द में प्रथम तीन पदों और उनसे संलग्न 'रहाउ' के द्वारा प्रभु के नाम पर खण्ड-खण्ड होकर पल-पल बलिहार होने के लक्ष्य तक पहुंचा गया है।

श्री गुरु नानक देव जी के द्वितीय शब्द में नाम-साधना का अन्वेषण अहंकार त्याग कर संवाद स्थापित करने से बताया गया है:

जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥

**C/o S. Gurmeet Singh, H-230/MDC/SEC 5, Shikhar Apartment, Panchkula.*

भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥
(पन्ना ६६१)

राग धनासरी के गायन-पद्धति के प्रथम के दो शब्दों के बाद द्वितीय गायन-पद्धति (घर दूजा) के अन्तर्गत ५ शब्दों में नाम-सुमिरन सम्बंधी विविध पक्षों का वर्णन है। इस वर्ग के प्रथम दो शब्द एक-दूसरे के पूरक हैं--कैसे सुमिरन करूं, सुमिरन नहीं किया जाता-- *"किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ ॥"* प्रभु-कृपा-दृष्टि (नदरि) करे तब सुमिरन संभव है--*"नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥"* अगले दो शब्दों में बाणी के विस्मरण से हुई जीव की दशा का वर्णन है। इस वर्ग के अन्तिम शब्द में प्रथम सात शब्दों का आधारभूत सिद्धांत दिया गया है। अनजान मनुष्य अपने मस्तक पर लिखे लेखों को नहीं समझता। कुशल, अकुशल और सामान्य तीन प्रकार के कर्मों के लेखों का निर्धारण प्रभु की दरगाह में होता है-- हमारा मन कागज के रूप में है तथा हमारे शरीर की क्रिया मन रूपी कागज पर लेखों के अंकन का माध्यम है। खोटा सिक्का काम नहीं आता:

काइआ कागदु मनु परवाणा ॥
सिर के लेख न पड़ै इआणा ॥
दरगह घड़ीअहि तीने लेख ॥
खोटा कामि न आवै वेखु ॥ (पन्ना ६६२)

घर तीसरा के अन्तर्गत तत्कालीन सामाजिक अधोगति का वर्णन है। कलयुग में राम-राम ही सार है, हरि के नाम बिना मुक्ति नहीं है।

श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा राग धनासरी में उच्चारित अन्तिम शब्द काव्य और चिन्तन की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। इस शब्द के प्रथम पद में सांग रूपक के माध्यम से सम्पूर्ण ब्रह्मांड द्वारा निराकार प्रभु की आरती का मौलिक और उदात्त वर्णन है। आकाश एक थाल है, सूर्य और चन्द्रमा इसमें रखे दो दीपक हैं, अनगिनत तारे थाल में रखे मोती हैं। मलय पर्वत के चन्दन की सुगन्धि धूप है। सभी वनस्पति और फूल अंजलि दे रहे हैं:

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ (पन्ना ६६३)

वह निराकार सीमा-रहित है और हमारी वाणी की सीमाएं हैं, उसके गुणों का वर्णन कैसे किया जाए? सभी इन्द्रियों से रहित होने पर भी उसमें समस्त इन्द्रियों के विषय जानने का आभास होता है। तीसरे पद में विचार के साथ छंद की पंक्ति लघु है। प्रभु की ज्योति सभी प्राणियों में है और सभी उसकी ज्योति से प्रकाशित हैं। परमात्मा की ज्योति गुरु के माध्यम से प्रकट होती है। उस प्रभु को जो स्वीकार्य होता है वही आरती बन जाता है:

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ (पन्ना ६६३)

चतुर्थ पद में गुरु नानक साहिब चिन्तन के क्षेत्र से नाम-भक्ति में प्रवेश करते हैं। उनका मन-भ्रमर प्रभु के *'चरण कमल मकरंद'* का लोभी है। हे कृपानिधि! मुझ पपीहे को भी कृपा की स्वाति-बूंद प्रदान कर जिससे तेरे नाम में लीन हो जाऊं।

गुरु नानक साहिब की नाम-महिमा की विचारधारा का पूर्ण निर्वाह श्री गुरु अमरदास जी के नौ शब्दों में किया गया है:

--गुर सेवा ते हरि नामु धनु पावै ॥
अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥(पन्ना ६६४)
--गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥
सहजे हरि नामु मंनि वसाए ॥ (पन्ना ६६५)

राग धनासरी में श्री गुरु रामदास जी के १३ शब्द हैं। पहले ६ चउपदे घरु प्रथम में हैं तथा फिर ६ दुपदे घरु ५ में हैं। चउपदों में एक पद में गुरसिख को गुरु-मार्ग पर चलने का निर्देश है। 'रहाउ' के बाद प्रत्येक पंक्ति में हरि की निराली कथा का जाप करने का निर्देश है:

गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥
जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा

निराली ॥ *(पन्ना ६६७)*

दुपदों के वर्ग के अन्तिम शब्द में समर्थ हरि के नाम-सुमिरन का वर्णन है। हरि सब कामनाओं को पूर्ण करने वाला और सुखदाता है। श्री गुरु रामदास जी के शब्दों के अंत में प्रभु से दर्शन की याचना की गई है।

राग धनासरी में श्री गुरु अरजन देव जी के ५८ शब्द हैं। इन शब्दों में नाम की महिमा तथा नाम की याचना का स्वर प्रमुख है। गुरु की कृपा से नाम मिलने से सभी बंधन छूट गये। अब मैं हर प्राणी को मित्र समझता हूं। मैं भी सभी का सज्जन-मित्र बना रहता हूं:

सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ *(पन्ना ६७१)*

राग धनासरी में श्री गुरु तेग बहादर जी के चार शब्द हैं। इन शब्दों में प्रथम शब्द बहुत ही भावपूर्ण है। नाम की खोज का समाधान इस शब्द में किया गया है। सर्वनिवासी प्रभु अलिप्त है और हृदय के अंदर ही समाया हुआ है। भ्रम की काई मिटने से उसका प्रतिबिम्ब अपने ही अंदर दिखाई देगा। पुष्प में सुगन्ध की तरह प्रभु की खोज एक अन्तरयात्रा है:

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥
(पन्ना ६८४)

राग धनासरी में श्री गुरु नानक देव जी की दो असटपदियां और तीन छंद हैं। इनमें भी नाम-महिमा दी गई है। प्रथम असटपदी में गुरु की तुलना सागर से की गई है जो रत्नों से भरपूर है। प्रभु की कृपा से संत रूपी हंस हरि- नाम रूपी रस का चोगा लेते हैं और प्राणों के मालिक प्रभु को प्राप्त करते हैं। बगुला तालाब के कीचड़ में ही डूबा रहता है :

हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै ॥
सरवर महि हंसु प्रानपति पावै ॥ *(पन्ना ६८५)*

नाम की सहज साधना से प्रभु-मिलन प्रमाणिक है। जो प्रभु के नाम का जाप करता है, प्रभु के सम्मान को भोजन बनाता है, गुरु की शरण लेकर प्रभु में लीन रहता है :

नामु जपै भउ भोजनु खाइ ॥
गुरमुखि सेवक रहे समाइ ॥ *(पन्ना ६८६)*

प्रथम छंद में प्रभु के नाम को ही तीर्थ बताया गया है। गुरु के उपदेश का आत्मिक ज्ञान ही तीर्थ है। द्वितीय छंद में नाम-सुमिरन से आत्मिक जीवन के आनंद का वर्णन है। तृतीय छंद में नाम विहीन माया-मोह में ठगी जीवात्मा को सचेत किया गया है।

श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी के छंदों में भी हरि-कृपा से और गुरु के सतसंग से हरि-नाम-आराधना का वर्णन है।

राग धनासरी में बानगी के रूप में भक्त कबीर जी और भक्त रविदास जी का एक शब्द *"नामु तेरो आरती मजनु मुरारे"* आरती में सम्मिलित है। भक्त नामदेव जी का एक शब्द *"पहिल पुरीए पुंडरक वना"* श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मराठी भाषा में अंकित एक मात्र शब्द है। उक्त तीन भक्तों के अतिरिक्त भक्त त्रिलोचन जी, भक्त सैण जी, भक्त पीपा जी और भक्त धन्ना जी द्वारा रचित एक-एक शब्द भी संकलित है। भक्त सैण जी द्वारा रचित *"धूप दीप घ्रित साजि आरती"* आरती के शब्दों में है। राग के अंत में भक्त धन्ना जी द्वारा रचित शब्द है। प्रभु के द्वार से भक्त धन्ना जी की मांग कितनी निश्चल और सीमित है इसका उदाहरण अन्यत्र नहीं! आहार के लिए भोजन, पहनने के वस्त्र, दूध के लिए बछड़े सहित गाय, आने-जाने के लिए सुंदर घोड़ी से उसकी आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं। विशेष विचार करने योग्य बात यह है कि भक्त धन्ना जी एक सुघड़ गृहणी का महत्व दर्शाना नहीं भूलते।

इस प्रकार राग धनासरी की सम्पूर्ण बाणी में नाम सम्बंधी चिन्तन की मनोहर छटा है। 

गुरबाणी चिंतनधारा-२३

जापु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

काल हीन कला संजुगति अकाल पुरख अदेस ॥
धरम धाम सु भरम रहित अभूत अलख अभेस ॥
अंग राग न रंग जाकहि जाति पाति न नाम ॥
गरब गंजन दुसट भंजन मुकति दाइक काम ॥८४॥

गुरु कलगीधर पातशाह के चिन्तनानुसार वह परमात्मा मौत से रहित है, वह समस्त शक्तियों का मालिक अर्थात् सर्वशक्तिमान है। वह काल से परे है अर्थात् समय का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। समय के चक्रव्यूह से कोई नहीं बच सकता, लेकिन एक ईश्वर ही है जो इस काल, सीमा सब के प्रभाव से रहित है, क्योंकि वक्त भी उसी ईश्वर का पाबंद है, उसी का गुलाम है। कला संजुगति अर्थात समर्थता सहित, अत: वह परमेश्वर सर्व शक्तियों का मालिक है। वह सब में व्यापक है अर्थात् वही सब में समाया हुआ है, उसका कोई एक देश नहीं है। गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण है:

जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥ (पन्ना १०७५)

आगे गुरदेव उस परमात्मा को धर्म का स्रोत मानते हुए कथन करते हैं कि वह वास्तव में धर्म का धाम अर्थात् ठिकाना है। वह भ्रमों, वहमों, भुलेखों से रहित है। उसका निर्माण संसारी जीवों की तरह पांच तत्वों से नहीं हुआ। वह अदृश्य है, अत: इन आंखों से दिखाई नहीं देता और न ही उसकी कोई विशेष पोशाक है। वह शारीरिक मोह से रहित है, जैसा कि प्रत्येक देहधारी को अपने शरीर से मोह है, जिस कारण वे इनकी बनावट व बचाव का हर सम्भव प्रयास करते हैं, लेकिन ईश्वर इन सबसे निर्लिप्त है। न उसका कोई विशेष रंग है, न ही कोई जाति और वंश है और न ही प्रभु किसी एक विशेष नाम से जाना जाता है। कहने का अभिप्राय, ईश्वर के नाम भी अनंत हैं। वह बड़े-बड़े अहंकारियों का अंहकार तोड़ने वाला है, दुष्टों का नाश करने वाला तथा मुक्ति प्रदाता है। वह सभी इच्छाओं और मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

आप रूप अमीक अन उसतति एक पुरख अवधूत ॥
गरब गंजन सरब भंजन आदि रूप असूत ॥
अंग हीन अभंग अनातम एक पुरख अपार ॥
सरब लाइक सरब घाइक सरब को प्रतिपार ॥८५॥

गुरदेव उस अकाल पुरख के अनंत गुणों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए फरमान करते हैं कि वह ईश्वर स्वयं से प्रकट हुआ है। वह अत्यन्त गहरा है, 'अमीक' है, इसलिए उसकी गहराई को नहीं मापा जा सकता है अर्थात् उसकी पूर्णता का भेद नहीं पाया जा सकता। उसकी उपमा बेमिसाल है। पूर्ण रूप से उसकी सिफत-सलाह भी नहीं हो सकती। वही एक मात्र है जो सर्वव्यापक है। इसी भाव को श्री गुरु नानक देव जी की बाणी भी दृढ़ करवाती है:

मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥
तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा
तूं आपे सरब समाणा ॥ (पन्ना ७३१)

सरब गंता सरब हंता सरब ते अनभेख ॥
सरब सासत्र न जानही जिंह रूप रंगु अरु रेख ॥

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-४*

परम बेद पुराण जाकहि नेत भाखत नित्त ॥
कोटि सिंम्रित पुरान सासत्र न आवई वहु चित्त ॥८६॥

उस परमात्मा की पहुंच समस्त जीवों तक है। यही नहीं, सब स्थानों तक उसी की पहुंच है अर्थात् उसके लिए कोई भी स्थान दुर्गम नहीं है। वह सबको मारने की शक्ति वाला है तथा उसका पहरावा सबसे अलग है, सबसे निराला है। वह परमात्मा ऐसा है कि सभी शास्त्र न उसका रूप जानते हैं, न रंग और न ही उसकी रूप-रेखा अर्थात् सभी धर्म-पुस्तकें उसका गुण-गायन तो करती हैं लेकिन मुकम्मल तौर पर उसे जानने में असमर्थ हैं।

वह अकाल पुरख ऐसा है जिसके बारे में वेद तथा पुराण आदि धर्म-ग्रंथ उसे सदैव अनंत-बेअंत कथन करते हैं। वह सबसे ऊंचा है तथा उसके जैसा कोई नहीं। करोड़ों स्मृतियों, पुराणों एवं शास्त्रों को पढ़कर भी उस परमेश्वर को नहीं जाना जा सकता अर्थात् उसके वास्तविक स्वरूप की जानकारी समस्त धर्म-ग्रथों के ज्ञान से भी नहीं हो सकती। अत: ये धर्म-ग्रंथ भी उस परमात्मा को अनंत-बेअंत कथन करते हैं। इन धर्म-ग्रंथों से उस परमात्मा का नाम जपने की प्रेरणा मिलती है। गुरबाणी का प्रमाण है:

कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥
अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥ (पन्ना ६३२)

यही नहीं उस परमेश्वर के नाम-सुमिरन से अनेकों पापियों का उद्धार हुआ है। ईश्वर नाम में असीम बल है जिससे अनेकों पापों का एक पल में विनाश हो जाता है; जैसा कि बाणी का पावन फरमान है:

हरि को नामु सदा सुखदाई ॥
जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई ॥ (पन्ना १००८)

यह पावन नाम ही अनेकों पापों से मुक्ति दिलाने वाला है तथा इसी प्रभु-नाम ने ही तेरे सहायी होना है, यथा:

सगल भरम डारि देहि गोबिंद का नामु लेहि ॥
अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥ (पन्ना १३५२)

अत: लोक-परलोक में सहायी उस परम पिता परमात्मा का नाम जपते-जपते, उस परमात्मा की सिफत-सलाह करते हुए, उस ईश्वर के गुणों का आत्म-सात करते हुए जीव अन्तत: उसी में ही विलीन हो जाए, यही मनुष्य-जीवन का प्रमुख लक्ष्य है। इसकी प्राप्ति गुरु-कृपा से मुमकिन है।

आत्म-तत्त की पहचान और ईश्वर में एकरूप होने हेतु किस तरह का जीनव-निर्वाह करना है, इसका सुंदर उदाहरण भी हमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पावन बाणी से मिलता है, यथा:

अलप अहार सुलप सी निंद्रा; दया छिमा तन प्रीति ॥
सील संतोख सदा निरबाहिबो; ह्वैबो त्रिगुण अतीत ॥
काम क्रोध हंकार लोभ हठ, मोह न मन मो लयावै ॥
तब ही आतम-तत को दरसै, परम पुरुख कह पावै ॥ (सबद राग रामकली, पा: १०)

अर्थात् थोड़ा खाना, थोड़ा सोना, हृदय-घर में दया, क्षमा, प्रेम, शील, संतोख आदि गुणों को हृदय-घर में हमेशा बसा कर रखना। माया के त्रिगुणी प्रभाव से बचना, काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह आदि को मन में न बसने देना। तभी आत्म-तत्त को पहचानते हुए उस परम पुरख की प्राप्ति सम्भव हो सकेगी अर्थात् आत्म-ज्ञान से ही उस परम-तत्त में विलीन हुआ जा

सकता है। यही है उस अनंत परमात्मा को, असीम प्रभु को इस ससीम (एक सीमा में बद्ध) बुद्धि द्वारा, निर्मल हृदय द्वारा स्वयं में और प्रत्येक घट में, प्रकृति के कण-कण में बसे ईश्वर से साक्षात्कार करना।

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
गुन गन उदार ॥ महिमा अपार ॥
आसन अभंग ॥ उपमा अनंग ॥८७॥

मधुभार छंद में उच्चरित तेरी कृपा से रचित इस बंद में भी गुरदेव उसी परवरदिगार की स्तुति करते हुए फरमान करते हैं कि हे प्रभु! तू बेअंत गुणों का मालिक है, दरिया-दिल है। उसकी महिमा अपरंपार है। यह बताना मुमकिन नहीं है कि वह परमेश्वर कितना बड़ा है। उसका आसन नाश-रहित है अर्थात् सदैव कायम रहने वाला है, स्थिर है।

इस तथ्य पर विचार करें तो स्पष्ट है कि दुनिया में किसी और का आसन स्थिर नहीं है, सदैव कायम रहने वाला नहीं है, जैसा कि शेख फरीद जी का फरमान है:

सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥
जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ॥
(पन्ना ४८८)

'उपमा अनंग' अर्थात् उसके गुण अतुलनीय हैं। उसकी महिमा की तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि उस जैसी हस्ती कोई है ही नहीं।

वस्तुत: जीव धर्म-पुस्तकों से पढ़कर या एक-दूसरे से सुन कर उस ईश्वर को कह तो देते हैं, हे परमात्मा! तू बहुत बड़ा है, पर पूर्णतया कोई नहीं बता सकता कि वह वास्तव में कितना बड़ा है। उसका स्वरूप अवर्णनीय है। गुरबाणी का प्रमाण है:

सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥
केवडु वडा डीठा होइ ॥
कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥
वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥ (पन्ना ९)

हे मेरे मालिक! तू मानो एक अथाह सागर है। तू बड़े जिगरे वाला है। तू बेअंत गुणों का खजाना है। तेरा कितना बड़ा फैलाव है! तेरा विस्थार कितना है यह कोई नहीं जानता।

अनभउ प्रकास ॥ निस दिन अनास ॥
आजान बाहु ॥ साहान साहु ॥८८॥

उपरोक्त बंद में गुरु पातशाह उस परमात्मा को स्वयं से प्रकाशवान मानते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि उस परमात्मा को कोई ज्ञान देने वाला नहीं है अत: वह स्वयं से अनंत ज्ञान का सागर है। वह रात-दिन हर समय मौजूद है अर्थात उसका स्वरूप अविनाशी है। कभी न नष्ट होने वाले उस ईश्वर ने जगत-रचना के समस्त ढंग अपने वश में रखे हुए हैं। *'आजान बाहु'* अर्थात् सृष्टि-रचना के सब तरीके जिसके वश में हैं, वह परमात्मा बादशाहों का भी बादशाह है।

राजान राज ॥ भानान भान ॥
देवान देव ॥ उपमा महान ॥८९॥

गुरु पातशाह उस परमात्मा के गुणों का बखान करते हुए उसे राजाओं का राजा तथा सूर्यों का सूर्य कहते हैं, जिससे समस्त सूर्य प्रकाशवान हैं। वह देवताओं का भी देवता है, अत: समस्त देवता भी उसके आगे नतमस्तक हैं अर्थात् देवता भी उसी ईश्वर को पूजते हैं। वह सर्वोच्य हस्ती है। तीनों लोकों के जीवों पर ही नहीं अपितु प्रकृति के कण-कण पर उसी ईश्वर का प्रभुत्व है। दुनिया में जो कुछ भी दृष्यमान अथवा अदृष्यमान है वह सब कुछ ईश्वर का बनाया हुआ है और सब पर उसी का स्वामित्व है। 

गुरु-गाथा-२

सूई की करामात

*-डॉ. अमृत कौर**

एक सेठ था। उसके पास करोड़ों रुपये थे। इसलिए लोग उसे करोड़िया मल कहते थे। अपने धन का प्रदर्शन करने के लिए उसने ब्रह्मभोज का आयोजन किया। धन को पानी की तरह बहाया। अनेकों प्रकार के व्यंजन बनाए। हज़ारों लोगों को आमन्त्रित किया। कोई भी इलाके का पीर, फकीर, संत ऐसा न था जिसे उसने आमन्त्रित न किया हो। श्री गुरु नानक देव जी को भी उसने आमन्त्रित किया।

गुरु जी आए और उसके वैभव के प्रदर्शन को देखा। देखा धन को पानी की तरह बहाते। एक तरफ दाने-दाने को मुहताज गरीब लोग, अभाव में जीते गरीब लोग और दूसरी ओर धन की इस कदर बेदर्दी से फजूलखर्ची। उनसे रहा न गया। आपने शिक्षण के अपने ही मौलिक अंदाज को अपनाया।

सेठ को एक सूई दी और कहा, "इसे ले जाओ, संभाल कर रखना और दूसरे लोक में मुझे लौटा देना।" सेठ चक्कर में पड़ गया कि वहां यह सूई कैसे साथ ले जाऊंगा? पर गुरु जी के आदेश को कैसे टालता? अपनी पत्नी के पास गया और कहने लगा, "गुरु जी ने सूई दी है इसे संभाल कर रखना। यह गुरु जी को दूसरे लोक में वापिस देनी है।" उसकी पत्नी कहने लगी, "आप कैसी बातें कर रहे हो? वहां तो कुछ भी नहीं जाता। सूई को कैसे लेकर जाएंगे? जाओ, जाकर गुरु जी को विनती करो कि गुरु जी, और जो चाहो सेवा बताओ, यह काम हमसे न हो पाएगा।"

सेठ ने गुरु जी को सूई लौटाते हुए कहा, "गुरु जी! यह सूई कृप्या वापिस ले लीजिए। यह दूसरे लोक में साथ नहीं जाएगी।" गुरु जी ने उत्तर दिया, "तुम्हारे पास दौलत के अंबार हैं दूसरे लोक में साथ तो ये भी नहीं जाएंगे। फिर उनका भंडारण क्यों कर रहे हो? मुझे क्या करना चाहिए?" सेठ ने उत्सुकता से पूछा। गुरु जी ने कहा, "इन्हें जरूरतमंदों में बांट दो। भाई! अधिक धन पापों का मूल होता है और यह मरते समय साथ नहीं जाता।"

पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
(पन्ना ४१७)

करोड़ियामल सेठ ने गुरु जी की शिक्षा का अनुसरण कर अपना धन गरीबों की सेवा में परोपकार के कार्यों में लगाना शुरू कर दिया। उसे जीवन का सही मार्ग मिल गया था।

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, ज़ीरकपुर-१४०५०३*



"गुरमति ज्ञान" में पावन गुरबाणी की पंक्तियां होती हैं, इसलिए "गुरमति ज्ञान" की पुरानी प्रतियों को रद्दी में न बेचा जाए। आप इसकी जिल्दें बनवा कर संभाल लें या नजदीक के किसी गुरुद्वारा साहिब में या किसी पुस्तकालय में पहुंचा दें या फिर किसी उस सज्जन को पढ़ने के लिए दे दें जिसके पास यह पत्रिका न पहुंचती हो।

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-१२

समर्पित भक्त एवं विद्वान : कवि टहिकन दास

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवियों में एक विशेष नाम कवि टहिकन दास का भी है। कवि टहिकन दास का जन्म पंजाब के जिला गुजरात के एक गांव जलालपुर में लगभग १६४० ई के आस-पास हुआ। आपके पिता का नाम रंगील दास चोपड़ा था जो गांव के एक धनी-मानी व्यक्ति थे। इसलिए कवि टहिकन दास का बचपन पूरी तरह से सुविधा-सम्पन्न रूप में गुजरा। आपको अध्ययन करने एवं शिक्षा ग्रहण करने के लिए सुंदर माहौल मिला। इसी कारण कवि टहिकन दास बड़े होकर सुशिक्षित, विद्वान एवं साहित्यिक मनोवृत्ति वाले व्यक्ति बने।

कवि टहिकन दास के बारे में यह संकेत भी मिलता है कि आप लम्बे समय तक सेना में सैनिक के रूप में भी कार्य करते रहे। वहां भी आपके साहित्यिक क्रिया-कलाप जारी रहे। आपका सबसे बड़ा साहित्यिक कार्य रहा 'महाभारत' के 'अश्वमेध पर्व' का जनभाषा में अनुवाद। यह कार्य आपने संभवत: १६६९ ई में सम्पन्न किया। बाद में नाभा के महाराजा हीरा सिंघ ने आपके ग्रंथ को 'जैमिनी अश्वमेध' के नाम से सन् १८९८ ई में प्रकाशित भी करवाया। यह प्रकाशित ग्रंथ आज भी उपलब्ध है और इसके ९८४ पृष्ठ एवं ७३ अध्याय हैं।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब 'महाभारत' का अनुवाद करने की योजना बनाई तो उन्होंने अनेक अन्य कवि-विद्वानों के साथ-साथ कवि टहिकन दास को भी अपने 'अश्वमेध पर्व' के साथ अमंत्रित किया। कवि टहिकन दास अपनी रचना के साथ गुरु-दरबार में हाजिर हुए और उनका कार्य गुरु साहिब की महान योजना का अंग बन गया।

अमृतसर की 'सिख रेफ्रेंस लाइब्रेरी' में एक हस्तलिखित ग्रंथ है जिसे दशमेश पिता के दरबारी लेखकों, बाल गोबिंद राय एवं फतह चंद ने सन् १६९६ ई में लिखा था। इस ग्रंथ में 'हनुमान नाटक', 'सामुद्रिक भाखा', 'सुर सागर' के साथ टहिकन कृत 'अश्वमेध पर्व' को भी लिपिबद्ध किया गया है।

कवि टहिकन दास स्पष्टत: संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान थे। आपने संस्कृत के महान ग्रंथ 'अमर कोश' का हिंदी भाषा में अनुवाद भी किया। इस रचना का शीर्षक 'रतनदास' है और इसमें १४२० छंद हैं। यह हस्तलिखित पांडुलिपि भी सुरक्षित एवं उपलब्ध है।

कवि टहिकन दास के विषय में यह स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि आप दशमेश पिता के अनंदपुर साहिब छोड़ने के समय तक गुरु-दरबार में उपस्थित रहे। गुरु साहिब के पास लम्बे समय तक रहने से कवि टहिकन दास की दशमेश पिता के प्रति समर्पित भक्ति का पता चलता है, जबकि आपके ग्रंथ आपकी उच्चकोटि की विद्वता के दर्शन भी कराते हैं।



***१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना (पंजाब)*



जून १९८४ के घल्लूघारे के दौरान शहीद हुए सिंघों को श्रद्धांजलि भेंट

अमृतसर : ६ जून। श्री हरिमंदर साहिब पर जून १९८४ में समय की सरकार द्वारा किए गए फौजी हमले के दौरान गुरधामों की अजमत तथा सिख धर्म की खातिर जूझते हुए शहीद हुए सिंघों की याद में श्री अकाल तख्त साहिब में श्री अखंठ पाठ साहिब के भोग के पश्चात सिख जगत की ओर से धर्मी शहीदों को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए गए। इस अवसर पर श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी जोगिंदर सिंघ जी ने धर्मी शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री अकाल तख्त साहिब विलक्षण होंद-हस्ती तथा स्वतंत्र सिख सोच का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि सिख कौम की आन और शान की प्रतीक श्री अकाल तख्त साहिब की इमारत को गिराने के लिए विभिन्न समय के हाकिमों, जाबरों तथा सरकारों ने हमले किए मगर कोई भी शक्ति गुरु-पंथ की इस सर्वोच्च संस्था को न तो मिटा सकी और न ही कभी मिटा सकेगी। उन्होंने कहा कि सिखों ने कभी भी हार को स्वीकार नहीं किया। सबसे पहले जंग-ए-आजादी में लड़ने वाले सिख ही थे। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ समय से कुछ लोग श्री अकाल तख्त साहिब की सर्वोच्चता को चेलेंज करने के लिए श्री अकाल तख्त साहिब द्वारा स्वीकृत सिख रहत मर्यादा पर किन्तु-परंतु कर रहे हैं। ऐसे लोगों का मुंह मात्र नारों या प्रेस-बयानों द्वारा ही नहीं बल्कि अमली रूप में बंद करना सिख कौम का फर्ज है। उन्होंने जोर देकर कहा कि पंथ-प्रवानित सिख रहत मर्यादा को किसी भी सूरत में नहीं बदला जा सकता।

बच्चों को धर्म में परिपक्व करने के लिए माता-पिता की अहम भूमिका होती है : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर : १० जून। सिख धर्म विश्वव्यापी धर्म है। सिख जगत की प्रतिनिधि धार्मिक संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का मिशन विश्व भर में उजागर करने के लिए विशाल प्रयास किए जा रहे हैं। उक्त विचार जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शि: गु: प्र: कमेटी ने उड़ीसा के संभलपुर शहर में सिख कौंसिल द्वारा आयोजित विद्यार्थियों के ३० दिवसीय गुरमति ट्रेनिंग कैंप के आखिरी दिन एकत्रित विद्यार्थियों तथा संगत को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक लोग खंडों-ब्रह्मंडों के बारे में जो अविष्कार आज कर रहे हैं इसके बारे में गुरु साहिबान द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ४०० वर्ष पूर्व ही दर्ज कर दिया गया था। उन्होंने कहा कि बच्चे हर कौम का भविष्य होते हैं तथा इनकी सही परवरिश ही कौम का भविष्य होती है। उन्होंने कहा कि बच्चों के पालन-पोषण के लिए मां द्वारा दी जाने वाली खुराक के साथ सिख धर्म, सिख इतिहास की साखियों, महान शहीदों की शहादत

की दास्तान सुनाने से बच्चे बचपन से ही अपने धर्म में परिपक्व हो जाते हैं। उन्होंने अलग-अलग मुकाबलों में स्थान हासिल करने वाले बच्चों को सम्मानित करते हुए प्रबंधकों को दो लाख रुपए तथा गुरुद्वारा श्री गुरु सिंघ सभा, मोदीपुरा को ५१ हजार रुपए सहायता देने का ऐलान किया।

पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला में एम. ए. सिख स्टडीज की कलासें शुरू किए जाने का फैसला प्रशंसनीय

अमृतसर : १३। जून शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला द्वारा एम. ए. सिख स्टडीज की कलासें आरंभ किए जाने के फैसले का जोरदार स्वागत करते हुए इन कलासों में दाखिला लेने वाले पांच गुरसिख विद्यार्थियों को वजीफा दिए जाने का ऐलान किया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला पंजाबी के विकास, इसके प्रसार तथा इस पर अविष्कार करने के लिए स्थापित की गई थी, परंतु इसमें सिख स्टडीज की कालसें न होने के कारण शिरोमणि कमेटी द्वारा इन्हें शुरू करने की मांग की जा रही थी। शिरोमणि कमेटी की इस मांग को पूरी करने पर उन्होंने यूनीवर्सिटी के उप-कुलपति डॉ. जसपाल सिंघ का धन्यवाद किया। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि इस वर्ष एम. ए. सिख स्टडीज की कलासों में दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों में से पांच गुरसिख विद्यार्थियों को शिरोमणि कमेटी वजीफा देगी। उन्होंने कहा कि गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर में पहले से चल रही इन कलासों में इस वर्ष दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों में से पांच गुरसिख बच्चों को भी वजीफा दिया जाएगा।

सिरसा वाले पाखंडी बाबा को गिरफ्तार किया जाये : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर : २२। जून मुंबई के मुलुंड क्षेत्र में हुए गोलीकांड के जिम्मेदार सिरसा वाले पाखंडी बाबा गुरमीत राम रहीम को गिरफ्तार किया जाना चाहिए। इस घटना के दोषी के रूप में कुछ आदमियों को गिरफ्तार कर पुलिस द्वारा इस पाखंडी बाबा को बचाने के लिए रास्ता बनाया जा रहा है। असल दोषी तो यह पाखंडी बाबा है जिसके इशारे पर हुई अंधाधुंध फायरिंग से एक नौजवान शहीद हो गया तथा कई घायल हो गए। इन विचारों का प्रकटावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने मुंबई में इस घटना में शहीद होने वाले स. बलकार सिंघ के गृह में उनके परिवार के साथ दुख में शरीक होते समय स. बलकार सिंघ की पत्नी बीबी दर्शन कौर को शि: गु: प्र: कमेटी की ओर से सहायता रूप में पांच लाख रुपए देते हुए किया।

उन्होंने इस घटना के लिए केन्द्र सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि सिरसा वाले कथित बाबा की गतिविधियों पर पाबंदी लगाने के लिए शिरोमणि कमेटी द्वारा की गई मांग की तरफ सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया, जिसके परिणामस्वरूप यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी है। उन्होंने कहा कि अभी भी देश में शांति, एकता,

अखंडता और सुरक्षा बनाए रखने के लिए इस तथाकथित साध की गतिविधियों पर तुरंत पाबंदी लगाई जानी चाहिए। जत्थेदार अवतार सिंघ ने इस गोलीकांड में जख्मी हुए सिखों का हालचाल पूछा तथा उनके जल्दी स्वस्थ होने की कामना की और उन्हें शिरोमणि कमेटी द्वारा एक-एक लाख रुपए सहायता रूप में भी दिए। इस गोली कांड सम्बंधी हालात का जायजा लेने पहुंचे पांच सदस्यीय दल में जत्थेदार अवतार सिंघ के अलावा शिरोमणि कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघुजीत सिंघ, महासचिव स. सुखदेव सिंघ भौर, कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. गुरबचन सिंघ करमूंवाला तथा सचिव स. रणवीर सिंघ शामिल थे।

१९८४ में श्री हरिमंदर साहिब में लगे गोलियों के निशान सम्भाले जाएंगे— प्रो. बडूंगर

अमृतसर : २६ जून। सिख इतिहास में अन्य घल्लूघारों की तरह जून १९८४ का घल्लूघारा बहुत ही दुखदाई एवं काले अक्षरों में लिखी जाने वाली जुल्म की दास्तां है। इस घल्लूघारे के दौरान निर्दोष सिखों तथा श्री हरिमंदर साहिब पर भारतीय सैनिकों द्वारा चलाई गोलियों के निशान आने वाली पीढ़ियों को इस घल्लूघारे की जुल्मी दास्तां के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए सम्भाले जाएंगे। इस सम्बंध में गोलियों के निशानों की निशानदेही के लिए गठित सब-कमेटी की एकत्रता में उपस्थित प्रो. कृपाल सिंघ बडूंगर, भूतपूर्व अक्ष्यक्ष शिरोमणि कमेटी ने उक्त विचार पेश करते हुए कहा कि जून १९८४ के दुखदाई घल्लूघारे के दौरान चली गोलियों के निशान श्री हरिमंदर साहिब के अंदर भी हैं। उन्होंने इन निशानों को ज्यों के त्यों सम्भालने के लिए सिफारिश करते हुए श्री हरिमंदर साहिब तथा आस-पास २०-२५ जगहों पर गोलियों के निशानों की निशानदेही/शिनाख्त की। उन्होंने कहा कि पूरे परिसर के सर्वे के दौरान दर्शनी डियोढ़ी पुल पर लगे पीतल के जंगले पर, दर्शनी डियोढ़ी पत्थर पर, दर्शनी डियोढ़ी के बाहर अखंड पाठ साहिब बुकिंग वाले कमरे के दायीं तथा बायीं ओर, जहां हुकमनामे का प्रिंट लगाया जाता है के पास स्तंभों पर, घंटा-घर वाली मुख्य सीढ़ियों पर, आजायब घर की सीढ़ियों पर, अजायब घर में स्तंभों पर, दुख भंजनी बेरी दीवार के ऊपर, लंगर की डियोढ़ी में, गुरुद्वारा शहीद बुंगा के स्तंभों पर, आटा मंडी वाली डियोढ़ी की सीढ़ियों पर, गुरुद्वारा लाची बेरी के आसपास, हरि की पौढ़ी के ऊपर वाली सीढ़ियों में, दीवान हाल गु: मंजी साहिब मुख्य दीवार पर, घंटा-घर मुख्य द्वार से श्री हरिमंदर साहिब के अंदर जाते समय दायीं तरफ तथा गुरुद्वारा झंडे बुंगे के सामने डियोढ़ी में लगे गोलियों के निशानों की शिनाख्त कर ली गई है। सब-कमेटी की इस एकत्रता में प्रो. बडूंगर के अलावा शिरोमणि कमेटी सदस्य स. जसविंदर सिंघ एडवोकेट, सचिव स. हरबेअंत सिंघ तथा मैनेजर श्री हरिमंदर साहिब स. हरभजन सिंघ आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। 

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०८-२००८